B.V.V.Sangha's
Basaveshwar Commerce College, Bagalkot.

CRITERION III
RESEARCH, INNOVATIONS AND EXTENSION

3.3-Research Publication and Awards

Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during year 2019-20

Key Indicator 3.3 – - Research Publication and Awards

Metric No:3.3.2: Number of books and chapters in edited volumes/books published and papers published in national/ international conference proceedings per teacher during year

Year	2019-20
Number	08

B.V.V.Sangha's

Basaveshwar Commerce College, Bagalkot

Papers/Chapters contributed by Faculty in Edited Books 2019-20

Sl. No	Name of the Teacher	Title of the Paper	Name of the Seminar/ Conference	Name of the Publisher	ISBN/ISSN	Year of Publication
1.	Dr. M.P.Goudaganvi	Akkamahadevi Aur Meerabai ki Viraha Vedana	"Srujan" –Trimasik Patrika		ISSN:2320-0391	2019
2.	Prof.R.M.Nalawade	Profitability of Regional Rural in India-A Case Study of Karnataka Vikas Grameen Bank, Dharwad.	BIMS International Research Journal of Management and Commerce	Basaveshwar Institute of Management Studies	ISSN: 2456:6381	2019
3.	Dr.B.P. Kumbar	Kanaka Daasara Sahitya Aahara Sanskritika Sangharshada Nelegalu	International Conference on Re-reading of Kanakada's Literary and Cultural Heritage	"KanakPrabhe" Department of Kannada Netaji SubashChandra Bose Degree College, Vijayapur.	ISBN: 978-93-89852-14-1	2020
4.	Dr. M. Nanjundaswami	Kanaka Daasara Sahitya Aahara Sanskritika Sangharshada Nelegalu	International Conference on Re-reading of Kanakada's Literary and Cultural Heritage	"KanakPrabhe" Department of Kannada Netaji SubashChandra Bose Degree College, Vijayapur.	ISBN: 978-93-89852-14-1	2020
5.	Dr. M.P.Goudaganvi	Kabeer Ki Manavatavadi Prasangeekata	International Conference on "Vartamana Paripreksha Mein Bhakti Sahitya ki Prasangikata"	B.L.D.E.A Basaveshwar Arts and Science College, Basavanabagewadi.	ISBN: 978-93-83813-51-3	2020
6.	Dr.M.Nanjundaswamy	Dalita-Bandaya Kavyagalalli Samajavadada Charche	Pratibimba Journal	Indian Institute of Multidisciplinary Research and Development, Mysuru, India.	ISSN: 2582-2284	2020

7.	Dr.B.P. Kumbar	Prabandha Sahityadalli Bhavanatmaka Chintanegalu: Vandu Avalokana	Pratibimba Journal	Indian Institute of Multidisciplinary Research and Development, Mysuru, India.	ISSN: 2582-2284	2020
8.	Dr.B.P. Kumbar	Kanakadasara Sahitya: Aahaara Sangharshada sanskritika nelegalu	Abhijata Kannada	Pratibhana	ISSN: 347-4017	2020

Name of the Teacher: Dr. M. P. Goudaganvi

Cover Page

First Page of Publication

उन्हें राजनीति से
क भागीदारी तय
में सक्रिय रूप से
असंभव है। उन्हें
। ईसाई मिशनरी
रहे हैं, जहाँ के
रह कटे हुए हैं।
कृति... समृद्ध
ासत को बचाए
यों ने ईसाई धर्म
परंपरागत जीवन
ज भी वे अपने
त-संगीत, नृत्य,
ात्मसात किए हुए
सम्मान करते हैं।
अतिथि देवता के
ा स्वागत हाथ
थियों का सत्कार

केल दिए-गए
है, आदिवासी
न्के सरकार द्वारा
को समाज की
न्हें सभ्य समाज
: के साथ-साथ

■■

जयपुर. (कर्नाटक)
9036505655

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

अक्कमहादेवी और मीराबाई की विरह वेदना

• डॉ. मल्लिकार्जुन पी. गौडगाँवी

कन्नड वचन साहित्य में अक्कमहादेवी का जो स्थान है वही हिन्दी भक्ति साहित्य में मीराबाई का है। नारी हृदय कहीं भी क्यों न हो, उस में समानता पाई जाती है, जिसे कर्नाटक के अक्कमहादेवी (12 वीं सदी) और राजस्थान के मीराबाई के मीराबाई (15 वीं सदी) में देख सकते हैं। अक्कमहादेवी और मीराबाई अलग समय में पैदा हुए, भिन्न प्रदेशों में पले, भिन्न भाषाओं में उन्होंने अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्ति प्रदान की, यहाँ तक कि इनके इष्टदेव भी अलग थे। अक्कमहादेवी के इष्टदेव चन्नमल्लिकार्जुन (शिव) थे तो मीरा आराध्य कृष्ण (विष्णु) थे। दोनों पहले भक्त थीं बाद में कवयित्रियाँ। अतः इन दोनों के भक्ति प्रेरित प्रेम पूरित विरह वेदना की वाणी अनेक संदर्भों में मिलती-जुलती दिखाई देती है। दोनों अपने प्रियतम (भगवान) के विरह में तडपते हैं।

कहा जाता है पागल, प्रेमी और कवि के मूल में एक ही तत्व काम करता रहता है। अक्कमहादेवी और मीरा की भक्ति माधुर्य भाव की थी। वे अपने इष्टदेव की प्रेयसियाँ थीं और अपने पति (भगवान) को पाने के लिए 'दिवानी' बन गयी थीं। इष्टदेव की प्राप्ति के लिये लोकलाज छोड, घरबार त्याग, अपने उस अलौकिक पति को ढूँढते, उसकी राह देखते, अपने मन की व्यथा को जो उन्होंने वाणी दी तो अपने प्रभु के लिए पागल ये प्रेयसियाँ अनजान में ही 'कवि' बन बैठीं। भक्तिपरवश हो कर इन्होंने जो गाया है वही कन्नड और हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि बन गया है।

अक्कमहादेवी और मीरा बचपन से ही अपने आराध्य से 'लगन' लगाये बैठी हैं। आयु के साथ यह लगन भी बढती जाती है लेकिन परिस्थिति से विवश होकर दोनों संसारिक बन्धनों को स्वीकार कर लेती हैं, लेकिन इस बन्धन में भी उनका संकीर्तन और सतसंग निरंतर चलता रहता था। अक्कमहादेवी संसारिक बन्धनों से ऊबकर कहती है-

"अपने ही स्नेहतंतुओं से
जाल बुना रेशम के कीडे ने,
और उलझ गयी जिस तरह
वह, धागों में मृत्यू से,
इसी तरह मन के इच्छा जाल में
छटपटा रही हूँ प्रभु कब से ।

इसी प्रकार मीरा स्पष्ट रूप से कहती है-

"नहीं भावै थाँरा देसलडो रँगरूडो ।
थारे देसो में राणा साध-नहीं छै,
लोग बसें सब कूडो।

इस तरह वह हरि की लगन में मगन होके, लोकलाज छोड, घरवालों से विरोध का सामना करती

ISSN : 2320-0391

हैं। दोनों गृहत्याग कर बाहर आ जाती हैं। अक्कमहादेवी दिगंबरा, केशांबरा बनके चन्नमल्लिकार्जुन का पता सब से पूछती चल पडती है तो मीरा महलों को छोड, एकतारी ले, हरि के गुण गाती चल पडती है। कदली वन में भावसमाधि में अक्कमहादेवी चन्नमल्लिकार्जुन में लीन हो जाती है तो मीरा रणछोडजी की मूर्ति में समा जाती है। इस तरह अक्कमहादेवी और मीरा के बचपन, यौवन और अन्त में काफी समानता दिखाई पडती हैं, उसी तरह अपने-अपने अराध्य देवों के प्रति उनके विरह निवेदन में भी काफी समानधर्मिता लक्षित होती है।

अक्कमहादेवी और मीराबाई को सिध्दान्त रूप से स्वीकृत है कि उनमें और उनके इष्टदेव में जीवात्मा और परमात्मा की मौलिक एकता के कारण कोई अन्तर नहीं। अक्कमहादेवी 'अनन्त युगों' से चन्नमल्लिकार्जुन को पति के रूप में पाने के लिये तपस्या करी है तो मीरा के विश्वास - संगती प्रभु बचपन से ही 'नेहा लगाय' 'प्रेम की बाती जलाय' 'बिरह समुँद' में छोड चले गये हैं। अक्कमहादेवी की वेदना कोई भी नहीं समझ पा रहा है, जानेगा भी कैसे? क्योकि-

''बाँझ क्या जानें प्रसव पीर ?
विमाता क्या जाने करना प्यार ?
कोई न जाने दुःखियों की पीर''

इसी प्रकार मीरा का भी कहना है कि-

''हेरी म्हाँ दरदे दिवाणी म्हारां दरद न जाण्यां कोय॥
घायल री गत घायल जाण्यां हिवडो अगण संजोय।
जौहर की गत जौहरी जाणै, क्या जाण्यां कोय।
दरद की मार्‍यां दर दर डोल्यां बैद मिल्या नहिं कोय।
मीरा री प्रभु पीर मिटांगां जब बैद सांवरो होय॥

इन दोनों पद्य भागों से यह स्पष्ट होता है कि परमात्मा से विरहित आत्मा किस तरह के वेदना में तडपती है।

अपने अपने इष्टदेवों से बिछुडकर इन विरहिणियों के लिये सब कुछ विपरीत ही हो रहा है। अक्कमहादेवी कहती है,

''व्यथित मन व्याकुल हुआ सखी,
चाँदनी जलती धूप बनी सखी,
शीतल पवन अग्नि बन गया सखी''

तो मीरा रातभर 'बैठी बैठी तारे गिनती' या 'आसुँओ की माला पोवती' रह जाती है। अक्कमहादेवी तो अनंत काल से चन्नमल्लिकार्जुन को पति के रूप में पाने के लिए तपस्या करती है, अपने प्रिय की दर्शनाभिलाषा में मीरा अखियाँ भी 'हरि दरसण की प्यासी' हैं, वह दीन होकर अनुनय करती है-

''पिया मोहिं दरसण दीजै हो
बैर बेर मैं टेरहूँ, अहे क्रिपा कीजै हो।''

इस तरह दोनो अपने-अपने प्रियतम ईश्वर को मिलने के लिए बेचैन हैं दोनों को दर्शन भाग्य प्राप्त न होने पर प्रभु दर्शन की अभिलाषा पूरी नहीं होती। दोनों चिंतित हैं। मीरा प्रभू को मिलने का विधा क्या है यह सोचते हुए भगवान को ढूंढते हुए इधर-उधर भटकती रहती है, तो चिंता के मारे अक्कमहादेवी गिरि-गिरि, वन-वन डोलती, भगवान को ढूंढती है। वह चन्नमल्लिकार्जुन से बिछुडकर उतनी ही दुःखी है जितने झुँड से छूटकर बँधा हुआ हाथी दुःखी होता है, पिंजडे में बन्द होता जैसे अपने बन्धुओं की याद करता है ठीक वैसे ही मीरा भी अपने 'गिरधर नागर' के बिना खान-पान, सुध-बुध खोकर सांसारिक बन्धनों में जकडी हुई सी महसूस करती है।

'मीरा के प्रभु हरि अविनासी हैं', वे परम ऐश्वर्यशाली एवं लीलामय है, 'भक्त वछल' दीनानाथ पतित पावन है मीरा के नयन में तो नन्दलाल, इस तरह बस गये हैं कि उनकी 'सुन्दर बदन' 'कमल दल लोचन' वाली 'मोहन मूरत' 'साँवरी सूरत अधर-सुधा-रस मुरली, उर बैजंतिल' वाली प्राणाधार मूर्ति नयनों हटाये नहीं

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

हठती। लेकिन यादों से भला कोई कितनी देर तक मन बहला सकता है? प्रभु से मिलन की इच्छा तीव्रतर हो उठती है। मीरा को अपने प्रियतम के बिना सब सूना लग रहा है 'भोजन-भव' कुछ भी भला नहीं लग रहा है।

अक्कमहादेवी का मन कर वसूलनेवाले शहर के जकाती की तरह तडपता है। वह दिन के मिलन के लिये प्रयत्न कर थक गई है, आनेवाले की राह देख-देख कर उसकी आँखों में झाँई पड गई है। रात-दिन अपने प्रिय ध्यान में मगन मीरा और महादेवी अब जो भी सामने आता है उसी से अपने प्रभु का पता पूछती हैं-

अक्कमहादेवी भ्रमरों से, आम्रतरू से, कोयल से, चाँदनी से, सब से पूछती है कि क्या तुमने देखा है मेरे स्वामी चन्नमल्लिकार्जुन कहाँ हैं ? मुझे उसका पता बताओ, जो कि उन्हीं के शब्दों में-

चहचहाकर पढनेवाले कीरों, क्या तुमने देखा?
सर उठा ऊँची तानें भरनेवाली कोकिलाओं
क्या तुमने देखा?
झूमकर गूँजारव करनेवाले भ्रमरों क्या तुमने देखा?
गिरि-गुफाओं में नाचनेवाले मयूरों क्या तुमने देखा?
बताओ चन्नमल्लिकार्जुन कहाँ है, बताओं रे।

ठीक इसी तरह कृष्ण के सौंदर्य का वर्णन करते हुए मीरा सभी से पूछती है-

कहीं देखे री घनश्याम?
मोर मुकुट पीताम्बर सो है, कुण्डल झलकै काना।
साँवरी सूरत पर तिलक बिराजै, तिस में लगे मोरे प्राना।
बरसाने से चली गुजरिया, नंदग्राम को जाना ।
आगे केशव धेनु चरावै, लगे प्रेम के बाना ।
सागर सूखि कँवल मुरझाना, हंसा कियौ पयाना।
भौंरा रहि गये प्रीति के धोखे, फेर लिलन को जाना।
बृंदावन की कुंज गलिन में नूपूर रून झुन लाना।
मीराबाई को दरसान दीजो, ब्रज तजि, अनत न जाना।

विरह व्यथा को सहने में चाहे धीरज से काम लो या व्याकुल बन जाओ, खटना तो पडेगा ही! विरह से उत्पन्न मन के संताप ने दोनों साधिकाओं के रोम-रोम में पीर भर दी है। अक्कमहादेवी बिना अंगारों की आग में जल रही है, बिना मार के ही घायल होकर दुःखी हुई है। मीरा को भी 'विरह भवंगम' ने डस लिया है, ''कलेजा-माँ लहर हलाहल जागी है''। लोकिन यह विचित्र पीर कोई जान नहीं सकता क्यों कि बाहरी घाव कुछ नहीं दिखता है, लेकिन रोम-रोम में पीर भर दी गई है। अब इतने पर भी प्रभु से मिलन नहीं हो रहा है। अक्कमहादेवी शंकित हो रही है कि-

''कल्पना में चाहकर,
काली पडी मैं, सूख गई।
मोहित हो प्रीत में पागल हो गई।
फिर भी उसे छोडूँ नहीं,
उसी का मुझे भरोसा।
मेरे देव चन्नमल्लिकार्जुन अगर,
अपनाएँगे नहीं मुझे
तो मैं क्या करूँ भाई?''

वह रात-दिन पति के विरह में व्याकुल होकर उसकी चाह में भूख, प्यास, भूल गई है। अपनी सुध-बुध भूल गई है। विरहाधिक्य से उत्पन्न जडता ने उसे घेर लिया है। मीरा में यह जडता अधिक ही दिखती है। वह कहती है-

''खाण-पाण म्हारे नेकण भावाँ नैणा खुला कणाट''

अब तो उसके लिये 'पठाणा खोल्या मुखाँणा बोल्या की स्थिति में ही 'साँझ भायाँ परभात' वाली स्थिति हो रही है। ऐसी अवस्था में तो मर जाना ही भला है। मीरा अपने प्रिय में इतनी तन्मय हो गई है कि मरने के बाद अपनी राख से भी वह अपने प्रिय को अलंकृत करना चाहती है। वह कहती है-

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

Scanned with CamScanner

''अगर चँदण की चिता बणाँऊ, अपने हाथ जलाजा।
जल-बल भई भस्म की ढेरी, अपने अंग लगा जा।
मीरा कहैं प्रभु गिरधर नागर, जोत में जोत मिला जा।

अक्कमहादेवी का पति तो पहले से ही अपने शरीर को राख (विभूति) से अलंकृत कर बैठा है। वह 'जोत में जोत' मिलाने के लिये कदली वन में समाकर अपने प्रभु चन्नमल्लिकार्जुन के हृदय कमल में छिप जाती है। और इस तरह अपनी आत्मा को परमात्मा में विलीन कर देती है।

अक्कमहादेवी और मीरा ने बचपन से ही भगवान से प्रीत जोडी थी और इन्हों ने जान लिया था कि प्रेम की चरम परिणति विरह में होती है, और विरह की चरम परिणति चिंरतन विरह साधना में अक्कमहादेवी और मीरा के विरहोद्गार अत्यंत सहज, स्वाभाविक और नारी नारी सुलभ है। इनमें कहीं भी उच्छृंखलता या असंयम के दर्शन नहीं होते । अक्कमहादेवी और मीरा अपने अजर, अमर अविनाशी प्रियतम के प्रेम में इतनी तल्लीन है कि घर-बार, कुल-मर्यादा या संसारिक बन्धनों की इन्होंने परवाह नहीं की, लेकिन इन अनचाहे बन्धनों से छुटकारा पाने की ललक अक्कमहादेवी के पदों में जितनी दिखाई देती है, उतनी मीरा के पदों में नहीं । मीरा में एक तरह की अनन्य तल्लीनता के दर्शन होते हैं। सत्संग, भगवद् गुणगान, कीर्तन, भक्ति आदि बातों में दोनों में समानता दिखाई देती है। मीरा का 'पग में घूँघरू बाँधकर, चुटकी दे-देकर, साधुओं के सामने, प्रभु का गुणगान कर नाचना, अक्कमहादेवी का वस्त्रहीन बनकर घर से बाहर निकलना उन्हें 'बावरी' 'मदमाति' और 'कुलनाशी' आदि विशेषण प्रदान करता है, जिनकी वे परवाह नहीं करतीं। लेकिन इन सारी बातों के होते हुए भी वह धरि, गंभीर, दृढ पगों से अपने इष्टदेव की ओर अग्रसर हो रही है। अक्कमहादेवी और मीरा दोनों का विरह - वर्णन अनुभूतिजन्य है जिस में उनके अंतराल की गहराई अभिव्यक्त हुई है। कृत्रिमता के लिए यहाँ स्थान नहीं है।

मीरा के 'गोपी भाव' में और अक्कमहादेवी के 'शरण सती लिंग पति' भाव में विरह की कातरता है, अनुभूति की गहराई है, दर्द से उत्पन्न दिवानापन है, जल से बिछुडी मछली की तडपन है और चातक की व्याकुलता है। दोनों विरह की रात को ही मिलन का प्रभात मनती हैं। लेकिन यह नारी सहज विरह इनके स्वयं के होने पर भी लौकिक न होके अलौकिक है, अपने प्रिय का स्पर्श पाकर पानी में नमक-सी पिघलने वाली अक्कमहादेवी और रामरस चखकर, नन्दनन्दन की माधुरी मूरत के सुमरण में बावरी मीरा का विरह वर्णन कन्नड और हिन्दी साहित्य का एक अनूठा अध्याय है।

■■

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE

प्राध्यापक, हिन्दी विभाग बसवेश्वर वाणिज्य महाविद्यालय, बागलकोट, कर्नाटक

Name of the Teacher: Prof. R.M.Nalwade

Front Page of Publication

ISSN: 2456:6381

BIMS International Research Journal of Management and Commerce

1.1 Regional Rural Banks In India

In 1972 the working group under the chairmanship of M. Narasimaham suggested that separate set of financial institution should be started which could cater to the need of rural people, having a local feel & familiarity like Co-operative banks with low cost of operations & professionalism of commercial banks. The Government also realized the necessity of such rural banks & as per the recommendations of Narasimham Committee Regional Rural Banks were began on 2nd October 1975 by promulgation of an ordinance in the parliament, for the purpose of development of agriculture, small & medium scale industries, rural artisans.

The objectives of this act were "To develop the rural economy in providing for the purpose of development of agriculture, trade, commerce, industry and other productive activities in the rural areas, credit & other facilities particularly to small & marginal farmers, agricultural labourers, artisans and small entrepreneurs & for matter connected therewith and incidental thereto." Since from 42 years of its existence regional rural banks are playing a crucial role in Indian rural economy. Time by time several updates & reconstructions took place in the operations & focus of regional rural banks because of the reform measures initiated by Government of India to improve their viability & profitability.

1.2 Profitability Of Regional Rural Banks

Profit is the main motto for carrying out the operations of any business firm. It is the difference between total revenue & total expense for a particular period of time. It is the residue remaining after meeting all the expenses. Profitability is the ability of a given investment to earn return from its use. It is only through profitability that the performance & efficiency of a firm or industry is judged. The commercial viability of regional rural banks was of serious matter during the major reforms of 1991-92. Regional rural banks were having limited area of business operations, rare scope of diversification & expansion, poor collection of debt, lack of manpower & other expertise skills major regional banks were running under loss.

Therefore restructuring programmed was started in 1994-95 up to 1999-2000 by recapitalization, with the infusion of Rs.2,188.44 crores of capital to around 187 RRBs in order to enhance their performance. Other than recapitalization several measures were taken like, liberalization of branch licensing policy, installation of ATM branches, opening of extension counters etc. & at the same time it was tried to merge or close down the loss making regional rural banks. At the same time sponsor banks are made responsible for efficient performance of Regional rural banks and are needed to provide support by efficient management, training facilities to staff, computerization of RRBs etc.

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE
BAGALKOTE

ISSN: 2456:6381
BIMS International Research Journal of Management and Commerce

As per the recommendations of Vyas Committee (2004) Government of India initiated the process of consolidation of RRBs of same sponsor bank with the state in 2005. As a result of amalgamation the number of regional rural banks were reduced from 196 to 56 on 31st March 2017. Under this situation where regional rural banks have undergone lot of changes due to reform strategies an are trying to improve their efficiency. It is found necessary to analyze the profitability of regional rural banks in India.

1.3 Karnataka Vikas Grameen Bank

Karnataka Vikas Grameen Bank in one of the leading Regional Rural Bank in India established on 12th September 2005 by Government of India notification, by amalgamating four regional rural banks namely, Malaprabha Grameen Bank, Bijapur Gramen Bank, Varada Grameen Bank, Netravati Grameen Bank, on the basis of the recommendations of Narasimham Committee that, regional rural banks of same sponsor banks should be merged in order to close down the loss making regional rural Bank.

Since 2005 many regional rural banks are undergoing the process of amalgamation After the process of amalgamation in the year 2005 the new bank called Karnataka Vikas Grameen Bank formed to cater the needs of Northern districts of Karnataka and sponsored by Syndicate Bank, Head office at Dharwad. Karnataka Vikas Grameen Bank is operating in almost 1/3rd area of Karnataka , catering to the financial & banking needs of more than 65 lakhs customers in 2000 villages through 621 branches.

The organizational set up of KVGB consists of three tier system; the HO is situated at Dharwad & nine Regional offices at Bagalkot, Belagavi, Vijaypur, Chikodi, Dharwad, Gadag, Haveri, Kumta, Mangalore. KVGB is basically a scheduled bank with share capital of Rs.2,39,732(amount in thousands) contributed by Central Government, State Government & Sponser Bank in the ratio of 50:15:35 respectively. Karnataka Vikas Grameen Bank has opted for Core banking system in the year 2011.

2. REVIEW OF LITERATURE

Various articles & reports were /reviewed & analyzed regarding performance analysis of regional rural banks. Some of such studies were-

Anil Kumar Soni & Abhay Kapre (2012) pointed out that the RRBs commercial viability still has been questioned due to its limited business flexibility, smaller size of loan & high risk in loan & advances. Rural banks need to remove lack of transparency in their operation which leads to unequal relationship between banker and customer. Banking staff should interact more with their customers to overcome this problem.

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOT

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Dr. Karam Pal & Jasvir S. Sura 2006, "Efficiency of Regional Rural Banks (RRBs) in India: A Conventional Analysis". The author states that since the RRB is supposed to be a bank for poor people, its presence in all the states of the country especially in under developed states can make things better. He suggests that the Government should spread the branches of RRBs at the grass root level to provide such banking service to the needy rural people.

S.B. Hosamani, G.K. Hiremath & H. Basavaraj, "An Economic Analysis of the Performance of Malaprabha Grameen Bank- Application of Growth rate and Principal Component Technique" the study attempts to identify the factors that would possibly exert their influence on the performance of the bank. Time series data on all indicators were abstracted from the annual reports of the bank from 1976 to 1996.

M. V. Alagawadi & Pushpa M. Savadatti, "Performance evaluation of Malaprabha grameen bank in Karnataka during pre and post - WTO period –Principal component analysis", the author selected Malaprabha Grameen Bank with the objective of evaluating the banks performance by identifying the important physical and financial indicators. The analysis was done for two periods; pre and post WTO with the help of twenty nine variables by applying the methods of Dr. **N.M. Makandar Elixer Fin.Mgmt,** "Analysis of Productivity efficiency of RRBs: A Comparative study of Pre and Post Amalgamation of KVGB & PGB", the researcher had investigated the effects of amalgamation on the financial performance of RRBs in India and compared the pre-merger & post merger financial performance of KVGB & PGB which were amalgamated during 2005. The results indicated that the productivity ratios have marginally improved after the amalgamation.

Syed Ibrahim (2010) concluded that the performance of rural banks in India has significantly improved after amalgamation process which has been initiated by the Government of India. "Role of Indian Regional Rural Banks (RRBs) in the Priority Sector lending-An Analysis", the author had made modest attempt & appraised the rural credit structure & the role played by RRBs in the development of rural economy. The author analyzed the role played by RRBs in the priority and non priority sector lending. The author concluded that RRBs in India has significantly improved the rural economy.

2.1 Objectives:-

1. To highlight the key performance indicators of Karnataka Vikas Grameen Bank.
2. To know about the profitability of Karnataka Vikas Grameen Bank.
3. To analyze the performance of Karnataka Vikas Grameen Bank with the help of financial ratios.
4. To Know the extent of priority sector & non-priority sector loans & advances

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

CS Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

ISSN: 2456:6381
BIMS International Research Journal of Management and Commerce

3. METHODOLOGY

The present study is diagnostic & exploratory in nature which makes use of secondary data obtained mainly from the annual reports of KVGB, various reports and articles published by RBI & NABARD. An attempt is made in this paper to analyze the profitability of Karnataka Vikas Grameen Bank by considering the period of 5 years.

Table 1: Region wise distribution of Branch network of Karnataka Vikas Grameen Bank as on 31st March 2017

Sl.No.	District	Rural	Semi-Urban	Urban	TOTAL
01	Bagalkote	52	19	03	74
02	Belagavi	103	50	12	165
03	Vijaypur	50	15	08	73
04	Dharwad	44	05	27	76
05	Gadag	43	13	04	60
06	Haveri	61	13	04	78
07	Uttar Kannada	32	14	00	46
08	Udupi	17	03	03	23
09	Dakshin Kannada	13	08	05	26
	TOTAL	**415**	**140**	**66**	**621**

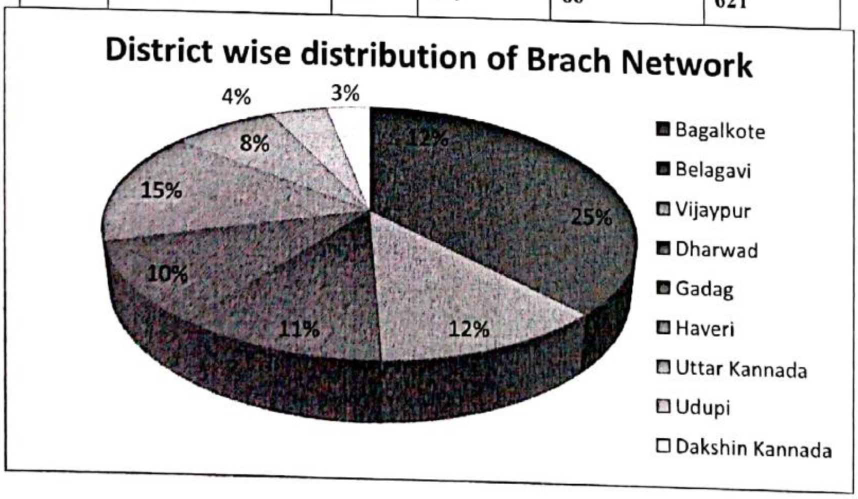

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

It is clear from the above Table 1 and pie chart that the regional distribution of branches of Karnataka Vikas Grameen Bank, 25% braches are covered in Belagavi district, 15% branches are located in Haveri district, Bagalkot and Vijaypur district are having 12% branches each, 11 % branches are in Dharwad district, 10% branches are located in Gadag, 8% in Uttar Kannada, 4% in Udupi & 3% in Dakshina Kannada.

Table 2: Branch Expansion Programmes

Year	Rural	Semi-Urban	Urban	Total
2012-13	397	72	55	524
2013-14	414	75	56	545
2014-15	435	81	60	576
2015-16	464	86	140	611
2016-17	415	140	66	621
Compounded Annual Growth Rate				**3.68**

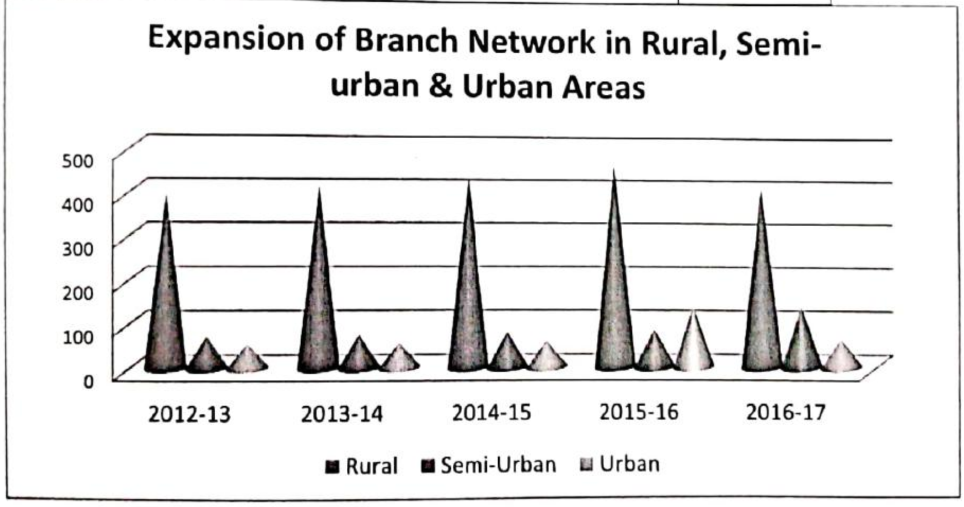

It is clear from the table 2 that more number of branches are situated in rural area and rural branches are in increasing trend, In the year 2012-13 397 rural branches were in existence where as they had been increased to 415 branches in the year 2016-17. It is also clear from the above table and chart that there is also increase in total number of branches from 524 in the year 2012-13 to 621 branches in the year 2016-17. The compounded Annual Growth Rate is 3.68.

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

CS Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Table 3 Key performance indicators of RRBs

Sl.No	Particulars	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17	% of Growth
01	No. of districts covered	09	09	09	09	09	-
02	No. of Branches	524	545	576	611	621	18.5%
03	Total Number of staff	2653	2612	3280	3183	2966	12%
04	Deposits	7,39,28,500	8,62,89,600	9,91,45,400	11,64,41,800	12,00,12,700	62%
05	Borrowings	1,76,03,155	2,21,52,523	2,64,83,300	2,17,68,500	1,88,81,600	7.3%
06	Gross Loans & Advances	5,62,21,400	6,44,50,050	7,22,95,200	8,97,10,800	9,57,79,900	70%
07	CD Ratio	76.05%	75.06%	72.91%	77.04%	79.81%	5%
08	Productivity- a) Per Branch	2,48,400	2,76,600	2,97,640	3,27,600	3,47,500	40%
	b) Per Staff	49,400	57,700	52,268	62,900	72,800	47%

Table 3 is depicting the key performance indicators of Karnataka Vikas Grameen Bank and the respective growth rates. It is noted that the growth rate of Deposits is 62%, Gross Loans and Advances were increase at the rate of 70%, Per Branch productivity and Per staff productivity were also increased by 40% and 47% respectively.

Table 4: Profitability ratios

Sl.No	Particulars	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
01	Interest income as a % to working funds	10.30%	9.23%	8.88%	7.87%	8.99%
02	Non-interest income as a % to working funds	.64%	.68%	.96%	.66%	.81%
03	Operating Profit as a % to working funds	2.74%	1.89%	1.68%	1.09%	1.66%
04	Return on Assets	2.33%	1.77%	1.17%	.79%	.99%

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

05	Business per employee (Rs. In crore)	4.91	5.77	5.21	6.45	7.30
06	Profit per employee (Rs. In lakh)	7.40	5.47	4.77	3.43	5.20

Table 4 is depicting the profitability ratios of Karnataka Vikas Grameen Bank, Interest income as % to working funds which shows an decreasing trend of 10.30% in the year 2012-13 to 8.99% in the year 2016-17, where as Non-interest income is showing an increasing trend of .64% in the year 2012-13 to .81% in the year 2016-17, operating profit as a % to working fund is also showing decreasing trend from 2.74% in 2012-13 to 1.66% in 2016-17, whereas return on assets is also decreased from 2.33% in 2012-13 to .99% in 2016-17, where as the business per employee had been increased from 4.91 crore in 2012-13 to 7.30 crore in 2016-17, where as the profit per employee had been decreased from 7.40 crore in 20012-13 to 5.20 crore.

Table 5: % of Non Performing Assets to Total Advances (Rupees in crore)

Sl.No	Particulars	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
01	Total Advances	5,622.14	6,445.01	7,229.52	8,971.08	9,577.99
02	Non Performing Assets	88.93	126.65	213.85	349.78	393.93
03	% of NPA to Total Advances	1.58%	1.97%	2.96%	3.94%	4.11%

CS Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

ISSN: 2456:6381
BIMS International Research Journal of Management and Commerce

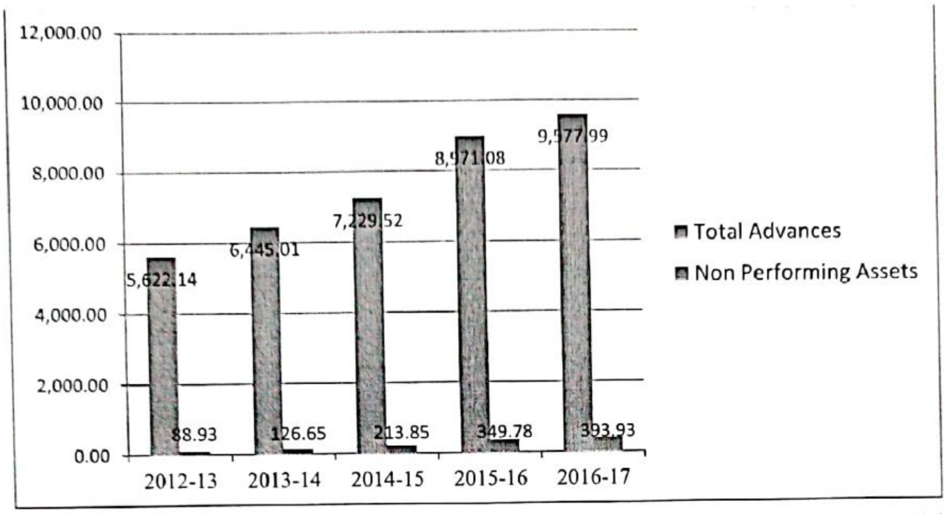

The above table 5 & chart is showing the portion of Non-performing assets to Total Advances, which depicts that the total advances were increasing year by year whereas the non-performing assets are also increased from 88.93 crore in 2012-13 to 393.93 crore in 2016-17.

Table 6: Financial Ratio

SLNo	Particulars	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
01	Financial Return	10.30	8.97	8.92	7.88	8.99
02	Financial Cost	6.29	5.80	6.02	5.61	5.95
03	**Financial Margin**	**4.10**	**3.17**	**2.00**	**2.27**	**3.04**
04	Operating Cost	2.35	2.02	2.25	1.84	2.19
05	Miscellaneous Income	.64	.56	.95	.66	.81
06	**Operating Profit**	**2.35**	**1.71**	**1.60**	**1.09**	**1.66**
07	Risk Cost	.37	.51	.36	.41	.67
08	**Net Margin**	**1.98**	**1.20**	**1.24**	**.68**	**.99**

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

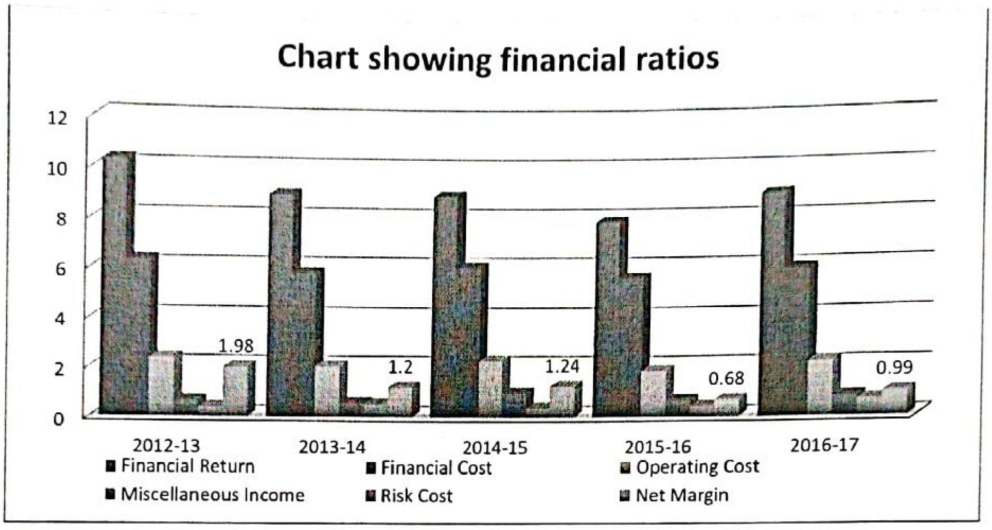

The above table 6 & chart depicts the financial ratios of Karnataka Vikas Grameen Bank revealing that the Financial Return had been decreased from 10.30 in 2012-13 to 8.99 in 2016-17, where as the financial margin had been decreased from 4.10 in 2012-13 to 3.04 in 2016-17. It is notable that Miscellaneous income is showing increasing trend from .64 in 2012-13 to .81 in 2016-17.Where as operating profit and net margin are showing a decreasing trend.

Table 7: Disbursement of credit to Agriculture & other priority sector

SLNo	Particulars	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16	2016-17
i)	Agriculture & Allied activities	2,073.95	2,208.85	2,785.50	2,952.25	3,224.89
ii)	Other Priority Sector	652.93	728.10	1,214.58	1557.56	1,176.54
	TOTAL	2,726.88	2,936.95	4,000.05	4509.81	4,401.43

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

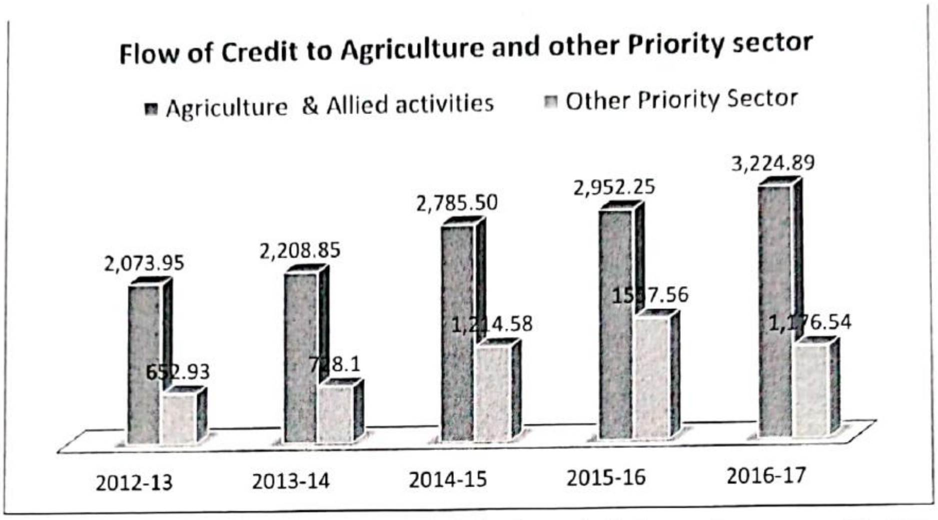

It is clear from Table 7 and the chart that more priority is given to Agriculture sector as compared to other priority sector. The amount of advance granted to agriculture had been increased from Rs.2,073.95 crore in 2012-13 to Rs.3,224.89 crore in 2016-17, where as the advances to other priority sector had also been increased from Rs.652.93 crore in 2012-13 to Rs.1,176.54 crore.

4. FINDINGS & RECOMMENDATIONS

1. The number of branches were increasing from year by year from 524 branches in the year 2012-13 to 624 branches in the year 2016-17. It also notable that the portion of rural branches is more as compared to urban area branches i.e 397 branches in 2012-13 to 415 branches in 2016-17. The overall growth rate is 3.68.
2. The amount of deposits had been increased from Rs. 7,39,28,500 crore in the year 2012-13 to Rs. 12,00,12,700 crore in the year 2017-18, an increase by 62%, where as the amount of loans & advances increased from Rs. 5,62,21,400 crore in 2012-13 to Rs. 9,57,79,900 crore in 2016-17, an increase by 70%.
3. The productivity per branch has been increased from Rs. 2,48,400 crore in 2012-13 to Rs. 3,47,500 crore in 2016-17 an increase by 40%, where as the productivity per staff has been increased from Rs.49,400 crore in 2012-13 to Rs. 72,800 crore in 2016-17 an increase by 47%.

CS Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

4. Non-performing assets had been increased from 88.93 crore in 2012-13 to 393.93 core in 2016-17. It is to be noted that Karnataka Vikas Grameen Bank is reporting less than 5% of NPA continuously.
5. The amount of advance granted to agriculture had been increased from 2,073.95 crore in 2012-13 to 3,224.89 crore in 2016-17, where as the advances to other priority sector had also been increased from 652.93 crore in 2012-13 to 1,176.54 crore in 2016-17.
6. The financial ratios depicted that the financial return had been showing a decreased trend from 10.30% in 2012-13 to 8.99% in 2016-17, where as the miscellaneous income has been increased from .64% in 2012-13 to .81% in 2016-17. Even the miscellaneous income has been increase the net margin had been decreasing continuously.
7. The non-interest income to working funds ratio has been increased from .64% in 2012-13 to .81% in 2016-17, which reveals that the bank is also concentrating on other non-banking activities. It is good for the banks to also provide other than non-banking activities in order to have huge customer base.
8. As percentage of interest income to working funds is showing decreasing trend, the bank should try to maintain familiar with its customers so that they are feel some kind of belongingness and the chance of increase in business can be achieved.

5. CONCLUSION

From the above analysis we can conclude that Karnataka Vikas Grameen Bank has taken a lot of efforts to extend its branches in rural areas, deposit mobilization, deployment of credit to agricultural activities are appreciable. From the above analysis we can also find that bank is trying to achieve its basic objective of providing credit to agriculture and rural artisans as the loans granted to priority sector is continuously high. Banks should open their branches in areas where customers are not able to avail banking facilities. In this digitization era bank has to concentrate on speedy, qualitative and secure banking services to retain existing customers and attract potential customers. Even after many reform measures the commercial viability of the banks has been questioned due to its limited business flexibility, smaller size of loan, low percentage of loan recovery & high risk in loan & advances. The bank should meet all the customer's needs with due care so that good customer relationship base can be built, which can help to increase the interest income to banks which will cover the finance cost.

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

CS Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

... Chandra Bose Degree

REFERENCES

1. Annual Reports of Karnataka Vikas Grameen Bank, Dharwad (2012-13 to 2016-17).
2. Gadgil, M. V., 1986, Agricultural Credit in India: A Review of Performance and Policies, Indian J. Agril. Econ. Vol. 41(3): pp.281-86.
3. Hosamani, S. B., 2002, Performance of Regional Rural Banks, Anmol Publishers New Delhi. Johnston, J., 2000, Econometric Method, Published by Mc. Graw Hill International Edition.
4. NABARD, Annual Report, Various Issues.
5. RBI, Annual Report and Report on Trends and Progress of Banking in India, Various Issues.
6. M.V.Alagawadi & Pushpa M. Savadatti, "Performance evaluation of Malaprabha Grameen Bank in Karnataka during pre and post WTO period- principal Component Analysis, Karnataka J. Agric. Sci.,24 (5) : (668-671) 2011
7. T.P. Shashikumar, K. Rangaswamy & S.P.Kiran, "Regional Rural Banks in India and Karnataka: A Time Series Analysis, International Journal of Marketing, Financial Services & Management Research, ISSN 2277- 3622 Vol.2, No. 2, February (2013).
8. Neha Saini, "Measuring Profitability & Productivity of Banking Industry: A case study of selected Commercial Banks in India, Assistant Professor, Institute of Information Technology and Management, Janak Puri, New Delhi.
9. Dr.M. Syed Ibrahim, "Performance Evaluation of Regional Rural Banks in India", International Business Research Vol. 3, No. 4; October 2010.
10. Prof.H.B. Hosamani, G.K. Hiremath, S. Basavaraj, " An Economic analysis of the performance of Malaprabha Grameen Bank-Application of Growth rate and Principal Component technique.
11. www.nabard.org.in
12. www.kvgb.com
13. www.rbi.org.in

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

Name of the Teacher: Dr. Basavaraj Kumbar

Shri Kalidas Education Society's

NETAJI SUBHASHCHANDRA BOSE DEGREE COLLEGE

VIJAYAPUR - 586102

INTERNATIONAL CONFERENCE

ಅಂತಾರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ವಿಚಾರ ಸಂಕಿರಣ

KANAKPRABHE

ಕನಕಪ್ರಭೆ

ಕನ್ನಡ ವಿಭಾಗ

ಕನಕದಾಸರ ಸಾಹಿತ್ಯ : ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಮರು ಓದು

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

Certificate

This is to certify that, Dr. B. R. KUMBAR

of Basaveshwar commerce college Bagalkot

~~Participated~~ / *Paper Presented in Kanakprabhe 2020*

31st January 2020

Prof. V.D. Vastrad	**Shri S.A. JIDDI** Ex.MLC	**Dr. Appu Jadhav**
Chairman,	President,	Principal,
Advisory Committee	Sri Kalidas Education Society	Netaji Subhash Chandra Bose Degree College

Scanned with CamScanner

Cover Page

INTERNATIONAL CONFERENCE

ಅಂತಾರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ವಿಚಾರ ಸಂಕಿರಣ

Re-reading of : Kanakada's Literary and Cultural Heritage

ಕನಕದಾಸ ಸಾಹಿತ್ಯ: ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಮರು ಓದು

31st January 2020

Organized by:

ಕನಕಪ್ರಭೆ

KANAKAPRABHE

Department of Kannada

NETAJI SUBHASH CHANDRA BOSE DEGREE COLLEGE, VIJAYAPUR-586102

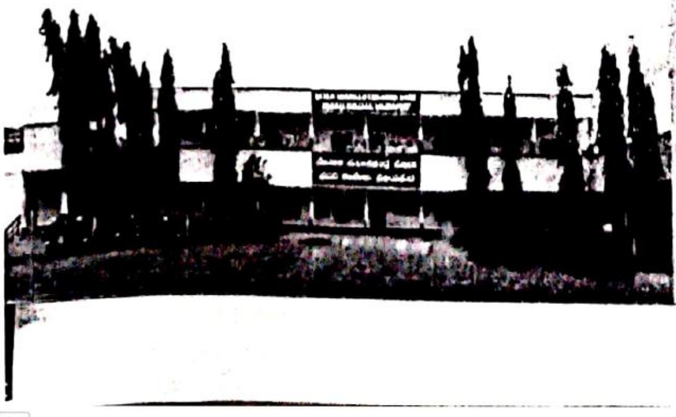

Proceedings

CS Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

First Impression : 2020

© Department of Kannada, Netaji Subhash Chandra Bose Degree College, Vijayapur

ISBN No: 978-93-89852-14-1

All rights reserved. No part of this Seminar Proceeding can be reproduced stored or transmitted in any form or by any mean without the prior permission of the publisher.

Disclaimer

Papers are accepted and printed in these Proceedings with the understanding that the same work has been neirther submitted nor published elsewhere.

Views, ideas and designs expressed in the papers are solely from respective authors. Organizers are not responsible for authentication of the papers published in this proceedings.

The proceedings is being published in the interest of authors and research community for private circulation only

Published and Printed by :

KANAKAPRABHE: A collection papers presented in the International seminar

Published by :

Chief Editor : Dr. Appu Jadhav
Netaji Subhash Chandra Bose Degree College, Vijayapur
Dr. Rajashri, S. Jiddi

Editor: Dr. Narayan B. Pawar
Dr. Appu Jadhav

Sub-Editor: Prof. V.D. Vastrad

First impression: 2020

© Principal, Netaji Subhash Chandra Bose Degree College, Vijayapur

Pages-X+ 225

Copies : 200

Price : 180/-

Subject : Re-reading of : Kanakada's Literary and Cultural Heritage
A collection papers presented in the International seminar
about Kanakadas literature

Printed by: Om Shakthi Graphics Bangalore, Cell: 8553939482

CS Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Content Page

೧೧. ಕನಕದಾಸರ ಸಾಹಿತ್ಯ : ಆಹಾರ ಸಂಘರ್ಷದ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ನೆಲೆಗಳು / 98
- ಡಾ. ಬಸವರಾಜ ಕುಂಬಾರ

೧೨. ಕನ್ನಡ ಕಥನ ಸಾಹಿತ್ಯ : ಮಹಿಳೆಯರ ಪ್ರತಿರೋಧ ನೆಲೆಗಳು / 107
- ಸವಿತಾ ಎಂ. ಬಿಜಕಲ್ಲ

೧೩. ದಾಸ ಸಾಹಿತ್ಯ ಹಾಗೂ ಭಕ್ತಿ ಪರಂಪರೆ / 116
- ಡಾ. ಗುಡ್ಡಪ್ಪ ಜಿ.

೧೪. ರತ್ನಾಕರವರ್ಣಿಯ ಕಾಲದ ನಾಟಕಶಾಲೆ : ಒಂದು ವಿಶ್ಲೇಷಣೆ / 122
- ಡಾ. ಮಲ್ಲಯ್ಯ ಸಂಡೂರು

❖❖

CS Scanned with CamScanner

First Page of Publication

೫. ದಾಸ ಸಾಹಿತ್ಯ ಶಬ್ದಶಿಲ್ಪ–ಡಾ. ಎಸ್.ಎಸ್. ಅಂಗಡಿ ಪ್ರಸಾರಾಂಗ ಕನ್ನಡ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯ, ಹಂಪಿ

೬. ಕಾಲಜ್ಞಾನ ಕನಕ - ಕಿ.ರಂ. ನಾಗರಾಜ, ರಂಗಸಿರಂತರ ಪ್ರಕಾಶನ ಬೆಂಗಳೂರು

೭. ಮಧ್ಯಕಾಲೀನ ಭಕ್ತಿ ಚಳವಳಿ – ಡಾ. ಎಂ. ನಾಗರಾಜ ಕ.ರಾ.ಮು.ವಿ ಮೈಸೂರು

೮. ಕನಕ ಸಾಹಿತ್ಯ ದರ್ಶನ ಸಂಪುಟ–೧ ಸಂ. ದೇ. ಜವರೇಗೌಡ ಕನ್ನಡ ಸಂಸ್ಕೃತಿ ನಿರ್ದೇಶನಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು

೯. ಕನಕ ಸಾಹಿತ್ಯ ದರ್ಶನ ಸಂಪುಟ–೨ ಸಂ. ಡಾ. ಸಾ.ಸಿ. ಮರಳಯ್ಯ ಸಂಸ್ಕೃತಿ ನಿರ್ದೇಶನಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು

೬೨ ಕನಕದಾಸರ ಸಾಹಿತ್ಯ ಆಹಾರ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಸಂಘರ್ಷದ ನೆಲೆಗಳು

ಡಾ. ಬಸವರಾಜ ಕುಂಬಾರ

ಕರ್ನಾಟಕದ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಸಾಹಿತ್ಯಿಕ ಇತಿಹಾಸದಲ್ಲಿ ಕನಕದಾಸರಿಗೆ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಸ್ಥಾನವಿದೆ. ಕವಿಯಾಗಿ, ಕಲಿಯಾಗಿ, ಹರಿದಾಸರಾಗಿ, ಸಂತರಾಗಿ ಬಾಳಿದ ಅನುಪಮ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವ ಕನಕದಾಸರದ್ದು. ಸಮಾಜದ ಕೆಳ ವರ್ಗದಿಂದ ಬಂದ ಕನಕದಾಸರು ಪ್ರತಿಭೆ ಪಾಂಡಿತ್ಯದಿಂದ ಸ್ವಪ್ರಯತ್ನ ಸಾಧನೆಯಿಂದ ಬೆಳೆದರು. ಅಪರೋಕ್ಷ ಜ್ಞಾನಿಗಳೆಂದು ಖ್ಯಾತರಾದ, ಕನಕದಾಸರು ದಾಸ ಸಾಹಿತ್ಯಕ್ಕೂ, ಕನ್ನಡ ಕಾವ್ಯ ಪ್ರಪಂಚಕ್ಕೂ ಮಹತ್ವವಾದ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡಿದ್ದಾರೆ. ಕನಕದಾಸರು ಇಂದು ಪುನರ್ ಚಿಂತನೆಗೆ ಅವರು ಬಹಳ ಮಟ್ಟಿಗೆ ವಸ್ತುವಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಭಾರತೀಯ ಸಾಮಾಜಿಕ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಕನಕದಾಸರು ಪುನರ್ ಚಿಂತನೆಗೆ ಕಾರಣರಾಗುತ್ತಾರೆ ಎಂದರೆ ಅವರಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವ ಸಂಘರ್ಷಗಳಿವೆ ಎಂದು ಅರ್ಥ. ಕನಕದಾಸರು ಚಾರಿತ್ರಿಕ, ಸಾಮಾಜಿಕ ಜೀವನ ಮತ್ತು ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಮಿಥ್ಯಕ್ಕೆ ಸೇರಿದ್ದವರು. ಕನಕದಾಸರು ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಧಾರ್ಮಿಕ ಅವಸ್ಥಾಂತರದ ಮೂಲಕ ಸಂಸ್ಕೃತಿಕರಣಕ್ಕೆ ಕಾರಣರಾಗಿದ್ದಾರೆ.

ಕನಕದಾಸರು ಕ್ರಿ.ಶ. ೧೫೦೮–೧೬೦೬ ರ ಸುಮಾರಿನಲ್ಲಿ ಬಾಳಿಬದುಕಿದವರು. ವಿಜಯನಗರ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯದ ಏಳುಬೀಳುಗಳನ್ನು ಕಣ್ಣಾರೆ ಕಂಡಿದ್ದವರು. ಕನಕದಾಸರ ಜೀವನವೇ ಒಂದು ಅಮರಕಥೆಯಾಗಿದೆ. ಅವರ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಜರುಗುವ ಎಲ್ಲಾ ಘಟನೆಗಳನ್ನು ಮೀರಿ ರಾಮಾಯಣ, ಮಹಾಭಾರತ, ಭಾಗವತ, ಕಾವ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ, ವ್ಯಾಕರಣ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದರಲ್ಲದೆ ಯುದ್ಧ ವಿದ್ಯೆಗಳನ್ನು ಕಲಿತವರು. ಶ್ರೀ ಹರಿಯ ವರದಂತೆ ಕನಕನಾಯಕ ವಿಜಯನಗರಕ್ಕೆ ಬಂದು ವ್ಯಾಸರಾಯರಿಂದ ದಾಸದೀಕ್ಷೆ ಪಡೆದು ತಿಮ್ಮಪ್ಪನಿಂದ ಕನಕದಾಸನಾಗಿ ಹರಿಭಕ್ತಿಯ ಬೆಳಕನ್ನು ಕೀರ್ತನೆಗಳ ಮೂಲಕ ಹರಡಿದರು. ಕುರುಬ ಜನಾಂಗದಿಂದ ಬಂದ ಕನಕದಾಸರಲ್ಲಿ ಅಪಾರವಾದ ಅನನ್ಯವಾದ ದೈವಶ್ರದ್ಧೆ, ವಿಫುಲವಾದ ಸಂಕಲ್ಪಶಕ್ತಿ ಇರುವುದನ್ನು ಗುರುಗಳಾದ ವ್ಯಾಸರಾಯರು ಗುರುತಿಸಿದರು. ಅವರ ಪ್ರತಿಭೆಗೆ ಚಾಲನೆ ಕೊಡಲು ವ್ಯಾಸರಾಯರು ನಿರ್ಧರಿಸಿದರು. ಕನಕದಾಸರು ಹರಿದಾಸರಾಗಿ ಹರಿಭಕ್ತಿ ಕೇಂದ್ರಗಳಾದ ಪುಣ್ಯಸ್ಥಳಗಳನ್ನು ಸಂದರ್ಶಿದರು. ಕನಕದಾಸರು ಕವಿಯಾಗಿ ವೈವಿಧ್ಯಮಯ ಕಾವ್ಯಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದಂತೆ ಅಸಂಖ್ಯಾತ ಕೀರ್ತನೆಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಕನಕದಾಸರ ಕೀರ್ತನೆಗಳು ಅವರ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವದ ವಿವಿಧ ಮುಖಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿಸುತ್ತವೆ. ಭಕ್ತಿ, ಜ್ಞಾನ, ವೈರಾಗ್ಯ, ಜಾತಿಪ್ರಶ್ನೆ, ವೈದಿಕ ಪರಂಪರೆಯೊಂದಿಗೆ ಸಂಘರ್ಷ, ಪ್ರತಿರೋಧದ ನೆಲೆಗಳು, ಸೌಂದರ್ಯಪ್ರಜ್ಞೆಯ ಜೊತೆಗೆ ಸಾಹಿತ್ಯ, ಆಹಾರ, ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಸಂಘರ್ಷದ ನೆಲೆಗಳ ಹಿನ್ನಲೆಯಲ್ಲಿ ಹಲವಾರು ಆಯಾಮದ ಚರ್ಚೆ ಚಾಚಿಕೊಂಡಿದೆ.

ಕನಕದಾಸರ ಕೀರ್ತನೆಗಳಲ್ಲಿ ಸಾಹಿತ್ಯಕ ಆಹಾರ ಸಾಮಾಜಿಕ ಮೌಲ್ಯಗಳಿವೆ. ಸಮಾನತೆಯ ಆದರ್ಶವಿದೆ. ಕನಕದಾಸರು ಮತಧರ್ಮಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚಿಗೆ ಮನುಷ್ಯನ ಅಂತಸ್ಸತ್ವವನ್ನು ಜಾಗೃತಗೊಳಿಸುವುದು ಮುಖ್ಯವಾದಂತೆ ತೋರುವುದು. ದೇಹ ನಶ್ವರವೆಂದು ಅವರು ಭಾವಿಸಿದ್ದಲ್ಲದೆ ವಿಷಯಾಸಕ್ತಿ ಮಾನವನ ಬಾಳಿಗೆ ಹಾನಿಕಾರಕವೆಂದು ಪ್ರಕಟಿಸಿದರು. ಮಾನವ ಜೀವನದ ರಾಗಭಾವಗಳಿವೆ. ವಿವಿದ ಅವಸ್ಥೆಗಳ ಬಗೆಗೆ ಕನಕದಾಸರು ತಮ್ಮ ಮುಕ್ತ ಮನಸ್ಸಿನ ಚಿಂತನೆಗಳನ್ನು ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದರು. ಕನಕದಾಸರ ಸಾಹಿತ್ಯ ಹಾಗೂ ಕೀರ್ತನೆಯಲ್ಲಿ ಲೋಕಜೀವನದ ಆದರ್ಶ ಮೌಲ್ಯ ಚರ್ಚಿತವಾಗಿದೆ. ಕನಕದಾಸರು ಸರಳ ಸುಂದರವಾದ ಉಪಮೆ, ರೂಪಕ, ಶ್ಲೇಷ ಮೊದಲಾದ ಅಲಂಕಾರ ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಂಡಿವೆ. ಕೃತಿ, ಕೀರ್ತನೆಗಳಲ್ಲಿ ಕೊಡುವ ದೃಷ್ಟಾಂತಗಳು ಮನಮುಟ್ಟುವಂತಿವೆ. ಕವಿಯಾಗಿ ವೈವಿಧ್ಯಮಯ ಕೀರ್ತನೆ, ಮಂಡಿಗೆ.

COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

CS Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

ಸುಳಾದಿಗಳನ್ನು, ವಿವಿಧ ಷಟ್ಪದಿಯಲ್ಲಿ ಕೃತಿ ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ವಸ್ತು ವೈವಿಧ್ಯವಿದೆ ಸಮಾಜದ ಡಂಬಾಚಾರವನ್ನು ಕರ್ಮಠತನವನ್ನು ಅವರು ವಿರೋಧಿಸಿದರು. ಆ ವಿರೋಧ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಮುಖಾಂತರ ಆಹಾರ ವಿಷಯದಲ್ಲೂ ಸಂಘರ್ಷ ಮೂಡಿಬಂದಿದೆ. ಕನಕದಾಸರ ಬಂಡಾಯ ಧೋರಣೆಯನ್ನು ಹೊರಗಿನ, ಒಂಟಿಯಾದ, ಭಾರತೀಯ ಪರಂಪರೆಗೆ ಜೋಡಿಸಿಕೊಳ್ಳದ ಒಂದು ಧ್ವನಿ ಎಂತಲೋ, ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಎಂತಲೋ ಪರಿಭಾವಿಸುತ್ತವೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಕಾರಣ ನಮ್ಮ ಬಂಡಾಯ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಯ ವರ್ಗ ಹೋರಾಟದ ಜೊತೆಗೆ ಸೀಮಿತಗೊಂಡಿರುವುದು.

ಕನಕದಾಸರು ಬಂಡಾಯವನ್ನು ಒಂದು ಪದ್ಧತಿಯು ಅಲ್ಲ, ಮೌಲ್ಯವೂ ಅಲ್ಲ, ಅದೊಂದು ಪ್ರವೃತ್ತಿಯಂದುಕೊಂಡವರು. ಗತಿಶೀಲತೆಯನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು ಮತ್ತು ಚಲನಶೀಲ ಸಮಾಜವೊಂದರ ನಿರೀಕ್ಷಣೆಯ ಮಧ್ಯೆ ತಾತ್ಕಾಲಿಕವಾಗೋ ಬಹುಕಾಲದವರೆಗೂ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಂದು ನಡತೆ. ವಿಶಿಷ್ಟಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ವಚನ ಚಳುವಳಿ, ಸರಳಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ದಾಸಪಂತ, ಬಂಡಾಯ ಪ್ರವೃತ್ತಿಯು ವಚನ ಚಳುವಳಿಯ ದೈವತ್ವದ ಪ್ರೌಢಿಮೆ ಮತ್ತು ಸಮಗ್ರೀಕರಣ ಮತ್ತು ಪಂತ ಸ್ವಭಾವಕ್ಕೆ ಸೀಮಿತವಾಗಿದೆ. ಎರಡೂ ನಿರೀಸ್ವರವಾದಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಭಟನೆಗಳಾದರೂ ವಚನ ಚಳುವಳಿಯ ಸಾಮಾಜಿಕ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಸಮಾನತೆಯ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ಹುಟ್ಟಿಕೊಂಡಿವೆ.

ದಾಸಪಂತ ಸರಳ ಸಂಸ್ಕೃತಿಕರಣ ಪ್ರಕ್ರೀಯೆಗಳಲ್ಲಿ ಕನಕದಾಸರ ಆಹಾರ ಸಂಸ್ಕೃತಿಕ ಸಂಘರ್ಷದ ನೆಲೆಗಳ ಪ್ರತಿಭಟನೆ ಬಂಡಾಯವನ್ನು ಈ ಪರಿವೇಶದ ಒಳಗೆ ನೋಡಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ. ತನ್ನೊಳಗೆ ಮತ್ತು ಇತರರ ಮೇಲುಜಾತಿಯ ಶೀಷ್ಯರೊಳಗೆ ಕನಕದಾಸರು ಹೇಗೆ ಉನ್ನತವಾದರು ಎಂಬುದು ಆಹಾರ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಸಂಘರ್ಷದಲ್ಲೂ ಕಾಣುವುದು. ಕನಕದಾಸರ ಬಂಡಾಯ ಪ್ರವೃತ್ತಿಗೆ ಮಾದರಿಯಾಗಿ ರಾಮಧಾನ್ಯ ಚರಿತೆಯನ್ನು ಹಲವು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಉಲ್ಲೇಖಿಸಿದರು. ಕೀರ್ತನೆಗಳಲ್ಲಿ ಕೂಡ ಕೆಲವರು ಅವರನ್ನು ಬಂಡಾಯಗಾರರನ್ನಾಗಿ ಪ್ರತಿನಿಧಿಸಿವೆ.

ರಾಮಧಾನ್ಯ ಚರಿತೆಯ ಕುರಿತು ದೇಜಗೌ, ಚಿದಾನಂದ ಮೂರ್ತಿ, ಡಾ. ಎಚ್.ಜೆ.ಲಕ್ಕಪ್ಪಗೌಡರ, ಡಾ. ಹಾ.ಮಾ. ನಾಯಕರವರು ರಾಮಧಾನ್ಯದ ಧ್ವನಿ ಗುರುತಿಸುವಾಗ ಹಲವಾರು ಆಯಾಮದ ಚರ್ಚೆಗಳು ಕಾಣುವವು. ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ರಾಮನನ್ನು ಸ್ತುತಿಸುತ್ತಾ 'ಭೂಮಿಗಚ್ಚರಿಯಾಗಿ ಪೇಳುವೆನೀ ಮಹಾಕತೆಯ' ಎಂದು ಕತೆಯನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಶ್ರೀ ರಾಮಚಂದ್ರನ ಚರಿತ್ರೆಯಲ್ಲಿಯೇ ನರದೆಗಲ ಮತ್ತು ವ್ರಿಹಿಯರ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನು ತಂದೆಯ ಮಾತಿನಂತೆ ಸೀತಾ ಲಕ್ಷ್ಮಣರ ಸಮೇತ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋದಾಗ ರಾಮನು ಸುಗ್ರೀವಾಂಜನೇಯರೊಡನೆ ಹೋಗಿ ವಾಲಿಯನ್ನು ಕೊಂದು ಲಂಕೆಗೆ ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕಿ ರಾವಣ, ಕುಂಭಕರ್ಣಾದಿಗಳನ್ನು ಕೊಂದು ವಿಭೀಷಣನಿಗೆ ಪಟ್ಟಕಟ್ಟಿ ತನ್ನ ಬಳಗದವರೊಂದಿಗೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಬರುವನು. ಅಲ್ಲಿ ನೆರದ ಮಹಾಮುನಿಗಳೆಲ್ಲರೂ ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ಹರಸಿ ರಾವಣನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಮುನಿಗಳನ್ನು ಪಾಲಿಸಿದೆ ಎಂದು ಹೊಗಳಿದರು. ಇದಕ್ಕೆ ಶ್ರೀರಾಮನು ನಮಗೆ ನಿಮ್ಮಡಿಯ ಕರುಣಾರಸವೇ ಸಲಹುವುದು ಎಂದು ಹೇಳಿ ಮುನಿಗಳನ್ನು ಉಪಚರಿಸಿ ಕುಳ್ಳಿರಿಸಿದನು. ಎಲ್ಲರೂ ಸಂತೋಷದಿಂದ ಇರುತಿರಲು ಮುನಿಗಳು ಸುಭಕ್ಷ್ಯಗಳನ್ನೆಲ್ಲವನ್ನುತಂದು ಇರಿಸಿದರು. ರಾಮನು ಸನುನಗುತ್ತಾ ತನ್ನ ನಿಜಬಲಕರನ್ನು ಕರೆಸಿ ರುಚಿ ನೋಡೆಂದ. ರುಚಿ ನೋಡಿದ ವಾನರರು ಬಹಳ ಚನ್ನಾಗಿದೆ ಎಂದು ಮುನಿವರರನ್ನು ಕೊಂಡಾಡಿದರು. ಆಂಜನೇಯನು ಧಾನ್ಯದ ತನುವ ಈ ಕ್ಷಣವ ತರಿಸಿ ಎಂದು ಶ್ರೀರಾಮನಲ್ಲಿ ಭಿನ್ನವಿಸಿಕೊಂಡನು. ಶ್ರೀರಾಮನು ಗೌತಮ ಮುನಿಗಳಿಗೆ ಹೇಳಿ ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು ತರಿಸಿದನು. ನರದೆಲೆಗ ನೆಲ್ಲು, ಹಾರಕ, ಬರಗು, ಜೋಳ, ಕಂಬು, ಸಾಮೆ, ಗೋಧಿ, ನವಣೆ ಎಂಬ ನವಧಾನ್ಯಗಳ ರಾಶಿ ಬಿತ್ತು. ಇದರಲ್ಲಿ ಯಾವುದು ಶ್ರೇಷ್ಠ ಎಂದು ಅರಸನು ಕೇಳಿದನು. ಅಲ್ಲಿದ್ದ ಮುನೀಶ್ವರರು ಒಂದೊಂದನ್ನು ಹೇಳಿದರು. ಶ್ರೀರಾಮನು 'ಹಲವುಗಳೇಕೆ ಒಂದನ್ನೆ ಹೇಳಿ' ಎಂದು ಗೌತಮ ಮುನಿಗಳನ್ನು ಕೇಳಿದಾಗ ಇವರು 'ದೇಶಕತಿಶಯ ನರದಲೆಗನೆ ವಾಸಿ' ಎಂದು ಹೇಳಿದರು. ಗೌತಮರ ಈ ಮಾತು ಕೇಳಿ ವ್ರಿಹಿ(ನೆಲ್ಲು) ಸಿಟ್ಟಾಗಿ ಮುನಿಗಳೆ ನೀವು ಪಕ್ಷಪಾತ ಮಾಡಬಾರದಾಗಿತ್ತು. ಗೋಧಿ, ನಾನು ಮೊದಲಾದ ಧಾನ್ಯಗಳಿರಲು ನರದೆಲಗನೆ ಶ್ರೇಷ್ಠ ಎಂಬುದು ಮತವಲ್ಲ ಎಂದು ಹೇಳಿ ಅದಕ್ಕೆ ಅವರು ಏನು ಹೇಳುವರೆಂಬುದನ್ನು ಕೇಳದೆ ನರದೆಲಗನ ಮೇಲೆರೇಗುತ್ತದೆ. ಏನೆಲವೋ ನರದೆಲಗ ನೀನು ಸಮಾನನೆಯನಗಿಲ್ಲಿ? ಮತಿಹೀನ ನೀನು? ಕುಲಹೀನ ನೀನು? ನೀನು ಪ್ರತಿಷ್ಠನೆ? ನಿನ್ನನ್ನು ಸುಡಬೇಕು! ಲೋಕದಲಿ ಅಧಿಕ ಜ್ಞಾನಿಗಳು ಜರೆದು ನಿರಾಕರಿಸಿ ಬಿಡಲೆಂದು ನೀ ಶೂದ್ರಾಣ್ಣವಾದೆಯಲ್ಲ. ಸಾಕು ಬಿಡು

Scanned with CamScanner

ನೀನಾವ ಮಾನ್ಯನು ಕಡೆಗೆ ತೊಲಗೆಂದ ತನ್ನ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿತು. ನಾನು ಒಳ್ಳೆಯ ವ್ರತಗಳಲ್ಲಿ, ಪರಮ ಮಂತ್ರಾಕ್ಷತೆಗಳಲ್ಲಿ, ಶುಭಶೋಭನದ ಆರತಿಗಳಲ್ಲಿ, ದೇವರ ನೈವೇದ್ಯದಲ್ಲಿ, ಭೂಸುರರ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ನಾನು ಯೋಗ್ಯನು. ನಿನ್ನಾವ ಯೋಗ್ಯನೋ ಬ್ರಷ್ಟಿ ತೊಲಗೆಂದ. ಆ ಸಂದರ್ಭದ ವರ್ಣನೆ ಹೀಗಿದೆ.

"ಪರಿಮಳದ ಚಂದನದ ತರುವಿಗೆ
ಸರಿಯೆ ವೊಣಗಿದ ಕಾಷ್ಠ ಗೋವಧ
ಕರೆದ ಹಾಲಿಗೆ ಕುರಿಯ ಹಾಲಂತರವೆ ಭಾವಿಸಲು।
ಪರಮ ಸಾಹಸಿ ವೀರಹನುಮಗೆ
ಮರದ ಮೇಲಣ ಕಪಿಯು ತಾನಂ
ತರವೆ ಘಡ ನೀನೇನಗೆ ಸರಿಯೇ ಬ್ರಷ್ಟ ತೊಲಗೆಂದ" ॥೪೨॥

ಅಲ್ಲದೆ ತಾನು ಸುರನದಿ, ಗರುಡ, ಹಂಸ, ಕೋಗಿಲೆ ಎಂದು ಹೊಗಳಿಕೊಂಡು ನೆರದಲೆಗನಿಗೆ ಹಳ್ಳ, ಹದ್ದು, ಬಕ, ವಾಯಸ ಎಂದು ಹೀಯಾಳಿಸಿ ನುಡಿಯುವನು. ಇದನ್ನೆಲ್ಲ ಕೇಳಿದ ನೆದಲೆಗ ಕಂಗಟ್ಟು ಸೀಡಿಲ ಘರ್ಜನೆಯಂತೆ ವ್ರಿಹಿಯನ್ನು ಜರೆಯುತ್ತಾನೆ. ನುಡಿಗೆ ಹೇಸದ ಬಂಡೆ ನಿನ್ನೊಡನೆ ಮಾತೇಕೆ, ಸತ್ಯಹೀನನು ನೀನು ಬಡವರನ್ನು ಕಣ್ಣೆತ್ತಿ ನೋಡದವ. ಶ್ರೀಮಂತರನ್ನು ಬೆನ್ನತ್ತಿ ಹೋಗುವವ, ಬಾನಂತಿಗಳಿಗೆ, ರೋಗಿಗಳಿಗೆ ಪತ್ಯ ನೀನು. ಸತ್ತ ಹೆಣದ ಬಾಯಿಗೆ ತುತ್ತು ನೀನು, ನಿನ್ನ ಜನ್ಮ ನಿರರ್ಥಕ ಎಂದು ಹೇಳಿ ತನ್ನ ಜನ್ಮ ಎಷ್ಟು ಸಾರ್ಥಕವೆಂಬುದನ್ನು ನರದೆಲಗವು ಹೀಗೆ ಹೇಳುವುದು.

"ಮಳೆದಗದು ಬೆಳೆಯಡಗಿ ಕ್ಷಾಮದ
ವಿಲಿಯ ಕಾಲದೊಳನ್ನವಿಲ್ಲದೆ
ಅಳಿವ ಪ್ರಾಣಿಗಳಾದರಿಸಿ ಸಲಹುವೆನು ಜಗವರಿಯೆ।
ಎಲ್ಲವೊ ನೀನೆಲ್ಲಿಹೆಯೋ ನಿನ್ನಯ
ಬಳಗವದು ತಾನೆಲ್ಲಿಹುದು ಯಾ
ಹಲವು ಹುಲುಧಾನ್ಯಗಳೆನಗೆ ಸರಿದೊರೆಯೆ ಕೇಳೆಂದ ॥೪೩॥

MMERCE COLLEGE

ಆಗ ವ್ರಿಹಿ ನಾನು ಕಳೆತಾಗ ಮಧುಪಾನವಾಗುತ್ತೇನೆ. ನೀನು ಕಳೆತಾಗ ತಿಂದರೆ ಹುಚ್ಚು ಹಿಡಿದು ಬುದ್ಧಿಹೀನರಾಗುತ್ತಾರೆ. ಆಗ ನರದೆಲಗ ಸಾಕು ಮಾಡು ನಿನ್ನ ಅತಿಶಯದ ಮಾತುಗಳನ್ನು ನಿನ್ನೊಂದಿಗೆ ಮಾತನಾಡುವುದು ಹುರುಳಿಲ್ಲವೆಂದು ಸಭೆಯನ್ನುದ್ದೇಶಿಸಿ ನೀವೇ ತಿರ್ಮಾನಿಸಿ ಹೇಳಲು ಕೇಳಿಕೊಂಡಿತು. ಆಗ ಶ್ರೀರಾಮನು ಇವರ ನ್ಯಾಯ ಬಗೆಹರಿಸುವದೇಗೆ ಎಂದು ಯೋಚಿಸುತ್ತಾ, ಈ ನ್ಯಾಯವನ್ನು ಬಗೆಹರಿಸಲು ಹರಿಹರ ವಿರಂಚಾದ್ಯರನ್ನ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಕರೆಯಿಸಲು ಶ್ರೀರಾಮನು ಆಶ್ವಾಸನೆಯನ್ನು ನೀಡಿದನು. ಅವರು ಗುಣಾವಗುಣಗಳನ್ನು ನೋಡಿ ಅಳೆಯುತ್ತಾರೆ. ಅಲ್ಲಿಯವರೆ ಆರು ತಿಂಗಳು ಸೆರೆವಾಸದಲ್ಲಿರಬೇಕೆಂದು ರಾಜಾಜ್ಞೆ ಮಾಡಿ ಗೌತಮರಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿ ಅಯೋದ್ಯೆಗೆ ಹೊರಟುಹೋದನು. ಆಗ ನರದೆಲಗ ನಮ್ಮನ್ನು ಸೆರೆಮನೆಗೆ ನೂಕಿ ಸಂಪತ್ತಿನ ಸುಖದಲ್ಲಿ ಮರೆಯದಿರಿಯಂದು ಕೈ ಮುಗಿದು ಕೇಳಿಕೊಂಡಿತು. ಈ ಮಾತಿಗೆ ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ ಬರವಸೆಯ ಮಾತನು ಆಡಿದನು. ಆರು ತಿಂಗಳ ತರುವಾಯ ಪಟ್ಟಾಧಿಕಾರದ ಏರ್ಪಾಡು ನಡೆಯಿತು. ಈ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮಕ್ಕೆ ಸಕಲರಾಜರಾಧಿಯಾಗಿ, ಅತ್ರಿ, ಭಾರದ್ವಾಜ, ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ, ವಾಮದೇವ, ಅಗಸ್ತ್ಯ, ಕಣ್ವ, ಅಂಗೀರಸ, ಮಾರ್ಕಂಡೆಯ, ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮುಂತಾದ ಮುನಿ ಉತ್ತಮರು, ವಿದ್ವಾಂಸರು, ಕವಿಶ್ವರರು, ನೆರೆದರು. ಶ್ರೀರಾಮನಿಗೆ ಪಟ್ಟಾಭೀಷೆಕವನ್ನು ಕಟ್ಟಿದರು. ವಿಜ್ರುಂಬನೆಯ ಆಡಂಭರ, ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಕಾರ್ಯಚಟುವಟಿಕೆಯ ಸಂತೋಷದಲಿ ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ ರಾಗಿಗೆ ನೀಡಿದ ವಚನ ಮರೆಯಲಿಲ್ಲ. ಮರುದಿನವೆ ಓಲಗದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ನಸುನಗುತ್ತಾ ನೆರೆದಲೆಗ ಮತ್ತು ವ್ರಿಹಿ ಸೆರೆಯೊಳಗಿದ್ದು ಏಳು ತಿಂಗಳುಗಳೆ ಕಳೆದಿವೆ. ಅವರನ್ನು ಕರೆಯಲು ಆಂಜನೆಯನಿಗೆ ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡಿದನು. ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ ಪಂಚನದಿಯ ಬಳಿ ಬಂದು ಗೌತಮರಿಗೆ ವಂದಿಸಿ ಸೆರಮನೆಯೊಳಗಿದ್ದವರನ್ನು ಕರೆದುಕೊಂಡು ಅಯೋದ್ಯೆಗೆ ಬಂದನು. ಗೌತಮ ಮುನಿಗಳನ್ನು ಸತ್ಕರಿಸಿ ರಾಜಮಂದಿರದಲ್ಲಿ ಕುಳಿರಿಸಿದನು. ಇವರ ನ್ಯಾಯ ಬಗೆಹರಿಸಬೇಕೆಂದು ಶ್ರೀರಾಮನು ಹೃದಯ ಶುದ್ಧಿಯಲ್ಲಿ ತ್ರೈಭುವನಕರ್ತರು, ಇಂದ್ರ ಮೊದಲಾದ ಮಹನಿಯರನ್ನು ನೆನೆದನು. ತಕ್ಷಣಕ್ಕೆ ಅವರೆಲ್ಲ ಓಲಗಕ್ಕೆ ಬಂದರು. ಅಲ್ಲಿ ಭೋಜಾಂಗಮರಸರು,

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

ಕಿನ್ನರಿ. ಯಕ್ಷರಾಕ್ಷಸರು. ಸೂರ್ಯ. ಚಂದ್ರ ಮುಂತಾದ ಮಹಾಮಹಿಮರು, ಕ್ಷತ್ರಿಯರು. ವರ್ತಕರು. ಕುಶಲ ಬುದ್ಧಿವಂತರು ನೆರೆದಿದ್ದರು. ಇಂತಹ ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಬುದ್ಧಿವಂತನಾದ ನರದೆಲಗ ಕೈ ಮುಗಿದು "ಧರಣಿಕಾಂತ ರಘುವರನೆ ಸುಬುದ್ಧಿಯನೆಂತು ನಮಗರುಹುವಿರದ ಪೇಳೆಂದ". ಆಗ ರಾಮನೃಪಾಲ ಘನ ತಪೋಮಹಿರಿಗೆ "ಮನವ ವಂಚಿಸಲಾಗದೀ ಧರ್ಮವನು ನೆರೆ ತಿಳಿದು ಅನುನಯದಿ ಪೇಳಿ ಇದರಲ್ಲಿ ಯಾರು ಗುಣಸಾರವನು" ಎಂವಾಗ ದೇವೇಂದ್ರನು ನಸುನಗುತ "ಸಾರ ಹೃದಯವನು ನೆರೆದಲೆಗ ನಿಸ್ಸಾರನೀ ವ್ರಿಹಿ" ಎಂದು ತನ್ನ ಅಭಿಮತವನ್ನು ಹೇಳಿದ. ನಾರದನು ಇದನ್ನೇ ಸಮ್ಮತಿಸಿ 'ನರೆದಲೆಗನೆ ಬಲಯುತ ಇವನು ಕಳೆಗುಂದಿಲ್ಲಾ ವ್ರಿಹಿ ಕಳೆಗುಂದಿದ್ವಾನೆ' ಎಂದನು. ಕಪಿಲ ಮುನಿಗಳು ಸಹ ನರದಲೆಗನೆ ಮೆಚ್ಚಿ 'ಬಡವ ಬಲ್ಲಿದನೆನ್ನದೆ ಎಲ್ಲರನು ಸಲಹುನೆಂದು' ಹೋಗಳಿದನು. ನೆರದ ಸಭೆಯೇ ನರದೆಲಗ ಶ್ರೇಷ್ಠವೆಂದು ಸಾರಿತು. ರಾಮನೃಪಾಲ ನರೆದಲೆಗ ಮೆಚ್ಚಿ ತನ್ನ ಹೆಸರನ್ನು ಅದಕ್ಕಿಟ್ಟನು. ಅಲ್ಲಿಂದಲೇ ನರದೆಲೆಗ "ರಾಘವ" ನೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಅನೇಕ ಮಹಾಮಹಿಮರು ಉಡುಗೊರೆ ನೀಡಿ ಸನ್ಮಾನಿಸಿದರು. ಬ್ರಹ್ಮನು ಕರಕಮಂಡಲ ಪಾತ್ರೆಯನ್ನು, ಶಂಕರನು ತ್ರೀಶೂಲವನ್ನು, ನಾರದ ಚಕ್ರವನ್ನು, ಇಂದ್ರ ಉರುತರದ ಕೂರಿಗೆಯನ್ನು ಕಾಣಿಕೆಗಳನ್ನು ಕೊಡುತ್ತಿರಲು ಪಾರ್ವತಿಯು ಸುಮ್ಮನಿರದೆ ತನ್ನ ಮಹಿಳಾ ಬಳಗವನ್ನು ಕರೆದು ಭೂಲೋಕದಲ್ಲಿ ರಾಗಿಯನ್ನು ಬೆಳೆಯುವವರ, ತಿಂಬುವವರ ಸೇವೆಗೆ ಕಳುಹಿಸಿದಳು. ಆಗ ಹನುಮಂತನು 'ಇನಕುಲೇಂದ್ರನ' ಪಾದಕ್ಕೆ ವಂದಿಸಿ ನೀವು ನಾಮಾಂಕಿತವನ್ನು ಇಟ್ಟಿರಿ ನಾನು ನಿಮ್ಮನ್ನು ಅಗಲದೆ ಇರುವೆನು ನನಗೇನು ಗತಿ ಎಂದು ಕೇಳಿದಾಗ ರಾಮನು ನಸನಗುತ ರಾಮನಿದ್ದಡೆ ನಿನಗೆ ನಿನ್ನಭಿಧಾನವಾಗಲಿ ಎಂದಾಗ ಹನುಮ ಈ ರೀತಿ ಉಚ್ಚರಿಸಿದ.

೧. ಕನಕದಾಸರ ಜೀವನ ವಿಚಾರ – ಜ್ಯೋತಿ ಹೊಸುರು

೨. ಕನಕದಾಸರ ಕೀರ್ತನೆಗಳು – ಸಂ. ಪಂಡಿತರತ್ನ ವಿದ್ಯಾವಾರಿಧಿ, ಶ್ರೀ ಶಿವಮೂರ್ತಶಾಸ್ತ್ರ, ಡಾ.ಕೆ.ಎಂ. ಕೃಷ್ಣರಾವ

೩. ಕನಕ ಕಿರಣ – ಸಂ.ಕಾ.ತ. ಚಿಕ್ಕಣ್ಣ

೪. ರಾಮಧಾನ್ಯ ಚರಿತೆ – ಕನಕದಾಸರು

೫. ಮಹಾತ್ಮ ಕನಕದಾಸ ಪ್ರಶಸ್ತಿ – ಪು. ರಾಜ್ಯಸಮಿತಿ

೬. ಶ್ರೀ ಕನಕದಾಸರ ಹಾಡುಗಳು – ಬೆಟಗೇರಿ ಕೃಷ್ಣಮೂರ್ತಿ

೭ ನಳ ಚರಿತೆ – ಸಂ.ದೇ. ಜವರೆಗೌಡ

೮. ಕನಕದಾಸರ ಪದಗಳು – ಶ್ರೀ ಕಲಮದಾನಿ ಗುರರಾಯ, ಎ.ಎಂ ಕರಡಿ

೯. ಕನಕ ದರ್ಶನ – ಡಾ. ವೆಂಕಟರಾಯ ಆನಂದ ಶೆಟ್ಟಿ

೧೦. ಮೋಹನ ತರಂಗಿಣಿ – ಕನಕದಾಸರು

೧೧. ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಚರಿತ್ರೆ – ರಂ. ಶ್ರೀ ಮುಗಳಿ

CS Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

Name of the Teacher: Dr. M. Nanjundaswami

Shri Kalidas Education Society's

NETAJI SUBHASHCHANDRA BOSE DEGREE COLLEGE

VIJAYAPUR - 586102

INTERNATIONAL CONFERENCE

ಅಂತಾರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ವಿಚಾರ ಸಂಕಿರಣ

KANAKPRABHE

ಕನಕಪ್ರಭೆ

ಕನ್ನಡ ವಿಭಾಗ

ಕನಕದಾಸರ ಸಾಹಿತ್ಯ : ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಮರು ಓದು

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

Certificate

This is to certify that, Dr. M. Nanjundaswamy

of Basaveshwar Commerce College, Bagalkot.

Participated / Paper Presented in Kanakprabhe 2020

31st January 2020

Prof. V.D. Vastrad	**Shri S.A. JIDDI** Ex.MLC	**Dr. Appu Jadhav**
Chairman, Advisory Committee	President, Sri Kalidas Education Society	Principal, Netaji Subhash Chandra Bose Degree College

Cover Page

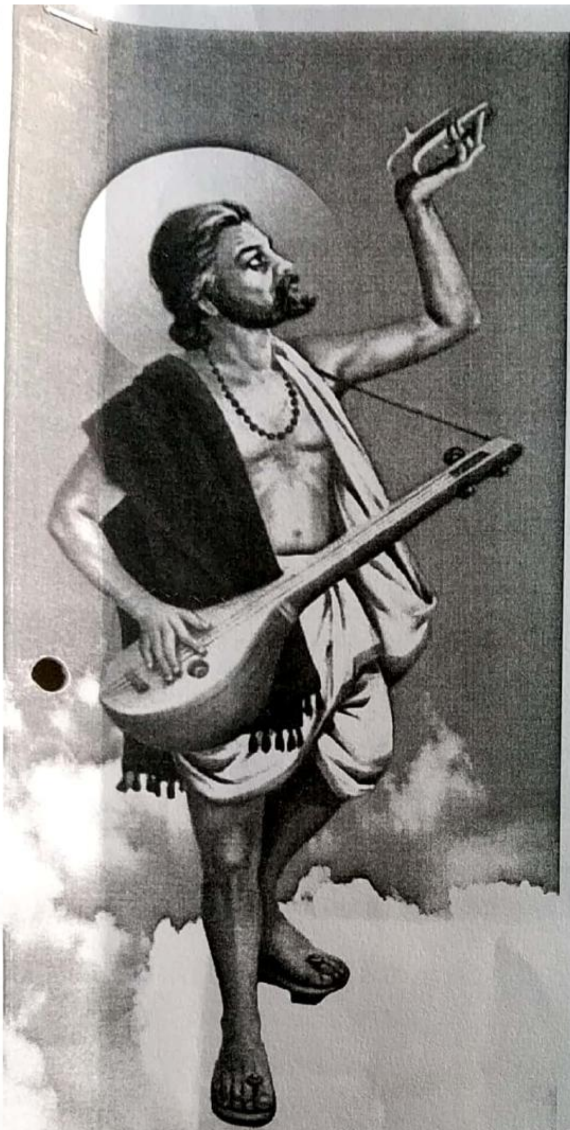

INTERNATIONAL CONFERENCE

ಅಂತಾರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ವಿಚಾರ ಸಂಕಿರಣ

Re-reading of : Kanakada's Literary and Cultural Heritage

ಕನಕದಾಸ ಸಾಹಿತ್ಯ: ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಮರು ಓದು

31st January 2020

Organized by:

ಕನಕಪ್ರಭೆ

KANAKAPRABHE

Department of Kannada

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE

NETAJI SUBHASH CHANDRA BOSE DEGREE COLLEGE, VIJAYAPUR-586102

Proceedings

Scanned with CamScanner

First Impression : 2020

© Department of Kannada, Netaji Subhash Chandra Bose Degree College, Vijayapur

ISBN No: 978-93-89852-14-1

All rights reserved. No part of this Seminar Proceeding can be reproduced stored or transmitted in any form or by any mean without the prior permission of the publisher.

Disclaimer

Papers are accepted and printed in these Proceedings with the understanding that the same work has been neirther submitted nor published elsewhere.

Views, ideas and designs expressed in the papers are solely from respective authors. Organizers are not responsible for authentication of the papers published in this proceedings.

The proceedings is being published in the interest of authors and research community for private circulation only

Published and Printed by :

KANAKAPRABHE: A collection papers presented in the International seminar

Published by :

Chief Editor : Dr. Narayan B. Pawar
Netaji Subhash Chandra Bose Degree College, Vijayapur
Dr. Rajashri, S. Jiddi

Sub-Editor: Prof. V.D. Vastrad

First impression: 2020

© Principal, Netaji Subhash Chandra Bose Degree College, Vijayapur

Pages-X+ 225

Copies : 200

Price : 180/-

Subject : Re-reading of : Kanakada's Literary and Cultural Heritage
A collection papers presented in the International seminar
about Kanakadas literature

Printed by: **Om Shakthi Graphics** Bangalore, Cell: 8553939482

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE

First Page of Publication

೩.೨. ಕನಕದಾಸರ ಕೀರ್ತನೆಗಳಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿಯ ಸ್ವರೂಪ

ಡಾ. ಎಂ.ನಂಜುಂಡಸ್ವಾಮಿ

ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿ ಸಾಹಿತ್ಯಕ್ಕೆ ಹೆಸರಾದವರೆಂದರೆ ಶಿವಶರಣರು ಮತ್ತು ಹರಿದಾಸರು. ಕೀರ್ತನೆಗಳು ಭಾರತ ದೇಶದ ಹಲವು ಭಾಗಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡು ಧಾರ್ಮಿಕ ಹಾಗೂ ಸಾಮಾಜಿಕ ಬದಲಾವಣೆಗಳಿಗೆ ಕಾರಣವಾದ ಭಕ್ತಿ ಚಳುವಳಿಗೆ ಅದರದೇ ಆದ ಕಲಾತ್ಮಕ ಆಯಾಮಗಳೂ ಇದ್ದವು. ಕರ್ನಾಟಕದ ಮಟ್ಟಿಗೆ ಹೇಳುವುದಾದರೆ, ವಚನಗಳು, ಕೀರ್ತನೆಗಳು ಹಾಗೂ ತತ್ವ ಪದಗಳು. ಕಾಣದ ದೈವದ ಅಸ್ಥಿತ್ವದಲ್ಲಿ ನಂಬಿಕೆಯಿಟ್ಟು ಆ ದಿಕ್ಕಿನಲ್ಲಿ ಮನಸ್ಸನ್ನು ತೊಡಗಿಸಿ. ಮೂರ್ತಿಯನ್ನು ಕಲ್ಪಿಸಿಕೊಂಡು, ಕ್ರಮೇಣ ಕನಸು ಮನಸುಗಳಲ್ಲೂ ಆ ಕಲ್ಪನಾ ಮೂರ್ತಿಯೇ ಬಂದು ನಿಂತಂತಾಗಿ ಕೊನೆಗೆ ತಮ್ಮ ಇಷ್ಟ ದೈವವನ್ನು ಕಣ್ಣಾರೆ ಕಂಡಂತಹ ಅನುಭವವನ್ನು ಪಡೆದಿರುವುದು ಈ ಎಲ್ಲ ಭಕ್ತರ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯ. ಭಕ್ತಿ ಪರಿಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ ಈ ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು 'ದೈವ ಸಾಕ್ಷಾತ್ಕಾರ' ಎಂದು ಕರೆಯುವುದುಂಟು. ದೇವರ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ಹಾಡಿಹೊಗಳುವ ಅಂತಯೇ ಹಿಂದೂ ಧರ್ಮದ ತಾತ್ವಿಕ ಹಾಗೂ ನೈತಿಕ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಗಳನ್ನು ಜನರಿಗೆ ಬಿತ್ತರಿಸುವ ಅನೇಕ ಹಾಡುಗಳು ರಚಿತವಾದವು. ಇವುಗಳನ್ನು ಕೀರ್ತನೆಗಳು, ದಾಸರ ಪದಗಳು ಮುಂತಾದ ಹೆಸರುಗಳಿಂದ ಕರೆಯಲಾಗುತ್ತದೆ. ಪ್ರಮುಖ ಹರಿದಾಸರಲ್ಲೊಬ್ಬರಾದ ಕನಕದಾಸರ ಕೀರ್ತನೆಗಳನ್ನು ಈ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ಪರಿಶೀಲಿಸಿದಾಗ ಇತರ ಹರಿದಾಸರುಗಳಲ್ಲಿರುವಂತೆಯೇ ಇವರಲ್ಲಿಯೂ ಭಕ್ತಿಯ ಸ್ವರೂಪವನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು.

ವ್ಯಕ್ತಿಯ ಮನಸ್ಸಿನಲ್ಲಿ ಭಗವಂತನನ್ನು ಕಾಣಬೇಕೆನ್ನುವ ಆಸೆ ಮೊಳೆಯುವುದೇ ಭಕ್ತಿಗೆ ನಾಂದಿ. ತನ್ನ ಮಿತಿಯ ಅರಿವಿನಲ್ಲಿ ಆ ಅಮಿತದತ್ತ ಮನಸ್ಸು ಹರಿಯುವುದು, ಅದನ್ನರಿಯುವ ಹಂಬಲ ಉಂಟಾಗುವುದು ವ್ಯಕ್ತಿಯೊಬ್ಬನ ಭಕ್ತಿ ಜೀವನದ ಪ್ರಾರಂಭ. ಈ ಅರಿವು ಬಂದಕೂಡಲೇ ತನ್ನ ಆ ಮುನ್ನಿನ ಬದುಕಿನ ಪೃಥಕ್ಕರಣ ಪ್ರಾರಂಭವಾಗುತ್ತದೆ. ತನ್ನ ಅದುವರೆಗಿನ ಬಾಳಲ್ಲಿ ವ್ಯರ್ಥವಾಯಿತು ಎಂಬ ನೋವು ಬಾಧಿಸತೊಡಗುತ್ತದೆ. ಈ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿ ನಿಂತ ಕನಕದಾಸರು ತಮ್ಮ ಒಳಗನ್ನು ಪರಿಪರಿಯಾಗಿ ತೋಡಿಕೊಂಡಿದ್ದಾರೆ.

ಎಂಬುದಾಗಿ ತಮ್ಮ ನಿತ್ಯ ಕಾರ್ಯಗಳೆಲ್ಲವನ್ನು ಒಂದು ಹೊಸ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ನೋಡಿ ಅಳೆದಿರುವರು. ತಮ್ಮದೆಲ್ಲ ಕೆಲಸಕ್ಕೆ ಬಾರದ ಕೆಲಸ; ಸುಖವೆಂಬುದು ಲೇಶ ಮಾತ್ರವೂ ಇಲ್ಲ; ಈ ನಾಯಿಬಾಳನ್ನು ಸಾಕುಮಾಡಿ ಭಗವದ್ಭಕ್ತರ ಸಂಗವನ್ನು ಕೊಡು ಎಂದು ಶ್ರೀ ಹರಿಯನ್ನು ಪ್ರಾರ್ಥಿಸುತ್ತಾರೆ.

ಭಕ್ತ ತಾನು ನಂಬಿದ ಇಷ್ಟ ದೈವವನ್ನು ಮನದುಂಬಿ ಹಾಡಿ ತಣಿಯಬೇಕೆಂದು ಹಾತೊರೆಯುತ್ತಾನೆ. ಕನಕದಾಸರಲ್ಲಿ ಈ ಭಕ್ತಿಯ ತೆರೆಗೆ ಅನುಭವದ ನೆರೆನುಗ್ಗಿ ಪ್ರವಾಹದಿಂದ ಹರಿದಿದೆ. ಅವರು ಕಾಗಿನೆಲೆಯಾದಿಕೇಶವನಲ್ಲಿ ತೋರ್ಪಡಿಸಿದ ಪ್ರಾರ್ಥನೆಯ ಒಂದೊಂದು ನುಡಿಯೂ ಇದಕ್ಕೆ ನಿದರ್ಶನ.

ಎಂಬ ಅವರ ಕೀರ್ತನೆ ಹರಿನಾಮದ ಅಗ್ಗಳಿಕೆಯನ್ನೂ, ಅದನ್ನು ನಂಬಿದವರಿಗೆ ಮುಕ್ತಿಯ ದಾರಿ ಸುಗಮ ಎಂಬ ಅಂಶವನ್ನು ಒಟ್ಟಿಗೆ ಸಾರುತ್ತದೆ.

"ನಾರಾಯಣನೆಂಬ ನಾಮದ ಬೀಜವನು ನಾಲಿಗೆಯ ಕೂರಿಗೆಯ ಮಾಡಿ ಬಿತ್ತಿರಯ್ಯ" ಎಂಬ ರೂಪಕ ಕೊಟ್ಟು ಹರಿಸ್ಮರಣೆಯ ಹಿರಿಮೆಯನ್ನು ಹೇಳುವ ಕೀರ್ತನೆ ಹೆಪ್ಪುಗಟ್ಟಿದ ಅನುಭಾವಕ್ಕೆ ಕನ್ನಡಿಯಾಗಿದೆ. ಹೀಗೆ ಭಗವಂತನ ನಾಮ ಸ್ಮರಣೆಯಲ್ಲಿ ಮನವನ್ನು ನೆಲೆಗೊಳಿಸಿ ಅದು ಅತ್ತಿತ್ತ ಹಾತೊರೆಯುವಂತೆ ಮಾಡಿದ ಮೇಲೆ ಈ ದೃಢತೆಯನ್ನು ಇನ್ನೂ ಬಲಪಡಿಸಲು ಭಗವಂತನ ಮಹಿಮೆಗಳನ್ನು ಕೇಳಲು ಭಕ್ತನ ಮನಸ್ಸು ಹಾತೊರೆಯುತ್ತದೆ. ಇದರಿಂದ ಭಗವಂತನ ಮುದ್ರೆ ಭಕ್ತನ ಮನದ ಮೇಲೆ ಬಿದ್ದು ಅವನಿಗಿಂತ ಹೆಚ್ಚಿನ ವಸ್ತು ಇಲ್ಲ ಎಂಬ ಭಾವ ದೃಢಪಡುತ್ತದೆ. ಕನಕದಾಸರಲ್ಲಿ ಇದಕ್ಕೆ ನಿದರ್ಶನವಾಗಿ –

ಭಗವಂತನಲ್ಲಿ ಏಕನಿಷ್ಠೆಯಿಂದ ಇದ್ದರಷ್ಟೆ ಸಾಲದು. ತಾವು ಶ್ರೇಷ್ಠರೆಂದು ಭಾವಿಸಿದ ಭಕ್ತರ ಸೇವೆಯನ್ನು ಮಾಡಬೇಕು. ಅವರಿಗೆ ಅನುಕೂಲವಾಗಿರಬೇಕೆಂಬುದು ಕನಕದಾಸರ ದೃಷ್ಟಿ.

ಬಂಟನಾಗಿ ಬಾಗಿಲಕಾಯ್ದೆ ಹರಿಯ ವೈ
ಕುಂಠ ದಾನೋತ್ತಮರ ದಾಸರ ಮನೆಯ

ಎಂದು ಆರಂಭವಾಗುವ ಕೀರ್ತನೆಯಲ್ಲಿ ಅವರು ಮಾಡುತ್ತಿದ್ದ ಊಳಿಗದ ವರದಿಯನ್ನು ಕಾಣುತ್ತೇವೆ.

ಎಲ್ಲ ಸಂತರಂತೆ ಸರ್ವಾಂತರ್ಯಾಮಿಯಾಗಿ ಇರುವ ದೇವರಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿ ಕನಕದಾಸರಲ್ಲಿ ನಿತಾಂತವಾಗಿತ್ತು. ಅವನು ಎಲ್ಲರನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವನು ಎಂಬ ನಂಬಿಕೆ ದೃಢವಾಗಿತ್ತು. ಹುಟ್ಟಿಸಿದ ದೇವರು ಹುಲ್ಲು ಮೇಯಿಸುವುದಿಲ್ಲ. ಅದನ್ನರಿತು ನಿಶ್ಚಿಂತೆಯಿಂದ ಇರಬೇಕು ಎಂಬುದು ಕನಕದಾಸರ ಮತ. ಅವರು ಶ್ರೀ ಹರಿಯ ಮೇಲಿಟ್ಟಿದ್ದ ವಿಶ್ವಾಸ ಅಗಾಧವಾದುದು. ಸುಖ ಬರಬೇಕಾದರೆ ಸುಮ್ಮನೆ ಕೆರಳಿದರೆ ಆಗದು, ಬಳಲಿದರೆ ಆಗದು, ತಾಳ್ಮೆಯಿಂದಿರಬೇಕು

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

Scanned with CamScanner

ಎನ್ನುತ್ತಾರೆ. ತಾಳಿದವನು ಬಾಳಿಯಾನು ಎಂಬ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ನಂಬಿಕೆಯಿಟ್ಟ ಕನಕದಾಸರು ಹಲವು ಹನ್ನೊಂದಕ್ಕೆ ಹಾತೊರೆದು ಹಾರಾಡುತ್ತಿರುವ ಮನಸ್ಸನ್ನು ಕುರಿತು

ತಲ್ಲಣಿಸದಿರು ಕಂಡ್ಯ ತಾಳು ಮನವೆ
ಎಲ್ಲರನು ಸಲಹುವನು ಇದಕೆ ಸಂಶಯವಿಲ್ಲ

ಎಂಬ ಆಶ್ವಾಸನೆಯನ್ನು ಕೊಟ್ಟು ಭಗವಂತನು ಅನಾಥರನ್ನು ಸನಾಥರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದ ನಿದರ್ಶನಗಳನ್ನು ಕೊಡುತ್ತಾರೆ.

ಬೆಟ್ಟದ ತುದಿಯಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿರುವ ವೃಕ್ಷಕ್ಕೆ ಕಟ್ಟೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿ ನೀರೆರೆದವರ್‍ಯಾರು? ನವಿಲಿಗೆ ಬಣ್ಣವನು ಬಳಿದವರ್‍ಯಾರು? ಸವಳದ ಲತೆಗೆ ಕಪ್ಪಿಟ್ಟವರ್‍ಯಾರು? ಸವಿ ಮಾತಿನ ಗಿಳಿಗೆ ಹಸಿರು ಬಳಿದವರಾರು? ಕಲ್ಲಿನಲ್ಲಿ ಹುಟ್ಟಿ ಕೂಗುವ ಕಪ್ಪೆಗೆ ಆಹಾರವಿತ್ತವರು ಯಾರು? ಬಲ್ಲಿದನು ಕಾಗಿನೆಲೆಯಾದಿಕೇಶವನಲ್ಲವೆ? ಹೀಗೆ ಚರಾಚರ ವಸ್ತುಗಳನ್ನು ರಕ್ಷಿಸುವ ಪ್ರಭುವು ಪಡೆದ ಜನನಿಯ ತೆರದಿ ಹೊಣೆಗಾರನಾಗಿ ರಕ್ಷಿಸುತ್ತಾನೆ ಎಂಬ ನಂಬಿಕೆ ಕನಕದಾಸರದು

ಎಂಬಂತಹ ಸಮಸ್ಯೆಗಳನ್ನಿಟ್ಟು ಭಗವಂತನ ನೆಲೆಯನ್ನು ಪ್ರಶ್ನಿಸಿರುವ ರೀತಿ ಕನಕದಾಸರ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವಕ್ಕೆ ಹಿಡಿದ ಕನ್ನಡಿಯಾಗಿದೆ.

ಈ ಸ್ಥಿತಿಯಲ್ಲಿ ತನ್ನ ಚಿಂತಾಜನಕ ಪರಿಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಇಷ್ಟದೈವದೆದುರು ಬಿತ್ತರಿಸಿ ತನ್ನನ್ನು ಉದ್ಧರಿಸೆಂದು ಆರ್ತಸ್ವರದಲ್ಲಿ ಅಂಗಲಾಚುತ್ತಾನೆ ಭಕ್ತ. ಈ ಹಂತದಲ್ಲಿ ಭಕ್ತ ತನ್ನ ಮನದಳಲನ್ನು ತೋಡಿಕೊಳ್ಳುವಾಗ, ಪರಾಕಾಷ್ಠೆಯನ್ನು ಮುಟ್ಟುತ್ತಾನೆ. ತಾನು ಈ ಭುವಿಗೆ ಜನ್ಮವೆತ್ತಿ ಬಂದಿದ್ದೆ ದೊಡ್ಡ ತಪ್ಪು. ಬಂದಮೇಲೆ ಕಷ್ಟ ಪರಂಪರೆಗಳು ತನ್ನನ್ನು ಮುತ್ತುತ್ತಿವೆ. ಒಂದಾದರೂ ಸುಖದ ಸಂದರ್ಭ ನನಗಿನ್ನೂ ಕಾಣಲಿಲ್ಲ. ಇಂತಹ ವೇಳೆಯಲ್ಲಿ ನೀನು ಕೈ ಬಿಟ್ಟರೆ ನಾನೆತ್ತ ಸೇರಬೇಕು ಎಂಬ ಪ್ರಶ್ನೆ ಹಾಕಿ ಹಲುಬುತ್ತಾನೆ. ಭಕ್ತ ಕನಕದಾಸರು ಆರ್ತಸ್ವರದಲ್ಲಿ ಹರಿಯನ್ನು ಸ್ತುತಿಸಿರುವ ಒಂದು ಸಂದರ್ಭ ಹೀಗಿದೆ.

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE

Scanned with CamScanner

Name of the Teacher: Dr. M. P. Goudaganvi

बी.एल.डी.इ.संस्था

बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय

बसवनबागेवाडी, जि-विजयपुर (कर्नाटक)

तथा

स्व. बाबूराव शेट्टी ट्रस्ट, विजयपुर

के संयुक्त तत्वावधान में

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भक्तिसाहित्य की प्रासंगिकता

द्वि दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक - २४ तथा २५ फरवरी, २०२०

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि प्रो./डॉ./श्री./श्रीमती मल्लिकार्जुन गौडगाँवी

बसवेश्वर वाणिज्य महाविद्यालय, बागलकोट

ने बीज वक्ता / प्रपत्र प्रस्तोता / प्रतिभागी/संयोजन समिति सदस्य के रूप में

भाग लिया। विषय कबीर की मानवतावादी प्रासंगिकता

डॉ. एस. जे. पवार
संयोजक

डॉ. एस. टी. मेरवाडे
प्राचार्य,
बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
बसवनबागेवाडी

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE

Cover Page

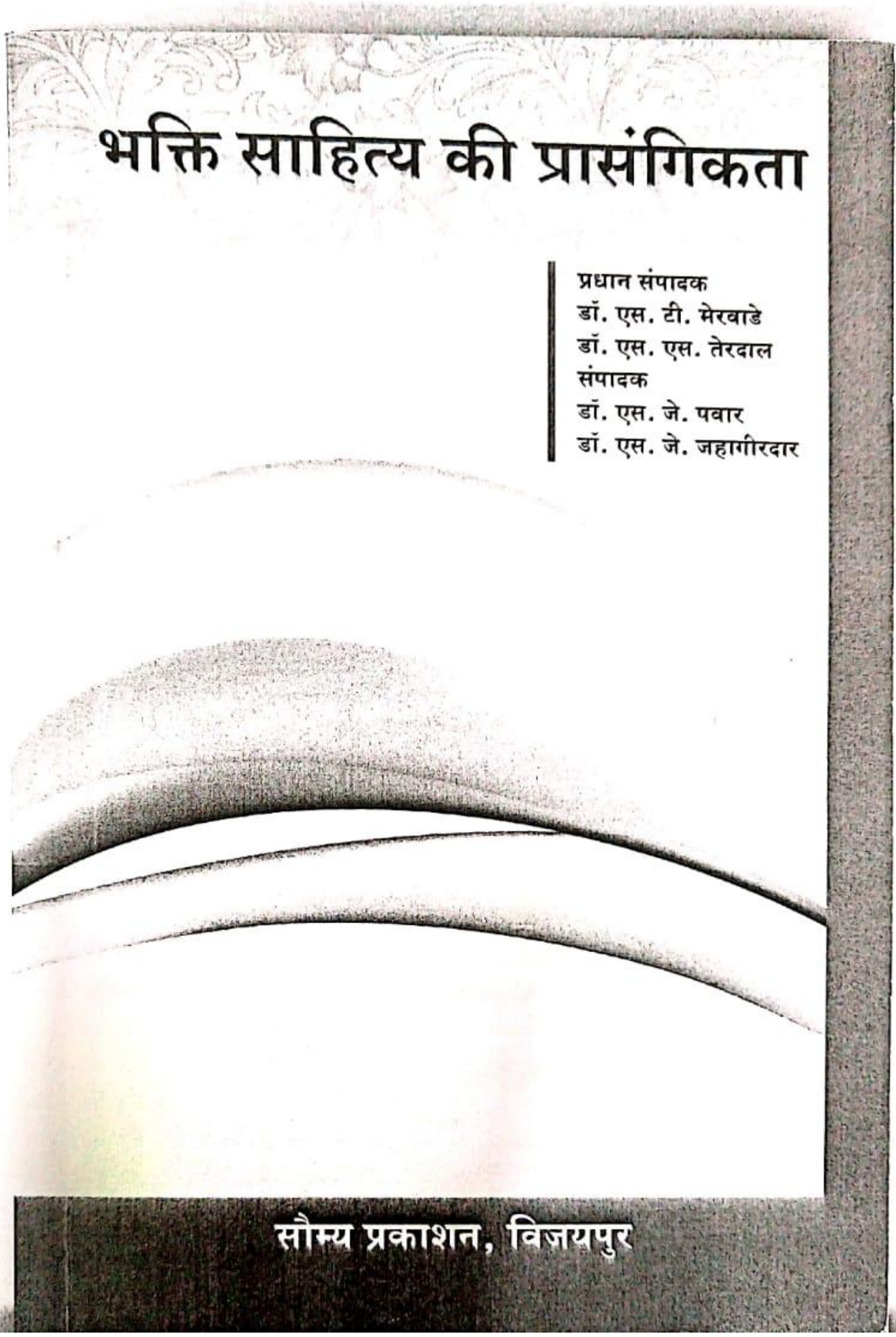

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE,
BAGALKOTE.

BHAKTI SAHITYA KI PRASANGIKATA

ISBN 978-93-83813-51-3

Publisher : Soumya Prakashan
Mahabaleshawar Colony Darga Road
Vijayapur– 586 103 (Karnataka)

© Publisher

First Edition : 2020
Copies : 1000
Pages : xii + 312 = 324
Price : Rs. 300/-
Book Size : Demy 1/8
Paper Used : 70 G.S.M. N. S. Maplitho

भक्ति साहित्य की प्रासंगिकता

प्रधान संपादक : डॉ. एस. टी. मेरवाडे, डॉ. एस. एस. तेरदाल
संपादक : डॉ. एस. जे. पवार, डॉ. एस. जे. जहागीरदार

ISBN 978-93-83813-51-3

प्रकाशन : सौम्य प्रकाशन
महाबलेश्वर कॉलनी, दर्गा रोड
विजयपुर - 586 103 (कर्नाटक)

प्रथम मुद्रण : 2020

© प्रकाशक

प्रति : 1000
पृष्ट : xii + 312 = 324
मूल्य : रु. 300/-
बुक साईज : डेमी 1/8
पेपर : 70 जी.एस.एम. एन. एस. म्यापलिथो

मुद्रक :
त्वरित मुद्रण आफसेट प्रिन्टर्स
विठ्ठल मंदिर रोड, गदग - 582 101
Email : chaitanyaoffset@gmail.com
Mobile : 8884495331, 9448223602

बसवेश्वर क
बसवनब
स्व. ए

Content Page

36. कबीर की मानवतावादी प्रासंगिकता 147
• डॉ. मल्लिकार्जुन गौडगावी

37. पुरंदरदास की भक्ति के विविध स्वरूप 151
• श्री संतोष जे सूर्यवंशी

38. युग की आवश्यकता और कबीर का साहित्य 154
• डॉ.विलास अंबादास साळुंके

39. संत कबीर की निर्गुणोपासन पद्धति 158
• डॉ. गुलाब राठोड

40. प्रेमाश्रयी शाखा और जायसी 161
• सजिता जे.

41. संत तुकाराम के काव्य में सामाजिकता 164
• प्रा. प्रतापसिंग दत्तुसिंग राजपूत

42. समानता के सार्वकालिक दार्शनिक कबीर 168
• डॉ एम बी नायक

43. मलिक मुहम्मद जायसी कृत पद्मावत में लोक-संस्कृति 171
• डॉ. पुष्पा के.

44. संत कबीर और संत शिशुनाल शरीफ की रचनाओं में सामाजिक चेतना 176
• डॉ. महांतेश आर. अंची

45. तुलसीदासजी का व्यक्तित्व और साहित्यिक विशेषताएँ 180
• डॉ. मधुमालती जि. एस.

46. आधुनिक समाज में संत कबीर और शरण अंबिगर चौडय्या के काव्य की प्रासंगिकता 182
• शिवराजकुमार कल्लूर

47 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57.

S. SAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

CS Scanned with CamScanner

First Page of Publication

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE

कबीर की मानवतावादी प्रासंगिकता

• डॉ. मल्लिकार्जुन गौडगांवी

इस संसार में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना के लिए जिन-जिन महापुरुषों ने भी अपने जीवन काल में संघर्ष किया और अपने लक्ष्य में सफल हुए, उनकी प्रासंगिकता प्रत्येक युग में बनी रहती है; और तब तक बनी रहेगी जबतक मानव जाती का अस्तित्व रहेगा। उन्हीं की श्रेणी में भक्त कवि संत कबीरदास का नाम भी लिया जा सकता है।

कबीर एसे सतगुरु हैं जो ईश्वर भक्तों का न केवल उचित मार्ग-दर्शन करते हैं, वरन् राह भटके लोगों को सही राह पर लाने के लिए डाँट-फटकार भी लगाते हैं। अज्ञान में डूबे लोगों का अज्ञान दूर करने के लिए वे एक तर्कशास्त्री की भाँती ऐसी-ऐसी दलीलें पेश करतें हैं कि जिन से उनका अज्ञान जनित भ्रम दूर हो सके। इस लिए वे आडम्बरों पर करारी चोट करतें हैं, फिर चाहे वह पंडित, काजी, मुल्ला, मौलवी हो या साधु वेशधारी जोगी, यती अथवा सन्यासी। वे सच बात करने से कभी नहीं चूकते चाहे वह सच प्रिय हो या अप्रिय।

प्रभु भक्ति एकान्तिक साधना है, उसके लिए दिखावा या हो-हल्ला करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उसके लिए भगवा वस्त्र धारण करना, आसन लगा मंदिर में बैठना पत्थर पूजना, कान फाड़ना, दाढी-बाल बटाना या मुडाना, जंगल में धूनी रमाकर काम-वासना को जलाना या गीत-पाठ करना सब व्यर्थ हैं। इसीलिए कबीर ने ढाढी-बाल बढाने वालों को बकरा, काम वासना जलानेवालों को हिजडा और गीता बाँचनेवालों को लबाड सम्बोधित किया है।

'मन ना रंगाये जोगी कपडा।
आसन मारि मंदिर में बैटे,

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE.

ब्रहम-छाडि पूजन लागे पथरा।
कनवा फडय जोगी जटवा बढौले,
दाढी बढाय जोगी होइ गैले बकरा।
काम जराय जोगी होय गैले हिजरा
जंगल जाय जोगी धुनिया रमौले,
मथवा मुँडाय जोगी कपडा रंगैले,
गीता वाँच के होये गैले लबरा।
क इहिं कबीर सुनो भाई साधो,
जम दरवजवा बाँधल जैब पकडा ॥

इसी तरह कुछ लोग सिर मुँडाकर या सर के बाल काटकर ईश्वर-भक्त होने का ढोंग रचाते हैं। यदि सिर मुडा कर प्रभु मिलते होते तो सभी सिर मुडा लेते। बार-बार (ऊन प्राप्ति के लिए) शरीर मुँडाये जाने पर भेड वैकुण्ठ नहीं चली जाती-

मूँड मुडाये हरि मिलै, सब कोई लेहु मुंडाय।
बार-बार के मूँडने, भेड, वैकुण्ट न जाये।

जिस तरह से कबीर बाह्याचारों के विरोधी हैं, उसी तरह मंदिर मस्जिद और मूर्ति-पूजा के भी विरोधी हैं-

'पाहन पूजै हरि मिलै तो मैं पूजूँ पहार।
ताते यह चाकी भली पीसि खाय संसार।

आज लोग मूर्ति पूजा को कमाई का धंधा बना लिया है।

कबीर की प्रतिभा ही नहीं वाणी भी प्रखर थी। काजी को फटकारते हुए वे कहते हैं - अरे काजी ! किस किताब की बात करते हो इतने दिनों से पढने के बावजूद भी प्रभु का तत्व समाझ नहीं पाये तुम समझते हो कि सुन्नत कर देने से कोई व्यक्ति मुसलमान हो जाता है ? यदि प्रभु ने मुझे मुसलमान बनाया होता तो खतना स्वयं हो जाता। पुरुष का तो सुन्नत कर दोगे, लेकिन स्त्री तो हिन्दू ही रह जायेगी क्योंकि उसका खतना नहीं हो सकता। इस तरह आधे तो हिन्दू ही रह जाओगे। अत: किताबी बातें करना व्यर्थ है। हिंसा करना कोई धर्म नहीं है -

'काजी कौन कतेब बखानै। पढत-पढत केते दिन बीते,
गति एकै नहीं जानै। और खुदाई तुरक मोहि करता,
तौ आपै कटि किन जाई। हौं
तो तुरक किया करि सुन्नति,
औरति सौं का कहिये। अंरध सरीरी नारि न छूटै, आधा हिन्दू रहि ये।

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE

कबीर आचरण की शुद्धता को महत्वपूर्ण मानते हैं। वे न केवल पशु-बलि का विरोध करते हैं वरन् मांस-मदिरा-जुआ, वेश्यागमन, चोरी आदि बुराइयों को भी व्यक्ति के सर्वनाश का कारण मानते हैं, अत: उनसे दूर रहने की सलाह देते हैं।

धन वेशया सों खाय।
जुआ, खोलि चोरी करै,
अंत समूला जाय।'

कबीर मानते हैं कि यह कलियुग है। इस में उल्टा-पुल्टा भी हो जाता है। कबीर अपने समय की सच्चाई से भली भाँति परिचित है। वे जानते हैं कि दिन-प्रति दिन नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है, सज्जनों की संख्या में निरन्तर कमी आ रही है जबकि दुर्जनों की संख्या में धक अन्यधिक वृद्धि हो रही है।

''साधु न मानैं कोय
कामी क्रोधी मसखत।
तिनको आटर होय।

मानवतावादी कबीर हिन्दू धर्म की जातीय विषमता, सामाजिक समानता एवं अस्पृश्यता से बुरी तरह तिलमिला उठे थे, जिसका दंश उन्हों ने स्वयं भी झेला था। ऐसा धर्म जो पशु-पक्षियों तक को देवतुल्य समझता हो, गाय को माता तथा साँप को देवता मानता हो, शेर, उल्लू, गरूड चूहे, वगैरह को देवी-देवताओं के वाहन के रूप में आदर देता हो और दूसरी ओर शूद्र को न केवल अस्पृश्य वरन् उसके दर्शन को भी पाप समझता हो, उसे कबीर कैसे स्वीकार कर सकते थे।

कबीरदास ने जिस साधना का बीज बोया था, वह आज भी उतना ही प्रासंगिक है। लगभग छ: सौ वर्ष पूर्व क्रांतिकारी कबीर ने जिस लडाई की शुरुआत की थी, वह अभी खत्म नहीं हुई है। इनके विरोध के बावजूद न मंदिरों का बनना रुका, न मस्जिदों का; न मंदिर-मस्जिद के मुद्दे खत्म हुए न हिन्दू - मुस्लिम एकता कायम हुई; न मूर्ति पूजा रुकी, न नमाज पढना; न जात-पाँत के झगडे खत्म हुए न जीव हत्या बंद हुई।

कबीर की इस प्रासंगिकता का मुख्य कारण उनका मानवतावादी दृष्टिकोण एवं प्रगतिशील चिंतन है हिन्दू एवं मुस्लिम समाज में उनकी स्वीकार्यता है। संप्रदायों से ऊपर उठकर मानव मात्र के उध्दार प्राणिमात्र के प्रति करूणा, अहिंसा तथा प्रेम

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE

की बात करते हैं, इसलिए उनका किसी धर्म से विरोध भी नहीं है । वे भक्त हैं इसलिए सभी धर्म-संप्रदायों के भक्तों में आदरणीय हैं ।

कबीर का यह आत्मविश्वास उन्हें दिव्यता एवं भव्यता । प्रदान करता है जो उन्हें न केवल एक अलग पहचान देता है, वरन् युगद्रष्टा एवं युगसृष्टा नायक की भूमिका में आसीन कर देता है । इस युगचेता युगपुरुष की निर्लिप्तता एवं वैचारिक प्रखरता में नवयुग निर्माण की वह दूरदर्शिता थी, जो युग-युगों तक आत्मज्ञान के आलोक से भावी पीढी का पथ आलोकित करती रहेगी तथा अपनी प्रासंगिकता निरन्तर बनाये रखेगी ।

■■

हिंदी विभाग बसवेश्वर वाणिज्य महाविद्यालय, बागलकोट

Name of the Teacher: Dr. M. Nanjundaswami

Certificate of Publication

ಪ್ರತಿಬಿಂಬ

IIMRD JOURNALS

PRATIBIMBA: MULTIDISCIPLINARY KANNADA RESEARCH JOURNAL OF IIMRD

Peer Reviewed and Referred Journal

ISSN: 2582-2284

The Editorial Board of

Pratibimba: Multidisciplinary Kannada Research Journal of IIMRD is hereby awarding this certificate to

ಡಾ. ಎಂ. ನಂಜುಂಡಸ್ವಾಮಿ.

In recognition of the publication of the paper entitled

ದಲಿತ-ಬಂಡಾಯ ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಸಮಾಜವಾದದ ಚರ್ಚೆ

Published in Pratibimba Journal, Published by Indian Institute of multidisciplinary Research and Development, Mysuru, India

Volume-2, Issue 1, Jul-Aug 2020

PAPER ID: IIMRD0201182020

Secretary
Indian Institute of Multi Disciplinary Research and Development
Mysuru-570 022

website: www.iimrd.com | email: editor@iimrd.com

Cover Page

ISSN: 2582-2284

ಸಂಪುಟ 2 ಸಂಚಿಕೆ 1 ಜುಲೈ – ಆಗಸ್ಟ್ 2020

ಪ್ರತಿಬಿಂಬ

MULTIDISCIPLINARY KANNADA RESEARCH JOURNAL OF IIMRD

Peer Reviewed and Referred Kannada Journal

IIMRD
JOURNALS

ಭಾರತೀಯ ಬಹುಶಿಸ್ತೀಯ ಸಂಶೋಧನಾ ಮತ್ತು ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಸಂಸ್ಥೆ
ಮೈಸೂರು

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

Scanned with OKEN Scanner

ಸಂಪಾದಕ ಮಂಡಳಿ

ಸಂಪಾದಕರು

ಪ್ರೊ.ಎಂ.ಆರ್.ಗಂಗಾಧರ್ (ಮೈಸೂರು)

ಸಹ ಸಂಪಾದಕರು

ಡಾ. ಎಸ್.ಸಿ. ಪೈ ಪ್ರಭಾಕರ್ (ಧಾರವಾಡ)

ಡಾ.ಬಿ.ಆರ್.ಮಂಜುನಾಥ ಬೆಂಡರವಾಡಿ (ಮೈಸೂರು)

ಸಂಪಾದಕ ಮಂಡಳಿ ಸದಸ್ಯರು

ಪ್ರೊ. ಮನೋಹರ್ ಯಾದವ್ (ಬೆಂಗಳೂರು)
ಪ್ರೊ. ಕೆ.ಎಂ. ಮೇತ್ರಿ (ಹಂಪಿ)
ಪ್ರೊ. ಕೃಷ್ಣರಾಜ್ (ಬೆಂಗಳೂರು)
ಪ್ರೊ. ಟಿ.ಟಿ.ಬಸವನಗೌಡ (ಮೈಸೂರು)
ಪ್ರೊ. ಕೆ. ಸದಾಶಿವ (ಮೈಸೂರು)
ಪ್ರೊ. ಎ. ಎಸ್ ಪ್ರಭಾಕರ್ (ಹಂಪಿ)
ಪ್ರೊ. ನಿರ್ಮಲ್‌ರಾಜ್ (ಮಂಗಳೂರು)
ಪ್ರೊ. ಎಂ.ಕೋಮಲ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಬಿ.ಕೆ.ರವೀಂದ್ರನಾಥ್ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಡಿ.ಎಸ್. ರಾಜು (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಎಚ್.ಎಂ. ಚಂದ್ರಶೇಖರ್ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಎಂ.ರಂಗಸ್ವಾಮಿ (ಚೆನ್ನೈ)
ಶ್ರೀಯುತ ಪ್ರವೀಣ್‌ಕುಮಾರ್ ಮೆಲ್ಲಹಳ್ಳಿ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ರಾಜೇಶ್ ಗುರುರಾಜ್ ಕುಂದರಗಿ (ಪುದುಚೇರಿ)
ಡಾ. ರಮ್ಯ ಭಾಸ್ಕರ್ (ಕೋಯಂಬತೋರ್)

ಪ್ರೊ. ಜಿ. ವೆಂಕಟೇಶ್ ಕುಮಾರ್(ಮೈಸೂರು)
ಪ್ರೊ. ಸಿ. ಬಸವರಾಜು (ಮೈಸೂರು)
ಪ್ರೊ. ಬಿ. ರಮೇಶ್ (ತುಮಕೂರು)
ಪ್ರೊ. ಗುರುಲಿಂಗಯ್ಯ (ಶಿವಮೊಗ್ಗ)
ಪ್ರೊ. ಜಕ್ಕಪಾರ್ಥಸಾರಥಿ (ಉದಗಮಂಡಲ)
ಪ್ರೊ. ಸಿ.ಕೆ.ಪುಟ್ಟಸ್ವಾಮಿ (ಮೈಸೂರು)
ಪ್ರೊ. ಸಮತಾ ಬಿ.ದೇಶಮಾನೆ (ಬೆಂಗಳೂರು)
ಪ್ರೊ. ಬಿ.ರಂಗಯ್ಯ (ಪುದುಚೇರಿ)
ಡಾ. ಆರ್.ತಿಮ್ಮರಾಯಪ್ಪ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಎಲ್. ಶ್ರೀನಿವಾಸ್ (ಹಂಪಿ)
ಡಾ. ಎಚ್.ಎಸ್. ಕುಮಾರ (ಮೈಸೂರು)
ಶ್ರೀಯುತ ಮಧುಚಂದ್ರ ಬಿ.ಆರ್. (ಕಾರ್ಕಳ)
ಡಾ. ಎಸ್.ಬಿ.ಸುಗಂಧಿ (ಧಾರವಾಡ)
ಡಾ. ವಿಜಯಲಕ್ಷ್ಮಿ ಮ.ನಾ. ಪುರ(ಮೈಸೂರು)
ಶ್ರೀಮತಿ ಸಭೀತಾ (ಮಂಗಳೂರು)

ಸಹಾಯಕ ಸಂಪಾದಕರು

ಡಾ. ಮಧು ಗುಂಡ್ಲುಪೇಟೆ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ರಾಮಕೃಷ್ಣ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಎಸ್. ಮಹದೇವ್‌ಕುಮಾರ್ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಎಚ್.ಎನ್. ಕಾಳಸ್ವಾಮಿ (ಚಾಮರಾಜನಗರ)
ಡಾ. ಎಸ್.ಕೆ.ಕುಮಾರ (ಮೈಸೂರು)

ಡಾ. ಆರ್.ಚಂದ್ರಶೇಖರ್ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಎಂ.ಎಲ್.ದೊರೆರಾಜ್ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಕೆ. ಶೈಲಜ (ಚಾಮರಾಜನಗರ)
ಡಾ. ವಿ. ಶ್ರೀನಿವಾಸ್ (ಮೈಸೂರು)
ಶ್ರೀಯುತ ಎ.ಎಂ.ಗೌತಮ್ (ಮೈಸೂರು)

ತಾಂತ್ರಿಕ ಸಲಹೆಗಾರರು

ಶ್ರೀಯುತ ಎಂ.ಲೋಕೇಶ್ (ಮೈಸೂರು)
ಶ್ರೀಯುತ ಎಸ್. ಲೋಕೇಶ್ (ಮಂಡ್ಯ)
ಶ್ರೀಯುತ ಎ.ಎನ್. ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿ (ಚಾ.ನಗರ)

© ಹಕ್ಕುಗಳು ಪ್ರಕಾಶಕರದು

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE

CS Scanned with CamScanner

Contents Page

Sl. No.	ಅನುಕ್ರಮಣಿಕೆ	ಪು.ಸಂ.
1.	ಮೈಸೂರು ಒಡೆಯರ ಕಾಲದ ಶಾಸನಗಳು: ಒಂದು ಸಮೀಕ್ಷೆ – ದಿಲೀಪ್. ಎಸ್. – ಪ್ರೊ. ಮಹಾದೇವಿ	1–10
2.	ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ಹೋರಾಟದಲ್ಲಿ ಸುಭಾಷ್‌ಚಂದ್ರ ಬೋಸ್‌ರವರ ಪಾತ್ರ – ಶಿವಶರಣಪ್ಪ	11–16
3.	ಬೆಳಗಾವಿ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಪಾತ್ರೋಟಿ ಸಮುದಾಯ: ಒಂದು ಚಿಂತನೆ – ಶಿವಾನಂದ ಹೆಳವರ – ಡಾ. ಎಚ್.ಇ. ಬಸವರಾಜಪ್ಪ	17–21
4.	ಗ್ರಾಮ ಪಂಚಾಯತಿಗಳಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳ ವಿಶೇಷ ಗ್ರಾಮಸಭೆಯ ಪರಿಣಾಮಕಾರಿ ಅನುಷ್ಠಾನ: ಒಂದು ವಿಶ್ಲೇಷಣೆ – ಡಾ. ಹೇಮಾಂಬರ ಎಚ್.ಎಸ್	22–28
5.	ಕರ್ನಾಟಕ ದಲಿತ ಸಂಘರ್ಷ ಸಮಿತಿ ಸಂವಿಧಾನ ಮತ್ತು ರೂಪುರೇಷೆಗಳು – ಡಾ. ಕೆ. ಗುರುಸ್ವಾಮಿ	29–46
6.	ಚಾಮರಾಜನಗರ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಶಾಸನಗಳಲ್ಲಿ ಕೃಷಿ, ವ್ಯಾಪಾರ ಮತ್ತು ಆರ್ಥಿಕ ಅಂಶಗಳು: ಒಂದು ಅಧ್ಯಯನ – ಸುರೇಶ ಎಸ್	47–52
7.	ಶ್ರೀ ರಾಮಾಯಣದರ್ಶನಂನಲ್ಲಿ "ದಶಾನನ ಸ್ವಪ್ನಸಿದ್ಧಿ": ಒಂದು ಮನೋವೈಜ್ಞಾನಿಕ ವಿಶ್ಲೇಷಣೆ – ಡಾ.ಸೋಮಶೇಖರ	53–62
8.	ಶರಣ ಪರಂಪರೆಯ ಚಿಕ್ಕದಣ್ಣನಾಯಕ ಚೆನ್ನಬಸವಣ್ಣನ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವ – ಡಾ ಎಸ್. ಬಿ. ರಾಠೋಡ	63–70
9.	ಮ್ಯಾಸಬೇಡ ಬುಡಕಟ್ಟು ಸಮುದಾಯದಲ್ಲಿ ಹೈನು ಸಂಪ್ರದಾಯ: ಒಂದು ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಅಧ್ಯಯನ – ಡಾ ನಾಗೇಶ ಎಂ.	71–77
10.	ಸೋಲಿಗ ಬುಡಕಟ್ಟು ಸಮುದಾಯದ ಸಾಮಾಜಿಕ ಜೀವನ – ಡಾ. ಶ್ರೀನಿವಾಸ್. ವಿ.	78–88
11.	ಚಿತ್ರದುರ್ಗ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಮ್ಯಾಸಬೇಡರ ಸಮುದಾಯದ ತತ್ವಪದಕಾರರು: ಒಂದು ಅಧ್ಯಯನ – ಪ್ರಹ್ಲಾದ ಡಿ.ಎಂ. – ವೀಣಾ ಕೆ.ಆರ್.	89–97
12.	ಜ್ಯೋತಿರಾವ್ ಫುಲೆರವರ ಜೀವನ ಹಾಗೂ ಸಾಮಾಜಿಕ ಆಂದೋಲನಗಳು – ರಾಜಶೇಖರ ಮಾವಿನಮರ	98–106
13.	ನಾಗ ಸಾಧು ಮತ್ತು ಅಘೋರಿಗಳ ಬದುಕು – ಪ್ರವೀಣ ಕುಮಾರ ಬಿ.	107–114

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

Scanned with CamScanner

Contents Page

14.	ಸಂಕಷ್ಟದಲ್ಲಿರುವ ಚನ್ನಪಟ್ಟಣದ ಬೊಂಬೆ ಉದ್ಯಮ ಮತ್ತು ಪರಿಹಾರ ಕ್ರಮಗಳು: ಒಂದು ಅಧ್ಯಯನ – ನಂದಿನಿ. ಎಸ್.	115–127
15.	ಪರಿಶಿಷ್ಟ ಜಾತಿ ಸಮುದಾಯದ ಸಬಲೀಕರಣದಲ್ಲಿ ಡಾ.ಬಿ.ಆರ್.ಅಂಬೇಡ್ಕರ್ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ನಿಗಮ ನಿಯಮಿತದ ಪಾತ್ರ – ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿ. ಸಿ. – ಪ್ರೊ. ಜಿ. ಸೋಮಶೇಖರ್	128–137
16.	ಪ್ರಬಂಧ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳು: ಒಂದು ಅವಲೋಕನ – ಡಾ. ಬಸವರಾಜ ಕುಂಬಾರ	138–148
17.	ಸುಡುಗಾಡು ಸಿದ್ಧರ ಸಾಂಪ್ರದಾಯಿಕ ನ್ಯಾಯ ಪದ್ಧತಿ – ಡಾ. ಎಂ.ಓ.ಉಮೇಶ	149–154
18.	ದಲಿತ–ಬಂಡಾಯ ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಸಮಾಜವಾದದ ಚರ್ಚೆ – ಡಾ. ಎಂ. ನಂಜುಂಡಸ್ವಾಮಿ	155–161
19.	ಥಾಮಸ್ ಹಾಬ್ಸ್ ಮತ್ತು ಜಾನ್‌ಲಾಕ್‌ರವರ ರಾಜಕೀಯ ಚಿಂತನೆಗಳು – ಬಸವರಾಜು. ಆರ್.	162–168
20.	ನಿರ್ಲಕ್ಷಿತ ಉಪ್ಪಾರ ಸಮುದಾಯ: ಒಂದು ಅವಲೋಕನ – ಸಂತೋಷ ನಡಿಹಾಳ	169–174
21.	ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿ ಪರಂಪರೆ ಮತ್ತು ದಾಸ ಸಾಹಿತ್ಯ: ಒಂದು ಅವಲೋಕನ – ಪ್ರಭಾಕರ ಪಿ.	175–180

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE.

Scanned with CamScanner

First Page of Publication

ಪ್ರತಿಬಿಂಬ

PRATIBIMBA –Multidisciplinary Kannada Research Journal of IIMRD
ISSN: 2582-2284
Vol-2, Issue 1, JUL-AUG 2020
©IIMRD, Mysuru

IIMRD
JOURNALS
www.iimrd.com

ದಲಿತ–ಬಂಡಾಯ ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಸಮಾಜವಾದದ ಚರ್ಚೆ

ಡಾ. ಎಂ. ನಂಜುಂಡಸ್ವಾಮಿ[1]

ಪೀಠಿಕೆ

ಯಾವುದೇ ಸಾಹಿತ್ಯ ರಚನೆಯ ಮೂಲ ಉದ್ದೇಶ ಸಮಾಜದೊಂದಿಗೆ ಸ್ಪಂದಿಸುವುದೇ ಆಗಿದೆ. ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬ ಕವಿಯು ಸಮಾಜವೊಂದರ ಅಂಗವಾಗಿ ಬೆಳೆಯುವುದರಿಂದ, ಅವನ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವದ ರಚನೆಯಲ್ಲಿ, ದೃಷ್ಟಿಕೋನದ ಬಣ್ಣಗಳಲ್ಲಿ, ಭಾವನೆಗಳ ಸಂಘರ್ಷದಲ್ಲಿ, ಬೌದ್ಧಿಕ ಸ್ವರೂಪದಲ್ಲಿ ಹಾಗೂ ಸಂಹವನದಲ್ಲಿ ಸಾಮಾಜಿಕ ಪರಿಸರದ ಪ್ರಭಾವಗಳು ವ್ಯಕ್ತವಾಗಿಯೋ; ಅವ್ಯಕ್ತವಾಗಿಯೋ, ಅನಿವಾರ್ಯವಾಗಿ ಸೇರಿಕೊಂಡಿರುತ್ತವೆ. ಆದರೆ ಈ ಪ್ರಭಾವಗಳು ಕವಿಯ ಸಂವೇದನೆಯನ್ನು ಆಳದಲ್ಲಿ ಪ್ರಭಾವಿಸುವುದರಿಂದ, ಅವನ ಒಟ್ಟು ಸಂವೇದನೆಯ ದ್ರವ್ಯದಲ್ಲೆ ಕರಗಿರುವುದರಿಂದ, ಅವುಗಳನ್ನು ವಿಭಜಿಸಿ ತೋರಿಸುವುದು ಕಠಿಣವಾದ ಕೆಲಸ. ಆದರೆ ಕ್ಷಣ ಕ್ಷಣಕ್ಕೂ ಬದಲಾಗುತ್ತಿರುವ ಈ ಸಾಮಾಜಿಕ ಪರಿಸರದಲ್ಲಿ ಒಬ್ಬ ಕವಿ ಎಷ್ಟರ ಮಟ್ಟಿಗೆ ತನ್ನ ಸಾಮಾಜಿಕ ಸಂವೇದನೆಯನ್ನು ಶ್ರೀಮಂತವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಅವುಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ಪಂದಿಸುತ್ತಾನೆ ಎಂಬುದು ಪ್ರಸ್ತುತ.

"ಸಾಹಿತ್ಯದ ಮೂಲ ಉದ್ದೇಶ ಸಮಾಜದೊಂದಿಗೆ ಸ್ಪಂದಿಸುವುದಾಗಿದ್ದರೂ, ಸಮಾಜವನ್ನು ಸ್ಪಂದಿಸುವ ಮಾರ್ಗ ಬೇರೆ ಬೇರೆ. ಆದರೆ ಅರ್ಥೈಸುವುದು ಒಂದೇ ಆಗಿದೆ. ಈ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಕಾವ್ಯ ಸೃಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಕವಿ ಪ್ರತಿಭೆಯ ಕ್ರಿಯೆ ಮುಖ್ಯ. ಇದು ಕವಿಯ ಬದುಕಿನ ವಾತಾವರಣ, ಕಾಲಮಾನಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ಸಾಮಾಜಿಕ ಸಂದರ್ಭಗಳು ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿತವಾಗಿರುತ್ತವೆ. ಪ್ರತಿಯೊಂದು ಕಾಲಘಟ್ಟದಲ್ಲಿಯೂ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸೃಷ್ಟಿಯಲ್ಲಿ ಭಿನ್ನತೆಯನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು. ಅಂದ ಮಾತ್ರಕ್ಕೆ ಇಡೀ ಸಾಹಿತ್ಯದ ಉದ್ದೇಶ ಭಿನ್ನವಲ್ಲ. ಆದರೆ, ಸಾಮಾಜಿಕ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳನ್ನು, ವಾತಾವರಣವನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಡುವಲ್ಲಿ ಬೇರೆ ಬೇರೆ ಯಾಗಿರುವುದನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು. ಪಂಪನ ಕಾಲದ ಸಾಮಾಜಿಕ ಸಂದರ್ಭ ಮತ್ತು ಇಂದಿನ ದಲಿತ ಬಂಡಾಯದ ಸಾಮಾಜಿಕ ಸಂದರ್ಭ ಎರಡರಲ್ಲೂ ವ್ಯತ್ಯಾಸವನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು. ರಾಜಪ್ರಭುತ್ವ ಹೋಗಿ ಪ್ರಜಾಪ್ರಭುತ್ವ ಬಂದಿದ್ದು, ಆ ಕಾಲದ ಜನ ಸಾಮಾನ್ಯರ ಬದುಕಿಗೂ ಇಂದಿನ ಜನ ಸಾಮಾನ್ಯರ ಬದುಕಿಗೂ ಅಜಗಜಾಂತರ ವ್ಯತ್ಯಾಸವನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು. ಅಂದರೆ, ಸಾಮಾಜಿಕ ಕಟ್ಟಳೆಗಳಲ್ಲಿ, ಆಚಾರ–ವಿಚಾರಗಳಲ್ಲಿ ಸಾಕಷ್ಟು

---

[1] ಸಹಾಯಕ ಕನ್ನಡ ಪ್ರಾಧ್ಯಾಪಕ, ಬಸವೇಶ್ವರ ವಾಣಿಜ್ಯ-ಮಹಾವಿದ್ಯಾಲಯ, ಬಾಗಲಕೋಟ–587101.

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

Scanned with CamScanner

ಬದಲಾವಣೆಯನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು. ಸಮಾಜದಲ್ಲಿಯೂ ಸಮಗ್ರ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಯನ್ನು ಕಾಣಲಾಗದಿದ್ದರೂ, ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಆಗಿರುವುದಂತೂ ದಿಟ. ಇಂತಹ ಸಾಮಾಜಿಕ ಬದಲಾವಣೆ ಚರ್ಚೆಯನ್ನು ಬಂಡಾಯ ಸಾಹಿತ್ಯದ ಸಾಹಿತಿಗಳು, ಕವಿಗಳು ಹೇಗೆ ಪ್ರಸ್ತಾಪಿಸಿದ್ದಾರೆಂಬುದೇ ಮುಖ್ಯ.

ಬಂಡಾಯ ಕಾವ್ಯದ ಸಾಮಾಜಿಕ, ಆರ್ಥಿಕ, ಧಾರ್ಮಿಕ, ರಾಜಕೀಯ ಚಿಂತನೆಯಲ್ಲಿ ಮೇಲು-ಕೀಳು, ಉಚ್ಚ-ನೀಚ, ಬಡತನ, ನಿರುದ್ಯೋಗ ಮತ್ತು ಅಸ್ಪೃಶ್ಯತೆ ಇವುಗಳನ್ನು ಗಂಭೀರವಾಗಿ ಪರಿಗಣಿಸಬಹುದಾಗಿದೆ. ಶ್ರೀಮಂತವರ್ಗ ಬಡವರನ್ನು, ದೀನ-ದಲಿತರನ್ನು, ತಮ್ಮ ಮನೆಗಳಲ್ಲಿ ಜೀತಕ್ಕಿಟ್ಟುಕೊಂಡು, ಅವರ ಬಡತನವನ್ನೇ ಬಂಡವಾಳವನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ತುಳಿಯುತ್ತಾ ಬಂದಿರುವುದನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು. ತುಳಿತಕ್ಕೆ ಒಳಪಟ್ಟವರ ನೋವು, ಸಹನೆ, ಸಿಟ್ಟು, ಆಕ್ರೋಶ, ಹಸಿವು ಇವೆಲ್ಲವನ್ನು ಬಂಡಾಯ ಕವಿ-ಕಾವ್ಯ ಕಾಣ ಬಯಸಿದ ರೀತಿಯನ್ನು ದಾಖಲಿಸಬೇಕಾಗಿದೆ. ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಮೇಲು-ಕೀಳು, ಬಡವ-ಶ್ರೀಮಂತ, ಕಲ್ಪನೆಗಳು ಮಾನವನ ಬದುಕಿನಲ್ಲಿ ಅತ್ಯಂತ ಘೋರವಾದ ದುರಂತಗಳನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸುತ್ತಿವೆ. ಅದರಲ್ಲೂ ಬಡತನ ಮತ್ತು ಅಸ್ಪೃಶ್ಯತೆ ಒಟ್ಟಿಗಿದ್ದಾಗ ಮೇಲ್ವರ್ಗದವರಿಂದ ತಿರಸ್ಕೃತವಾಗಿ ಹೀನಾಯವಾಗಿ ಬಾಳಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ.

ತಿಪ್ಪೆ ತಿಪ್ಪೆ ತಿರುಗಲಾರೆ
ಹಾಲ ಮೊಸರು ಬೇಡಲಾರೆ
ಹುಳ್ಳಿ ನುಚ್ಚು ಕೊಡುವೆಯಾದರೆ
ಕುಡಿದು ಮಾತು ಕೇಳುವೆ [1]

ಹಸಿವಿನಿಂದ ಬಳಲುತ್ತಿದ್ದ ಮಗುವೊಂದು ತನ್ನ ತಾಯಿಯ ಬಳಿ ಬಂದು, ನನಗೆ ಬೇಕಿರುವುದು ಹಾಲು, ಮೊಸರಲ್ಲ, ಹುರಳಿ ನುಚ್ಚು, ಬಡವರ ಆಹಾರವಾದ ಹುರಳಿ, ಅದರ ನುಚ್ಚು. ಶ್ರೀಮಂತರಲ್ಲಿ ದನಗಳ ಆಹಾರವಾಗಿದೆ. ಯುವ ಪೀಳಿಗೆಯ ಪ್ರತಿನಿಧಿಯಾಗಿ ಬಂದಿರುವ 'ಮಗು' ಕವನದಲ್ಲಿ ಮುಗ್ಧ, ಅಸಹಾಯಕತೆ, ಶ್ರೀಮಂತಿಕೆಯ ದರ್ಪದಲ್ಲಿ ಬೇಸತ್ತ ಈ ಎಲ್ಲಾ ಅರ್ಥಗಳಿಗೆ ಸಾಕ್ಷಿಯಾಗಿದೆ.

ತುತ್ತು ಕೂಳಿಗಾಗಿ ಸತ್ತ ದನಿಯವರೆ
ತುಂಡು ಅರಿವೆಗಾಗಿ ಬತ್ತಿ ಹೋದವರೆ
ಓ ಕಪ್ಪು ಮನುಜರೆ, ಬಂಧು ಬಾಂಧವರೆ
ಎಲ್ಲಿ ನಿಮ್ಮ ದನಿ, ಎಲ್ಲಿ ನಿಮ್ಮ ಸ್ವರ
ಕರಿಯೊಡಲ ಕೆಂಪುಸಿರು ಎಲ್ಲಿ? [2]

ಸಾಮಾಜಿಕವಾಗಿ ದುರ್ಬಲರಾದವರು ತಮ್ಮಗಳ ನೋವು, ಅಸಹನೆ, ಸಿಟ್ಟು, ಆಕ್ರೋಶ ಅಸನೆಗಳಿಗೆ ಬಲಿಯಾಗಿ ಕೆಲ ಹೊತ್ತಾದರೂ ಸಂಕಷ್ಟಗಳನ್ನು ಮರೆಯಲು ಪ್ರಯತ್ನಿಸುವುದು

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

ಒಂದೆಡೆಯಾದರೆ, ದುಡಿತದ ಬಹುಪಾಲನ್ನು ಕುಡಿತಕ್ಕೆ ಚೆಲ್ಲಿ ಜೀವನವನ್ನು ಹಸಿವಿನಿಂದ ಕಳೆಯುತ್ತಿರುವುದು ಮತ್ತೊಂದು ವಿಪರ್ಯಾಸ. ಇಲ್ಲಿ ಕವಿ ದಲಿತರ ಪರವಾಗಿ ಧ್ವನಿಯೆತ್ತಿ, ಅವರೆದೆಯಲ್ಲಿ ಅಡಗಿರುವ ಬೆಂಕಿಗೆ ಜ್ವಾಲೆಯಾಗಿ ಸುಡುವ ದ್ಯೋತವಾಗಿ ದಿನ-ದಲಿತರನ್ನು ಪ್ರಶ್ನಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಸಾಮಾಜಿಕವಾಗಿ ಅನ್ಯಾಯಕ್ಕೆ ಸಿಲುಕಿರುವ ಈ ವರ್ಗ ಅನ್ಯಾಯದ ವಿರುದ್ಧ ಹೋರಾಡುವುದರಿಲಿ, ಧ್ವನಿಯನ್ನು ಸಹ ಎತ್ತುವುದಿಲ್ಲ. ಇಂತವರ ಬದುಕಿನ ಪರವಾಗಿ ಧ್ವನಿಯೆತ್ತುತ್ತಾ, ಸಿಡಿದೇಳಿ ಎಂದು ಎಚ್ಚರಿಸುತ್ತಾರೆ.

ಇಂದಿನ ಆಧುನಿಕ ಯುಗ ಸಂಕುಚಿತಗೊಳ್ಳುತ್ತಿದೆ. ಅದರೊಂದಿಗೆ ಸಾಮಾಜಿಕ ಶೋಷಣೆಯೂ ಉಲ್ಬಣಗೊಳ್ಳುತ್ತಿದೆ. ಇಂತಹ ಸಾಮಾಜಿಕ ಶೋಷಣೆಯನ್ನು ತಮ್ಮ ಮನೋಸಂವೇದನೆಗೆ ಸಿಲುಕಿಸಿಕೊಂಡು ಕಾವ್ಯದ ಮೂಲಕ ಅಭಿವ್ಯಕ್ತಿಸುವ ತಂತ್ರವನ್ನು ನಮ್ಮ ಹಿಂದಿನ ಕವಿಗಳು ರೂಢಿಸಿಕೊಂಡು ಬಂದಿದ್ದಾರೆ. ಜೊತೆಗೆ ಕವಿಯೊಬ್ಬನ ಮಾನಸಿಕ ತವಕದ ಹಿಂದೆ ಜನ-ಜೀವನದ ತುಡಿತವಿದೆ ಎನ್ನುವುದನ್ನು ಮರೆಯಲಾಗುವುದಿಲ್ಲ.

ಸಾಮಾಜಿಕ ಸಮಸ್ಯೆಗಳನ್ನು ಕುರಿತು ಮಾತನಾಡುವಾಗ ಕೇವಲ ಮಾನವನಿಂದ ನಿರ್ಮಿತವಾಗಿರುವ ಸಂದರ್ಭಗಳಲ್ಲಿ ಮಾನವನ ಮಾನಸಿಕ ನೆಲೆಯೂ ಒಂದು ಸಾಮಾಜಿಕ ನೆಲೆಯಾಗಿ ರೂಪಗೊಳ್ಳುತ್ತದೆ.

ಹೊಗೆಯುಟ್ಟ ಒಡಲಿಗೆ ಹೋಳಿಗೆಯ ಸವಿ
ಚಟ್ಟೆನ್ನುವ ಪಟ್ಟೆನ್ನುವ ಪಟಾಕಿಯಲ್ಲ
ಸದ್ದು ಗದ್ದಲವಿಲ್ಲ [3]

ಸಾಮಾಜಿಕ ಸತ್ಯ ಮತ್ತು ವಸ್ತುನಿಷ್ಠ ಸತ್ಯದ ಹಿನ್ನಲೆಯಲ್ಲಿ ಮೇಲಿನ ಸಾಲುಗಳು ಹೆಚ್ಚು ಅರ್ಥಗರ್ಭಿತವಾಗುತ್ತವೆ. ಹಬ್ಬ-ಹರಿದಿನಗಳು ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಸಾಮಾಜಿಕ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ನೆಲೆಯ ಸತ್ಯವಾದರೆ, ಬಡತನ ಅದರೊಳಗಿನ ಒಡಲಾಗ್ನಿಯ ವಸ್ತುನಿಷ್ಠ ಸತ್ಯವಾಗಿದೆ. ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ವರ್ಗ ಮತ್ತು ವರ್ಣ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯ ಅಸಮಾನತೆಯ ಬೆಂಕಿ ಹೊಗೆಯಾಗಿ ಒಳಗೇ ದಹಿಸುತ್ತಿರುವಾಗ ಹಬ್ಬ-ಹರಿದಿನಗಳು ಸಂಭ್ರಮ ಸಂತೋಷ ತರಲಾರವು. ಸುಂದರ ಮನಸ್ಸುಗಳು ಸುಟ್ಟು ಕರಕಲಾಗಿ ಹೆಣವಾಗಿ ಬಿದ್ದಿವೆ. ನಿಸ್ತೇಜವಾದ ಮನಸ್ಸುಗಳಿಗೆ ಬಂಡಾಯ-ದಲಿತ ಸಾಹಿತ್ಯ ಮತ್ತು ಚಳುವಳಿ ಉಸಿರಾಡಲು ಶಕ್ತಿಯಾಗಿದೆ.

ಸಾಮಾಜಿಕ ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಬದುಕುವ ಮಾನವನಿಗೆ ಅವನ ಬದುಕಿನ ಪರಿಮಿತಿಯಲ್ಲಿಯೇ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಜವಾಬ್ದಾರಿಗಳಿರುತ್ತವೆ. ಈ ಹೊಣೆಗಾರಿಕೆಯನ್ನು ಸಮರ್ಥವಾಗಿ ನಿಭಾಯಿಸಿದಾಗ ಮಾತ್ರ ಆ ವ್ಯಕ್ತಿ ಸಮಾಜದ ಆಗು-ಹೋಗುಗಳ ಬಗ್ಗೆ ಅರಿವನ್ನು ಪಡೆಯುತ್ತಾನೆ. ಈ ನಿಟ್ಟಿನಲ್ಲಿ ದಲಿತ ಬಂಡಾಯ ಕವಿಗಳು ತಮ್ಮ ಸಮಾಜವಾದದ ಚರ್ಚೆಯಲ್ಲಿ, ವಸ್ತುನಿಷ್ಠ ಪ್ರಜ್ಞೆಯನ್ನು

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

ಮೂಡಿಸಿರುವುದರಲ್ಲಿ ಸಂದೇಹವೇ ಇಲ್ಲ. ಭಾರತೀಯ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಮತ್ತು ಧಾರ್ಮಿಕ ವಲಯದಲ್ಲಿ ಬೇರೆಲ್ಲಾ ದೇಶಗಳ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ವಲಯದಿಂದ ಭಿನ್ನವಾಗಿದ್ದು, ಹಲವಾರು ಧರ್ಮಗಳ ತವರೂರಾಗಿ, ಹಲವಾರು ಭಾಷೆಗಳ ಆವಾಸ್ಥಾನವಾಗಿದೆ. ದೇವರು ಧರ್ಮ, ನಂಬಿಕೆ, ಆಚಾರ-ವಿಚಾರ, ನಿಷ್ಠೆ-ನಿಯಮಗಳು ವ್ಯಕ್ತಿಯನ್ನು ಸಮಾಜದ್ರೋಹಿ ಕೃತ್ಯ ಎಸಗದಂತೆ ತಡೆಹಿಡಿದಿವೆ. ಇದರೊಂದಿಗೆ ಕೆಲವೊಂದು ವ್ಯಕ್ತಿಗಳ ಸ್ವತಂತ್ರ ಹರಣವು ನಡೆದಿದೆ. ಇದರಿಂದಾಗಿ ಸಾಮಾಜಿಕವಾಗಿ ಮತ್ತು ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕವಾಗಿ ಕುಬ್ಜನಾಗುತ್ತಾ ಹೋಗಿದ್ದಾರೆ. ಧರ್ಮ ಮತ್ತು ಧಾರ್ಮಿಕ ಆಚರಣೆಗಳು ಶೂದ್ರಾತಿಶೂದ್ರರನ್ನು, ಅಸ್ಪೃಶ್ಯರನ್ನು ತಮ್ಮ ಹಿಡಿತದಲ್ಲಿಟ್ಟುಕೊಂಡೇ ದೂರವಿರಿಸಿರುವುದನ್ನು ಕಾಣಬಹುದು.

ವಿವಿಧ ರಂಗಿನ ಮುಖವಾಡ ಧರಿಸಿ
ಶತ-ಮತಗೊಂಡು ಶತ-ಪಥಗಳಲಿ ಕುಣಿಯುವರ
ಬಹುರೂಪಿ ಶಬ್ದಗಳು [4]

ವರ್ಣಾಶ್ರಮ ಧರ್ಮದ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ದಲಿತರನ್ನು ದಡ್ಡರನ್ನಾಗಿ ಮಾಡಿದ್ದರ ಬಗ್ಗೆ ಅರಿವಿದೆ. ವರ್ಣವ್ಯವಸ್ಥೆ ವಿಭಜಿಸಿ ನೋಡುವ ಮನೋಭಾವವನ್ನು ಬೆಳೆಸಿಕೊಂಡಿರುವ ವಿಧಾನದ ಬಗ್ಗೆ ಆಕ್ರೋಶವಿದೆ. ಧರ್ಮ ಬಡವರ ಬದುಕಿನ ಅಸಹಾಯಕತೆಯನ್ನು ವಸ್ತುವಾಗಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಶೋಷಿಸುವ ವಿಧಾನವಿದೆ.

ಜಾತಿವಾದಗಳೂ, ಪುರೋಹಿತ ಶಾಹಿಗಳು, ಅಧಿಕಾರಶಾಹಿಗಳು ಈ ದೇಶದಲ್ಲಿ ಕ್ರೂರ ವಾತಾವರಣವನ್ನು ನಿರ್ಮಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇಲ್ಲಿ ಅವರ ಸಂಸ್ಕೃತಿ ಕೊಳೆತು ನಾರುತ್ತಿದ್ದರೂ ಅದೇ ಶ್ರೇಷ್ಠವೆಂದು ವಾದಿಸುತ್ತಾರೆ. ಇಂಥ ಪರಿಸರದಲ್ಲಿ ಜನ ಸಾಮಾನ್ಯರು ತಮ್ಮ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವವನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು ಅಪಮಾನಿತ ಬದುಕಿನಲ್ಲಿ ಬದುಕುತ್ತಿದ್ದಾರೆ. ಇಂತಹ ಬದುಕನ್ನು ಅನೇಕ ಸಾಹಿತಿಗಳು ತಮ್ಮ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾರೆ.

"ಜನ್ಮದಿಂದ ಅಸಮಾನತೆಯನ್ನು ಆಧಾರವಾಗಿಟ್ಟುಕೊಂಡು ಬಂದ ಹಿಂದೂ ಪರಂಪರೆ ನಿಸರ್ಗ ವಿರೋಧಿ, ಜೀವ ವಿರೊಧಿ ಹಾಗೂ ಮಾನವ ವಿರೋಧಿ ಮನುಷ್ಯ ಮನುಷ್ಯನನ್ನು ಮುಟ್ಟಿಸಿಕೊಳ್ಳಲಾಗದಂಥ ಇಂತ ಒಂದು ಬರ್ಬರ ಧರ್ಮ ಪರಂಪರೆ ಈ ಜಗತ್ತಿನಲ್ಲಿ ಎಲ್ಲೂ ಇಲ್ಲ ಎನ್ನುವ 'ಚಂಪಾ'ರವರ ಮಾತು ತುಂಬಾ ಅರ್ಥಪೂರ್ಣ ಹಾಗೂ ಮಹತ್ವದ್ದಾಗುತ್ತದೆ". [5]

ಇಕ್ರಲಾ ವದೀರ್ಲಾ
ಈ ನನ್ನ ಮಕ್ಕಳ ಚರ್ಮ ಎಬ್ರಲಾ
ದೇವ್ರು ಒಬ್ನೆ ಅಂತಾರೆ
ಓಣಿಗೊಂದೊಂದು ತರಾ ಗುಡಿ ಕಟ್ಟವ್ರೆ
ಎಲ್ಲಾರು ದೇವ್ರು ಮಕ್ಳು ಅಂತಾರೆ

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

ಹೊಲೇರ್ನ ಕಂಡ್ರೆ ಹಾವ್ ಕಂಡಂಗಾಡ್ತಾರೆ
ಹೋಟ್ಲು, ಮನೆ, ಬಾವಿ, ಯಾವದ್ಕೂ ಸೇರ್ಸವಲ್ರೊ [6]

ದಲಿತ–ಬಂಡಾಯ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಸಿದ್ಧಲಿಂಗಯ್ಯನವರು ತಮ್ಮ 'ಹೊಲೆ ಮಾದಿಗರ ಹಾಡು' ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಮೇಲ್ವರ್ಗದವರು ದಲಿತರನ್ನು ಶೋಷಿಸಿಕೊಂಡು ಬಂದಿರುವುದನ್ನು ಕುರಿತು ಸಿಟ್ಟು, ಆಕ್ರೋಶ ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸುತ್ತಾರೆ. ದಲಿತರನ್ನು ಎಚ್ಚರಿಸುತ್ತಾರೆ. ಪುರೋಹಿತ, ವೈದಿಕಶಾಹಿಯ ಹುಳುಕುಗಳನ್ನು ಜಗತ್ತಿಗೆ ಸಾರಿ ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ. ಧರ್ಮ ಬೇಧ ನೀತಿಯನ್ನು ಕುರಿತು ಟೀಕಿಸುತ್ತಾರೆ. ತಪ್ಪೆಸಗಿದವರ ಮುಖಕ್ಕೆ ರಾಚುತ್ತಾರೆ. ಆಡು ಭಾಷೆಯನ್ನು ಬಳಸಿಕೊಂಡು ಗ್ರಾಮೀಣ ಪರಿಸರದ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ನೆಲೆಯನ್ನು ಕಟ್ಟಿಕೊಡುತ್ತಾರೆ."

"ಸಿದ್ದಲಿಂಗಯ್ಯನವರ ಇಪ್ಪತ್ತು ಕವನಗಳ ಮೊದಲ ಸಂಕಲನ ಕನ್ನಡದ ಬರವಣಿಗೆಗೆ ಅರ್ಥಪೂರ್ಣವಾದ ಹೊಸ ದಿಕ್ಕನ್ನು ತೋರಿಸಿಕೊಟ್ಟು ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಮಹತ್ವವನ್ನು ಹೊಂದಿದೆ. ತನ್ನೆಲ್ಲಾ ನೋವು ಹಾಗೂ ಚಾರಿತ್ರಿಕವಾದ ದೀರ್ಘಕಾಲದ ಸುಲಿಗೆಯ ಪೂರ್ಣ ಕಥನವನ್ನು ಥಟ್ಟನೆ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯ ಮುಖಕ್ಕೆ ಒಡ್ಡಿ ಹೇಳುವ ರೊಚ್ಚು ಮತ್ತು ಎದೆಗಾರಿಕೆಯ ಸಂಕೇತವಾಗಿ ಈ ಸಂಕಲನದ ಶೀರ್ಷಿಕೆಯೂ ಕಾಣಿಸಿಕೊಂಡಿದೆ. ಓದುವ ಕಣ್ಣು, ಕೇಳುವ ಕಿವಿ, ತಿಳಿಯುವ ಮನಸ್ಸುಗಳನ್ನು ಸಮುದಾಯದ ಮಟ್ಟದಲ್ಲಿ ದಟ್ಟವಾಗಿ ಸೆರೆ ಹಿಡಿಯಬಲ್ಲ ಇಲ್ಲಿನ ಅನೇಕ ಸಾಲುಗಳಿಗೆ ಅತ್ಯಪೂರ್ವವಾದ ಚೈತನ್ಯವಿದೆ. ನಾಡಿನಾದ್ಯಂತ ಚಿಂತನಶೀಲ ಸಾಹಿತ್ಯಭ್ಯಾಸಿಗಳೆಲ್ಲರ ಗಮನವನ್ನು ಸೆಳೆದ ಹೊಲೆ ಮಾದಿಗರ ಹಾಡು ಚಾರಿತ್ರಿಕವಾಗಿ ಕೂಡ ಕನ್ನಡ ಕಾವ್ಯ ಮಾರ್ಗದಲ್ಲಿ ಹೊಸ ಆಸೆ, ಭರವಸೆಗಳನ್ನು ಮೂಡಿಸಿದ ಮುಖ್ಯ ಕೃತಿಯಾಗಿದೆ" (ಮಾಧವ ಪೆರಾಜೆ–ಸಿದ್ದಲಿಂಗಯ್ಯ ಪುಟ–9) ಈ ಮಾತುಗಳು ಬಂಡಾಯ ದಲಿತ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಕಾವ್ಯದ ಮಹತ್ವವನ್ನು ಗುರ್ತಿಸುತ್ತವೆ.

ದೇವರುಗಳ ಪೂಜೆಯ ಗುರುವರ್ಯರ ದಾಸ್ಯದಲಿ
ಇಹಲೋಕಕು ಪರಲೋಕಕು ಸೇತುವೆಯ ಕಟ್ಟಿ
'ಪರಮಾತ್ಮನ ಪರದೆಯಲಿ ಜೀವಾತ್ಮನ ಕಬಳಿಸುವ
ಕಡು ಜಾಣರ ಕೊಂದು ತಿಂದು ಅನ್ಯಾಯವ ಮೆಟ್ಟಿ [7]

ಧಾರ್ಮಿಕ ನಂಬಿಕೆಗಳು, ಆಚರಣೆಗಳು, ಸಾಮಾನ್ಯರನ್ನು, ದೀನ–ದಲಿತರನ್ನು ವಂಚಿಸುತ್ತಿವೆ. ಬಡವರ ಮೇಲೆ, ಶ್ರೀಸಾಮಾನ್ಯನ ಮೇಲೆ, ಬಡಬಗ್ಗರ ಮೇಲೆ ಆಗುತ್ತಿರುವ ಶೋಷಣೆ, ಪ್ರಾಣ ಹಾನಿಗಳನ್ನು ಕಲಾತ್ಮಕವಾಗಿಯೇ ಚಿತ್ರಿಸುತ್ತಾ, ತನ್ನೆಲ್ಲಾ ಆಕ್ರೋಶವನ್ನು ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದ್ದಾರೆ. "ರಾಜಕೀಯ ನಿರಂಕುಶಮತಿಗಳಿಂದ ಜನ ಸಾಮಾನ್ಯರ ಬದುಕು ದುರ್ಬರವಾಗುತ್ತಿದೆ. ಇದರಿಂದ ಮನಸ್ಸು–ಮನಸ್ಸುಗಳ ಮಧ್ಯೆ ಬಿರುಕುಬಿಟ್ಟಿದೆ.

ಬಡಜನರ ಗುಡಿಸಲಿಗೆ ಬೆಂಕಿಯನು ಇಟ್ಟವರು
ರಾಜರಾದರು ದೆಹಲಿ ನಾಡಿನಲ್ಲಿ

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

ಎಳೆಯ ಮಕ್ಕಳ ಕೊರಳ ದನಿಕಿತ್ತು ನಕ್ಕವರು
ರಕ್ತವನು ಹಂಚಿದರು ಆನಂದಕೆ [8]

ಬಡವರ ಬದುಕಿನ ಕಠೋರತೆಯಲ್ಲಿ ತಮ್ಮ ಸುಖವನ್ನು ಬಯಸುವ ರಾಜಕೀಯ ಧುರೀಣರ ಬಗ್ಗೆ ಆಕ್ರೋಶವನ್ನು ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸುತ್ತಾರೆ. ಅವರು ನಡೆಸುವ ಬರ್ಬರ ಕೃತ್ಯವನ್ನು ವಿರೋಧಿಸುತ್ತಾರೆ. ಆ ರಾಜಕೀಯ ಲಾಭಿಯನ್ನೂ ಬಯಲಿಗೆಳೆಯುವ ಸಿಟ್ಟನ್ನು ಹೊರ ಹಾಕುತ್ತಾರೆ.

'ಚುನಾವಣೆಯ ಕಾಲದಲ್ಲಿ
ಹಣ ಹೆಂಡದ ಅಮಲಿನಲ್ಲಿ
ಜನತೆಯನ್ನು ಮೋಸಗೊಳಿಸಿ
ಗೆದ್ದ ಮೇಲೆ ಭಾರ ಹೊರೆಸಿ
ಆಕಾಶದಲ್ಲೇ ಹಾರಾಡುವ
ಚುನಾವಣಾ ವೀರರೇ' [9]

ಚುನಾವಣೆಯ ಮೂಲಕ ಬಡವರನ್ನು, ಸಾಮಾನ್ಯ ಜನರನ್ನು ಕುಡಿತದ ಚಟಕ್ಕೆ ತಳ್ಳುವುದು ಒಂದು ಕಡೆಯಾದರೆ, ರಾಜಕಾರಣಿಗಳು ಒಡ್ಡುವ ಆಸೆ–ಆಮಿಷಗಳಿಗೆ ಬಲಿಯಾಗುವ ಜನ ಒಂದೆಡೆ. ಸಾಮಾನ್ಯರ ದೌರ್ಬಲ್ಯಗಳನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸಿಕೊಂಡು ತಮ್ಮ ಬೇಳೆ ಬೇಯಿಸಿಕೊಳ್ಳುವ ವರ್ಗವನ್ನು ಅವರ ಸಮಾಜ ಬಾಹೀರ ಕೃತ್ಯವನ್ನು ದಾಖಲಿಸುತ್ತಾರೆ. ತಮ್ಮ ಹಿತಾಸಕ್ತಿಗಾಗಿ ಮಾಡಿದ ಸಾಲ ಮುಂದೆ ಸಾಮಾನ್ಯರ ಬದುಕಿನ ಹೊರೆಯಾಗುವ ಕಠೋರ ಸತ್ಯವನ್ನು ಹೊರ ಹಾಕುತ್ತಾರೆ.

ಉಪಸಂಹಾರ

ಒಂದು ಕಡೆ ಆತ್ಮಸಾಕ್ಷಿ, ಮತ್ತೊಂದು ಕಡೆ ಬದುಕು, ಇವರೆಡರ ಆಯ್ಕೆಯಲ್ಲಿ ಗೊಂದಲಮಯ ಸನ್ನಿವೇಶವನ್ನು ಎದುರಿಸಬೇಕಾಗಿರುವುದು ದೀನ–ದಲಿತರ ದುರಂತ. ಸಾಮಾಜಿಕ, ಆರ್ಥಿಕ, ಧಾರ್ಮಿಕ ಹಾಗೂ ರಾಜಕೀಯ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯ ವಿರುದ್ಧ ಹೋರಾಡಲು ಶಕ್ತಿಯೂ ಸಾಲದೇ, ಶೋಷಣೆಯನ್ನು ಸಹಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಆಗದ ಸಂದಿಗ್ಧ ಪರಿಸ್ಥಿಯಲ್ಲಿ ಶೋಷಿತ ವರ್ಗ ಸಾಗುತ್ತಿದೆ. ಬಂಡಾಯ ಕಾವ್ಯ ದೇವರನ್ನು ತಿರಸ್ಕರಿಸುವ ಧಾರ್ಮಿಕ ಹಿನ್ನೆಲೆಯಲ್ಲಿ ಶೋಷಣೆಗೊಳಗಾದವರನ್ನು ಎಚ್ಚರಿಸುವ, ಶೋಷಕರನ್ನು ನಿಯಂತ್ರಿಸುವ, ತಮ್ಮ ಮೇಲಿರುವ ಜವಾಬ್ದಾರಿಯನ್ನು ಅರಿತು ಜಾಗೃತಿ ಮೂಡಿಸುವ, ಸಂಘಟನೆಗಳ ಮುಖಾಂತರ ಶೋಷಿತರಿಗೆ ಪ್ರಜ್ಞೆ ಮೂಡಿಸುವ ಕ್ರಿಯೆ ನಡೆದಿದೆ. ಆದರೂ ಕಾವ್ಯವೊಂದರಿಂದಲೇ ಪರಿವರ್ತನೆ ಸಾಧ್ಯವಿಲ್ಲ ಎನ್ನುವುದರ ಅರಿವು ಇರಬೇಕು. ಮನುಷ್ಯ ಸಹಜ ಬಯಕೆಗಳಾದ ಹಸಿವು, ನೀರಡಿಕೆ, ಲೈಂಗಿಕ ಪ್ರವೃತ್ತಿ ಪ್ರತಿಯೊಬ್ಬರನ್ನು ಕಾಡಿವೆ. ಎಲ್ಲರೂ ಮನುಷ್ಯರೇ ಎನ್ನುವ ಅರಿವು ಮೂಡಿದರೆ ವಿಶಾಲ ಮನಸ್ಥಿತಿ ಉಂಟಾಗುತ್ತದೆ. ಒಟ್ಟಾರೆ ಬಂಡಾಯ ದಲಿತ ಸಾಹಿತ್ಯ ಬಡವರ ಬದುಕಿಗೆ ಮೂಕ ವೇದನೆಗೆ ಸಂವೇದನೆಯಾಗಿ ಮೂಡಿ ಬಂದಿದೆ.

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE.

ಕೊನೆಟಿಪ್ಪಣಿ

1. ಬರಗೂರು ರಾಮಚಂದ್ರಪ್ಪ. (ಸಂ). (1990). ಬಂಡಾಯ ಕಾವ್ಯ. ಕನ್ನಡ ಮತ್ತು ಸಂಸ್ಕೃತಿ ನಿರ್ದೇಶನಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು. ಪು.ಸಂ.1.
2. ಮೇಲಿನದೇ., ಪು.ಸಂ.38.
3. ಮೇಲಿನದೇ., ಪು.ಸಂ.41.
4. ಮೇಲಿನದೇ., ಪು.ಸಂ.41.
5. ಬಸವರಾಜ ಸಬರದ. ಬಂ.ಸಾ.ತಾ.ನೆಲೆಗಳು. ಪು.ಸಂ.42.
6. ಸಿದ್ದಲಿಂಗಯ್ಯ. (1985). ಹೊಲೆ ಮಾದಿಗರ ಹಾಡು. ಮೈತ್ರಿ ಪ್ರಕಾಶನ, ಬೆಂಗಳೂರು. ಪು.ಸಂ.10.
7. ಮೇಲಿನದೇ., ಪು.ಸಂ.13.
8. ಬರಗೂರು ರಾಮಚಂದ್ರಪ್ಪ. (ಸಂ). (1990). ಪೂರ್ವೋಕ್ತ. ಪು.ಸಂ.369.
9. ಮೂರ್ತಿಶ್ವರಯ್ಯ ಬೆ.ಕಾ. (ಸಂ). ಬಂಡಾಯದ ಬಿಸಿಯುಸಿರು. ಪಂಚಮ ಪ್ರಕಾಶನ, ಶಿರಾ.

ಪರಾಮರ್ಶನ ಗ್ರಂಥಗಳು

- ಸಿದ್ದಲಿಂಗಯ್ಯ. (1985). ಹೊಲೆ ಮಾದಿಗರ ಹಾಡು. ಮೈತ್ರಿ ಪ್ರಕಾಶನ, ಬೆಂಗಳೂರು.
- ಚಂದ್ರಶೇಖರ ಪಾಟೀಲ. (1993). ಪ್ರಗತಿಶೀಲ ನವ್ಯ ದಲಿತ ಬಂಡಾಯ. ಸಂಕ್ರಮಣ ಪ್ರಕಾಶನ, ಧಾರವಾಡ.
- ಸಿದ್ದಯ್ಯ ಕೆ.ಬಿ. (ಸಂ). (1996). ದಲಿತ ಕಾವ್ಯ. ಕನ್ನಡ ಮತ್ತು ಸಂಸ್ಕೃತಿ ನಿರ್ದೇಶನಾಲಯ, ಬೆಂಗಳೂರು.

Name of the Teacher: Dr. B. P. Kumbar

Cover Page

ISSN: 2582-2284

ಸಂಪುಟ 2 ಸಂಚಿಕೆ 1 ಜುಲೈ – ಆಗಸ್ಟ್ 2020

ಪ್ರತಿಬಿಂಬ

MULTIDISCIPLINARY KANNADA RESEARCH JOURNAL OF IIMRD

Peer Reviewed and Referred Kannada Journal

IIMRD JOURNALS

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

ಭಾರತೀಯ ಬಹುಶಿಸ್ತೀಯ ಸಂಶೋಧನಾ ಮತ್ತು ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಸಂಸ್ಥೆ
ಮೈಸೂರು

Scanned with OKEN Scanner

ಸಂಪಾದಕ ಮಂಡಳಿ

ಸಂಪಾದಕರು

ಪ್ರೊ.ಎಂ.ಆರ್.ಗಂಗಾಧರ್ (ಮೈಸೂರು)

ಸಹ ಸಂಪಾದಕರು

ಡಾ. ಎಸ್.ಸಿ. ಪೈ ಪ್ರಭಾಕರ್ (ಧಾರವಾಡ)
ಡಾ.ಬಿ.ಆರ್.ಮಂಜುನಾಥ ಬೆಂಡರವಾಡಿ (ಮೈಸೂರು)

ಸಂಪಾದಕ ಮಂಡಳಿ ಸದಸ್ಯರು

ಪ್ರೊ. ಮನೋಹರ್ ಯಾದವ್ (ಬೆಂಗಳೂರು)
ಪ್ರೊ. ಕೆ.ಎಂ. ಮೇತ್ರಿ (ಹಂಪಿ)
ಪ್ರೊ. ಕೃಷ್ಣರಾಜ್ (ಬೆಂಗಳೂರು)
ಪ್ರೊ. ಟಿ.ಟಿ.ಬಸವನಗೌಡ (ಮೈಸೂರು)
ಪ್ರೊ. ಕೆ. ಸದಾಶಿವ (ಮೈಸೂರು)
ಪ್ರೊ. ಎ. ಎಸ್ ಪ್ರಭಾಕರ್ (ಹಂಪಿ)
ಪ್ರೊ. ನಿರ್ಮಲ್‌ರಾಜ್ (ಮಂಗಳೂರು)
ಪ್ರೊ. ಎಂ.ಕೋಮಲ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಬಿ.ಕೆ.ರವೀಂದ್ರನಾಥ್ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಡಿ.ಎಸ್. ರಾಜು (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಎಚ್.ಎಂ. ಚಂದ್ರಶೇಖರ್ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಎಂ.ರಂಗಸ್ವಾಮಿ (ಚೆನ್ನೈ)
ಶ್ರೀಯುತ ಪ್ರವೀಣ್‌ಕುಮಾರ್ ಮೆಲ್ಲಹಳ್ಳಿ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ರಾಜೇಶ್ ಗುರುರಾಜ್ ಕುಂದರಗಿ (ಪುದುಚೇರಿ)
ಡಾ. ರಮ್ಯ ಭಾಸ್ಕರ್ (ಕೋಯಂಬತೋರ್)
ಪ್ರೊ. ಜಿ. ವೆಂಕಟೇಶ್ ಕುಮಾರ್(ಮೈಸೂರು)
ಪ್ರೊ. ಸಿ. ಬಸವರಾಜು (ಮೈಸೂರು)
ಪ್ರೊ. ಬಿ. ರಮೇಶ್ (ತುಮಕೂರು)
ಪ್ರೊ. ಗುರುಲಿಂಗಯ್ಯ (ಶಿವಮೊಗ್ಗ)
ಪ್ರೊ. ಜಕ್ಕಪಾರ್ಥಸಾರಥಿ (ಉದಗಮಂಡಲ)
ಪ್ರೊ. ಸಿ.ಕೆ.ಪುಟ್ಟಸ್ವಾಮಿ (ಮೈಸೂರು)
ಪ್ರೊ. ಸಮತಾ ಬಿ.ದೇಶಮಾನೆ (ಬೆಂಗಳೂರು)
ಪ್ರೊ. ಬಿ.ರಂಗಯ್ಯ (ಪುದುಚೇರಿ)
ಡಾ. ಆರ್.ತಿಮ್ಮರಾಯಪ್ಪ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಎಲ್. ಶ್ರೀನಿವಾಸ್ (ಹಂಪಿ)
ಡಾ. ಎಚ್.ಎಸ್. ಕುಮಾರ (ಮೈಸೂರು)
ಶ್ರೀಯುತ ಮಧುಚಂದ್ರ ಬಿ.ಆರ್. (ಕಾರ್ಕಳ)
ಡಾ. ಎಸ್.ಬಿ.ಸುಗಂಧಿ (ಧಾರವಾಡ)
ಡಾ. ವಿಜಯಲಕ್ಷ್ಮಿ ಮ.ನಾ. ಪುರ(ಮೈಸೂರು)
ಶ್ರೀಮತಿ ಸಭೀತಾ (ಮಂಗಳೂರು)

ಸಹಾಯಕ ಸಂಪಾದಕರು

ಡಾ. ಮಧು ಗುಂಡ್ಲುಪೇಟೆ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ರಾಮಕೃಷ್ಣ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಎಸ್. ಮಹದೇವ್‌ಕುಮಾರ್ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಎಚ್.ಎನ್. ಕಾಳಸ್ವಾಮಿ (ಚಾಮರಾಜನಗರ)
ಡಾ. ಎಸ್.ಕೆ.ಕುಮಾರ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಆರ್.ಚಂದ್ರಶೇಖರ್ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಎಂ.ಎಲ್.ದೊರೆರಾಜ್ (ಮೈಸೂರು)
ಡಾ. ಕೆ. ಶೈಲಜ (ಚಾಮರಾಜನಗರ)
ಡಾ. ವಿ. ಶ್ರೀನಿವಾಸ್ (ಮೈಸೂರು)
ಶ್ರೀಯುತ ಎ.ಎಂ.ಗೌತಮ್ (ಮೈಸೂರು)

ತಾಂತ್ರಿಕ ಸಲಹೆಗಾರರು

ಶ್ರೀಯುತ ಎಂ.ಲೋಕೇಶ್ (ಮೈಸೂರು)
ಶ್ರೀಯುತ ಎಸ್. ಲೋಕೇಶ್ (ಮಂಡ್ಯ)
ಶ್ರೀಯುತ ಎ.ಎನ್. ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿ (ಚಾ.ನಗರ)

© ಹಕ್ಕುಗಳು ಪ್ರಕಾಶಕರದು

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE

Scanned with CamScanner

Content Page

Sl. No.	ಅನುಕ್ರಮಣಿಕೆ	ಪು.ಸಂ.
1.	ಮೈಸೂರು ಒಡೆಯರ ಕಾಲದ ಶಾಸನಗಳು: ಒಂದು ಸಮೀಕ್ಷೆ – ದಿಲೀಪ್. ಎಸ್. – ಪ್ರೊ. ಮಹಾದೇವಿ	1–10
2.	ಸ್ವಾತಂತ್ರ್ಯ ಹೋರಾಟದಲ್ಲಿ ಸುಭಾಷ್‌ಚಂದ್ರ ಬೋಸ್‌ರವರ ಪಾತ್ರ – ಶಿವಶರಣಪ್ಪ	11–16
3.	ಬೆಳಗಾವಿ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಪಾತ್ರೋಟಿ ಸಮುದಾಯ: ಒಂದು ಚಿಂತನೆ – ಶಿವಾನಂದ ಹೆಳವರ – ಡಾ. ಎಚ್.ಇ. ಬಸವರಾಜಪ್ಪ	17–21
4.	ಗ್ರಾಮ ಪಂಚಾಯತಿಗಳಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳ ವಿಶೇಷ ಗ್ರಾಮಸಭೆಯ ಪರಿಣಾಮಕಾರಿ ಅನುಷ್ಠಾನ: ಒಂದು ವಿಶ್ಲೇಷಣೆ – ಡಾ. ಹೇಮಾಂಬರ ಎಚ್.ಎಸ್	22–28
5.	ಕರ್ನಾಟಕ ದಲಿತ ಸಂಘರ್ಷ ಸಮಿತಿ ಸಂವಿಧಾನ ಮತ್ತು ರೂಪುರೇಷೆಗಳು – ಡಾ. ಕೆ. ಗುರುಸ್ವಾಮಿ	29–46
6.	ಚಾಮರಾಜನಗರ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಶಾಸನಗಳಲ್ಲಿ ಕೃಷಿ, ವ್ಯಾಪಾರ ಮತ್ತು ಆರ್ಥಿಕ ಅಂಶಗಳು: ಒಂದು ಅಧ್ಯಯನ – ಸುರೇಶ ಎಸ್	47–52
7.	ಶ್ರೀ ರಾಮಾಯಣದರ್ಶನಂನಲ್ಲಿ "ದಶಾನನ ಸ್ವಪ್ನಸಿದ್ಧಿ": ಒಂದು ಮನೋವೈಜ್ಞಾನಿಕ ವಿಶ್ಲೇಷಣೆ – ಡಾ.ಸೋಮಶೇಖರ	53–62
8.	ಶರಣ ಪರಂಪರೆಯ ಚಿಕ್ಕದಣ್ಣನಾಯಕ ಚೆನ್ನಬಸವಣ್ಣನ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವ – ಡಾ ಎಸ್. ಬಿ. ರಾಠೋಡ	63–70
9.	ಮ್ಯಾಸಬೇಡ ಬುಡಕಟ್ಟು ಸಮುದಾಯದಲ್ಲಿ ಹೈನು ಸಂಪ್ರದಾಯ: ಒಂದು ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಅಧ್ಯಯನ – ಡಾ ನಾಗೇಶ ಎಂ.	71–77
10.	ಸೋಲಿಗ ಬುಡಕಟ್ಟು ಸಮುದಾಯದ ಸಾಮಾಜಿಕ ಜೀವನ – ಡಾ. ಶ್ರೀನಿವಾಸ್. ವಿ.	78–88
11.	ಚಿತ್ರದುರ್ಗ ಜಿಲ್ಲೆಯ ಮ್ಯಾಸಬೇಡರ ಸಮುದಾಯದ ತತ್ವಪದಕಾರರು: ಒಂದು ಅಧ್ಯಯನ – ಪ್ರಹ್ಲಾದ ಡಿ.ಎಂ. – ವೀಣಾ ಕೆ.ಆರ್.	89–97
12.	ಜ್ಯೋತಿರಾವ್ ಫುಲೆರವರ ಜೀವನ ಹಾಗೂ ಸಾಮಾಜಿಕ ಆಂದೋಲನಗಳು – ರಾಜಶೇಖರ ಮಾವಿನಮರ	98–106
13.	ನಾಗ ಸಾಧು ಮತ್ತು ಅಘೋರಿಗಳ ಬದುಕು – ಪ್ರವೀಣ ಕುಮಾರ ಬಿ.	107–114

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

CS Scanned with CamScanner

Content Page

14.	ಸಂಕಷ್ಟದಲ್ಲಿರುವ ಚನ್ನಪಟ್ಟಣದ ಬೊಂಬೆ ಉದ್ಯಮ ಮತ್ತು ಪರಿಹಾರ ಕ್ರಮಗಳು: ಒಂದು ಅಧ್ಯಯನ – **ನಂದಿನಿ. ಎಸ್.**	115–127
15.	ಪರಿಶಿಷ್ಟ ಜಾತಿ ಸಮುದಾಯದ ಸಬಲೀಕರಣದಲ್ಲಿ ಡಾ.ಬಿ.ಆರ್.ಅಂಬೇಡ್ಕರ್ ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ನಿಗಮ ನಿಯಮಿತದ ಪಾತ್ರ – **ಕುಮಾರಸ್ವಾಮಿ. ಸಿ.** – **ಪ್ರೊ. ಜಿ. ಸೋಮಶೇಖರ್**	128–137
16.	ಪ್ರಬಂಧ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳು: ಒಂದು ಅವಲೋಕನ – **ಡಾ. ಬಸವರಾಜ ಕುಂಬಾರ**	138–148
17.	ಸುಡುಗಾಡು ಸಿದ್ಧರ ಸಾಂಪ್ರದಾಯಿಕ ನ್ಯಾಯ ಪದ್ಧತಿ – **ಡಾ. ಎಂ.ಓ.ಉಮೇಶ**	149–154
18.	ದಲಿತ–ಬಂಡಾಯ ಕಾವ್ಯಗಳಲ್ಲಿ ಸಮಾಜವಾದದ ಚರ್ಚೆ – **ಡಾ. ಎಂ. ನಂಜುಂಡಸ್ವಾಮಿ**	155–161
19.	ಥಾಮಸ್ ಹಾಬ್ಸ್ ಮತ್ತು ಜಾನ್‌ಲಾಕ್‌ರವರ ರಾಜಕೀಯ ಚಿಂತನೆಗಳು – **ಬಸವರಾಜು. ಆರ್.**	162–168
20.	ನಿರ್ಲಕ್ಷಿತ ಉಪ್ಪಾರ ಸಮುದಾಯ: ಒಂದು ಅವಲೋಕನ – **ಸಂತೋಷ ನಡಿಹಾಳ**	169–174
21.	ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಭಕ್ತಿ ಪರಂಪರೆ ಮತ್ತು ದಾಸ ಸಾಹಿತ್ಯ: ಒಂದು ಅವಲೋಕನ – **ಪ್ರಭಾಕರ ಪಿ.**	175–180

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

Scanned with CamScanner

First Page of Publication

ಪ್ರತಿಬಿಂಬ

PRATIBIMBA –Multidisciplinary Kannada Research Journal of IIMRD

ISSN: 2582-2284

Vol-2, Issue 1, JUL-AUG 2020

IIMRD JOURNALS

www.iimrd.com

©IIMRD, Mysuru

ಪ್ರಬಂಧ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳು: ಒಂದು ಅವಲೋಕನ

ಡಾ. ಬಸವರಾಜ ಕುಂಬಾರ[1]

ಪೀಠಿಕೆ

ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಪರಂಪರೆಯಲ್ಲಿ ಪ್ರಬಂಧ ಸಾಹಿತ್ಯವು ನವೋದಯದ ಮತ್ತೊಂದು ಆಕರ್ಷಣೀಯ ಸಾಹಿತ್ಯವಾಗಿದ್ದು, ಹೊಸಗನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದ ವಿಶಿಷ್ಟ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿದೆ. ಕಥೆ, ಕಾದಂಬರಿ, ಚುಟುಕು, ಪ್ರವಾಸ ಸಾಹಿತ್ಯ, ಆತ್ಮಚರಿತ್ರೆ, ಅಂಕಣ, ಪತ್ರ ಸಾಹಿತ್ಯ ಮತ್ತು ಜೀವನ ಚರಿತ್ರೆಯಂತೆ ಪ್ರಬಂಧ ಸಾಹಿತ್ಯವು ಪ್ರಮುಖವಾದುದಾಗಿದೆ. ಗದ್ಯ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಆಕಾರಗೊಂಡ ಮತ್ತೊಂದು ಹೊಸ ಟಿಸಿಲು. ಇದಾಗಿದ್ದು ಕುವೆಂಪು, ಬೇಂದ್ರೆ, ಗೂರೂರು ರಾಮಸ್ವಾಮಿ ಅಯ್ಯಂಗಾರ, ನಾ ಕಸ್ತೂರಿ, ಶ್ರೀರಂಗ, ಎ.ಎನ್. ಮೂರ್ತಿರಾಯ, ಶಿವರಾಮ ಕಾರಂತ, ಹಾ.ಮಾ.ನಾಯಕ, ರಾ.ಯ.ಧಾರವಾಡಕರ, ತಿ.ನಂ.ಶ್ರೀ, ಮಳಲಿ ವಸಂತಕುಮಾರ, ಎಂ.ಎಸ್.ಶ್ರೀನಿವಾಸರಾಯ, ಪಂಜೆ ಮಂಗೇಶರಾಯ, ಮಧುರ ಚೆನ್ನ, ಎಂ.ಜಿ. ವೆಂಕಟೇಶಯ್ಯ, ರಂ. ಶ್ರೀ. ಮುಗಳಿ, ವಿನಾಯಕ ಗೋಕಾಕ, ವೀ. ಸೀತಾರಾಮಯ್ಯ, ರಾ.ಕು, ಅ.ರಾ. ಮಿತ್ರಾ, ದ.ಬಾ. ಕುಲಕರ್ಣಿ, ಎಂ.ಎಸ್. ಸುಂಕಾಪೂರ, ಸಿಂಪಿ ಲಿಂಗಣ್ಣ, ರಾಶಿ, ಎಂ. ರಾಮರಾವ್, ಎನ್.ಎಸ್. ಗದಗಕರ, ಪ್ರಭು ಶಂಕರ, ದೇ.ಜೆ.ಗೌ., ನಾಡಕರ್ಣಿ ಪಂಕಜಮ್ಮ, ಟಿ. ವಿನೋದಮ್ಮ, ವಿರೇಂದ್ರ ಸಿಂಪಿ, ಪಾಪು, ಪಾಡಪ್ಪಿ, ಭುವನೇಶ್ವರಿ ಹೆಗಡೆ, ಪ್ರಲ್ಹಾದರಾವ್, ವಿಚ್ಚಿಸ್ಕೆ, ಜೋತ್ಸ್ನಾ ಕಾಮತ್, ವಿ.ವಿ.ಜೋಶಿ, ಸಿ.ಪಿ.ಕೆ, ಸದಾಶಿವ ಒಡೆಯರ, ಎನ್ಕೆ, ಹಿರೆಮಲ್ಲೂರು ಈಶ್ವರನ್, ಬಿ.ಜಿ.ಎಲ್.ಸ್ವಾಮಿ, ಬ.ಗಿ. ಯಲ್ಲಟ್ಟಿ, ಮಲ್ಲಿಕಾರ್ಜುನ ಹುಲಗಬಾಳ, ಕಾಡದೇವರ, ಸಿದ್ಧರಾಜ ಪೂಜಾರ, ಬಿ.ಎ.ಸನದಿ, ದಾಶರಥಿ ಹೀಗೆ ನವೋದಯದ ಅನೇಕ ಸಾಹಿತಿಗಳು ಪ್ರಬಂಧ ಸಾಹಿತ್ಯಕ್ಕೆ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡಿದ್ದಾರೆ.

ಪ್ರಬಂಧ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಸರಳತೆಯಿದೆ, ಮೃದು ಪರಾಮರ್ಶನವಿದೆ. ಅಭಿಮುಖೀಕರಣ ಶಕ್ತಿಯಿದೆ. ಮನಸ್ಸಿನ ಸ್ವಚ್ಛಂದ ಲಹರಿಯ ಪ್ರತೀಕತೆಯಿದೆ. ವಿಚಿತ್ರ ನಿರೂಪಣಾ ಶಕ್ತಿಯಿದೆ, ಭಾವನಾತ್ಮಕತೆಯಿದೆ. ನವನಾಗರಿಕತೆಯ ಪ್ರವಾಹವಿದೆ. ಮಂದಸ್ಮೃತ ಭಾವನೆಗಳಿರುತ್ತವೆ. ಆಂತರಿಕ ಜೀವನದ ಪ್ರತಿಬಿಂಬವಿದೆ. ಆಪ್ತನಿಷ್ಠತೆಯಿದೆ. ಅನೌಪಚಾರಿ ಕತೆಯಿದೆ. ವಿವೇಚನಾ ಮನೋಲಹರಿಯಿದೆ. ಮನೋಹರತೆಯಿದೆ. ಅರ್ಥಪೂರ್ಣತೆ ನಿಯಮ ಪಾಲನೆಯಿದೆ.

---

[1] *ಕನ್ನಡ ಉಪನ್ಯಾಸಕರು, ಬಸವೇಶ್ವರ ವಾಣಿಜ್ಯ ಮಹಾವಿದ್ಯಾಲಯ, ಬಾಗಲಕೋಟೆ–587101.*

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತಿಕರಣವಿದೆ. ಸ್ವಚ್ಛಂದ ಬಂಧವಿದೆ. ವ್ಯಕ್ತಿನಿಷ್ಠ ಆತ್ಮೀಯತೆಯಿದೆ. ಸರಸ ಸಾಹಿತ್ಯದ ತಿಳಿಹಾಸವು ಇಲ್ಲಿದೆ. ಸಾಮಾನ್ಯವಾಗಿ ಗದ್ಯ ಪ್ರಕಾರದ ಭಾವನಾತ್ಮಕತೆಯು ಇದೆ. ವಾದ ವೈಖರಿಯ ಕಲ್ಪನೆಯ ಚಮತ್ಕಾರವಿದೆ. ಜೀವನ ಪ್ರೀತಿಯೊಂದಿಗೆ ಜೀವನದ ವಿಮರ್ಶೆ ಪ್ರಬಂಧ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿದೆ. ವಿಷಯ ವ್ಯಾಪ್ತಿಯ ಜೊತೆಗೆ ಪ್ರಾರಂಭ ಮತ್ತು ಮುಕ್ತಾಯವು ಇರುತ್ತದೆ. ಪ್ರಬಂಧ ಸಾಹಿತ್ಯವು ಮನಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಬದಲಿಸುವ ನಡತೆಯನ್ನು ತಿದ್ದುವ, ಹೃದಯವನ್ನರಳಿಸುವ, ಬುದ್ಧಿಯನ್ನು ಪ್ರಚೋದಿಸುವ, ಭಾವನೆಗಳನ್ನು ಹರಿತಗೊಳಿಸುವ, ಅನುಭವದ ಆಳವನ್ನು ಹೆಕ್ಕಿ ತೆಗೆಯುವ ವಿಶಿಷ್ಟ ಸಾಹಿತ್ಯ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿದೆ.

ಮೂಲ ಪ್ರಬಂಧದ ಗುಣ ಲಕ್ಷಣವನ್ನು ಗಮನಿಸಿದಂತೆ ಭಾವನಾತ್ಮಕತೆಯ ಪ್ರಮುಖ ಲಕ್ಷಣಗಳಲ್ಲೊಂದು. ಪ್ರಪಂಚದ ಯಾವುದೆ ವಿಷಯ ಪ್ರಬಂಧದ ವಸ್ತುವಾಗಬಲ್ಲುದು. ಕಥನಾತ್ಮಕವಾಗಿರಬಹುದು, ವಿವರಣಾತ್ಮಕವಾಗಿರಬಹುದು ಅಥವಾ ಆತ್ಮಕಥನ ರೂಪವಾಗಿರಬಹುದು. ಅದು ವಿಮರ್ಶಾತ್ಮಕವೂ ಆಗಿರಬಹುದು. ಕಲ್ಪನೆಯೊಂದಿಗೆ ಭಾವನಾತ್ಮಕತೆಯು ಹೊಂದಿರುವುದು. ಗಾತ್ರದಲ್ಲಿ ಚಿಕ್ಕದಾಗಿದ್ದು ಅಲ್ಲಿ ಭಾವನೆಯ ನರ್ತನವಿವುದು. ರಸಿಕ ನಿರೂಪಣೆಯಲ್ಲಿ ಸರಳ ರಸವತ್ತಾದ ಶೈಲಿಯಲ್ಲಿಯೂ ಭಾವನಾತ್ಮಕತೆಯು ಅಲ್ಲಿ ಕಾಣುವುದು. ನೇರವಾದ ನೀತಿ ಭೋದನೆಯ ಜೊತೆ ಅನುಭವದ ಭಾವ ಲೇಪನವು ಅಲ್ಲಿರುವುದು. ಮಾನವ ಸಮಾಜದ ಓರೆ ಕೋರೆಯಲ್ಲಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಲೇಪನ ಕಾಣುವುದು. ಭಾಷೆಯು ಸಂಪೂರ್ಣ ದೇಶಿಯತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿದ್ದು ಭಾವನೆಯೇ ಪ್ರಧಾನವಾದದ್ದು. ಉದ್ಧರಣಾತ್ಮಕ ಉದಾಹರಣೆಯನ್ನು ಬರೆಯುವಲ್ಲಿ ಭಾವ ಸಿಂಚನತೆ ಕಾಣುವುದು. ಲಲಿತ ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಬಹುತೇಕ ಜೀವನಾನುಭವ ಇರುವುದರಿಂದ ಲಾಲಿತ್ಯದ ಭಾವನಾತ್ಮಕತೆಯಲ್ಲಿ ಕಾಣುವುದು. ಸ್ಥಳೀಯತೆ ಪ್ರಬಂಧದಲ್ಲಿ ಸ್ವಕೀಯತೆ ಇರುವದರಿಂದ ಜನರ ನಾಡಿ ಮಿಡಿತದ ಭಾವನಾತ್ಮಕತೆಯನ್ನು ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಣುತ್ತೇವೆ.

ಭಾವನೆಯನ್ನು ಕುರಿತು ಗಮನಿಸುವುದಾದರೆ ಮನಸ್ಸಿನ ಒಲವು, ಓಟ, ಆಕಾಂಕ್ಷೆಗಳನ್ನು ನೇಯುವ ಒಂದು ಕ್ರಮವೇ ಆಗಿದೆ. ಲೋಕಾಭಿರಾಮವಾಗಿ ಕುಳಿತು ವಿಷಯವನ್ನು ಹಲವು ಮಗ್ಗಲುಗಳಿಂದ ಕಂಡು ಅದನ್ನು ದಶದಿಕ್ಕಿಗೆ ವಿಸ್ತರಿಸುತ್ತಾ, ನೇರವಾಗಿ ಮತ್ತೊಮ್ಮೆ ವ್ಯಂಗ್ಯವಾಗಿ, ಮಗದೊಮ್ಮೆ ಕುಚೇಷ್ಟೆಯಿಂದ ವಿಷಯವನ್ನು ವಿಶ್ಲೇಷಿಸುವ ರೀತಿಯಲ್ಲಿ ವ್ಯಾಖ್ಯಾನಿಸುತ್ತಾ ಹೋಗುವರು. ಲೋಕದ ಅನುಭವವೇ ಇಲ್ಲಿ ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಕಾಣುವುದು. ವಿವಿಧ ವಿಭಾಗಗಳ ಅಧ್ಯಯನದ ಭಾವನೆಗಳನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ಹೆಣೆಯುವರು. ರಸಿಕ ಮನಸ್ಸಿನ ಓಟಕ್ಕೆ ಅನುಗುಣವಾಗಿ ತಿರುವುಗಳನ್ನು ನೀಡುತ್ತಾ, ಚಮತ್ಕಾರಗಳನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸುತ್ತಾ ಭಾವನೆಯ ಬೆಳೆಯನ್ನು ಬೆಳೆಯುವ ಮನೋಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸುತ್ತಾ ಹೋಗುವರು. ಪ್ರಬಂಧಕಾರರು ಬಹುತೇಕ ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಕಲ್ಪನಾವಿಲಾಸದೊಂದಿಗೆ ಭಾವನಾವಿಲಾಸವನ್ನು, ಮನೋವಿಲಾಸಗಳನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸುತ್ತಾ ಹೋಗುವರು.

ESHWAR COMME
BAGALK

BASAVESHWAR COMMERCE BAGALKOTE

ಈ ರೀತಿಯಾಗಿ ಬೆಳೆದು ಪ್ರಬಂಧ ಸಾಹಿತ್ಯವನ್ನು ತಲೆಮಾರುಗಳ ಹಿನ್ನಲೆಯಲ್ಲಿ ಮೂರು ಘಟ್ಟಗಳಾಗಿ ವಿಂಗಡಿಸಲಾಗಿದೆ.

ಮೊದಲನೇ ಘಟ್ಟ

ಪ್ರಬಂಧ ಸಾಹಿತ್ಯದ ಪಿತಾಮಹರೆನಿಸಿಕೊಂಡ ಎ.ಎನ್. ಮೂರ್ತಿರಾಯರ ಪ್ರಬಂಧಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸಿದರೆ ಸುಸಂಸ್ಕೃತ ವ್ಯಕ್ತಿಯೊಂದಿಗೆ ವ್ಯವಹಾರ ನಡೆಸಿದಂತೆ ಮಾನವತಾವಾದಿಯ ಒಡನಾಟವನ್ನು ಬೆಳೆಸಿಕೊಂಡಂತೆ ಅನುಭವವಾಗುವುದು. 'ಅಲೆಯುವ ಮನಗಳು', 'ಹಗಲು ಗನಸುಗಳು', 'ಮಿನುಗು ಮಿಂಚು', ಈ ಮೂರ ಪ್ರಬಂಧ ಸಂಕಲನಗಳಲ್ಲಿ ಬದುಕಿನ ಭಾವನೆಯ ವಿವಿಧ ಮಜಲುಗಳ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳಿವೆ. ಕಲಾತ್ಮಕ ಆತ್ಮ ವೃತ್ತಾಂತಗಳಿವೆ. ಅನುಭವದ ಸೂಕ್ಷ್ಮತೆಗಳಿವೆ. ಆಲೋಚನಾ ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿಲ್ಲಿದೆ, ವಿಶ್ಲೇಷಣಾತ್ಮಕತೆಯಿದೆ. ಈ ಪ್ರಬಂಧಗಳು ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಅಚ್ಚಳಿಯದ ಸ್ಥಾನ ಪಡೆದದ್ದು ಭಾವಪರವಾದ ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾದ ವಿಚಾರ ಸರಣಿಯಿದೆ ಎಂಬುದರಲ್ಲಿ ಎರಡು ಮಾತಿಲ್ಲ. ವಿ.ಸೀತಾರಾಮಯ್ಯನವರ ಪ್ರಬಂಧಗಳು ಪರಿಪೂರ್ಣ ರಸಿಕತೆಯಿಂದ ಕೂಡಿವೆ. 'ಬೆಳದಿಂಗಳು', 'ಸೀಕರಣೆ' ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಗಮನಾರ್ಹ ಸೌಂದರ್ಯೋಪಾಸನೆ ಇದೆ. ಆ ಸೌಂದರ್ಯೋಪಾಸನೆಯಲ್ಲಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಲಹರಿಯ ಕಲಾಭಿಜ್ಞತೆ, ರಸಿಕತನ ಹಾಗೂ ಸೊಗಸುಗಾರಿಕೆಯ ಕಾಣುವುದು. ವ್ಯಾಪಕ ಓದು ಇಲ್ಲಿ ಕಾಣುವುದು. ಜೀವನಾನುಭವದಲ್ಲಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕತೆ ಇಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಹೇಗೆ ಎಂಬ ಅಂಶವನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದು. 'ಮೈಸೂರಿನ ರುಮಾಲಿ' ಪ್ರಬಂಧದಲ್ಲಿ ವಿಸ್ತಾರವಾದ ಜೀವನಪರ ಚಿಂತನೆಗಳು ಇಲ್ಲಿ ಕಾಣುತ್ತವೆ. ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಮನಸ್ಸಿನ ಓಟಗಳು, ಆಸೆ ಆಕಾಂಕ್ಷೆಗಳು ವ್ಯಕ್ತವಾಗುವವು.

ಪು.ತಿ. ನರಸಿಂಹಾಚಾರ್ಯರು ಹಲವಾರು ಪ್ರಬಂಧ ಸಂಕಲನಗಳನ್ನು ಹೊರ ತಂದಿದ್ದಾರೆ. 'ಈಚಲು ಮರದ ಕೆಳಗೆ', 'ರಾಮಾಚಾರಿಗಯ ನೆನಪು', 'ರಥಸಪ್ತಮಿ ಮತ್ತು ಇತರ ಚಿತ್ರಗಳು', 'ಧೇನುಕ ಪುರಾಣ', ದೀಪರೇಖೆಗಳು ಪ್ರಮುಖ ಪ್ರಬಂಧಗಳು. ಪು.ತಿ.ನರವರು ಹಳ್ಳಿಯ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಯು ಕಾಣುವ ಕಲ್ಪಕತೆ, ಸರಳ ಭಾಷೆಯ ಬಳಕೆ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯಪೂರ್ಣವಾಗಿದೆ. ಪು.ತಿ.ನರವರ ಭಾವನಾತ್ಮಕತೆ ಇತಿಹಾಸ, ವಿಜ್ಞಾನ ಹಾಗೂ ಮಾನವಿಕ ಶಾಸ್ತ್ರಗಳನ್ನು ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ಸರ್ವೇಂದ್ರಿಯ ಸಹಕಾರದಿಂದ ವಿಶ್ಲೇಷಣೆ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಜಗತ್ತಿನ ಸತ್ಯಮಿಥ್ಯಗಳು, ಆಧ್ಯಾತ್ಮಿಕ ಜಿಜ್ಞಾಸೆ, ನಿರೀಕ್ಷಣಾಶಕ್ತಿ, ಚಿಂತನೆಶೀಲತೆ, ಅಸಮಾನ್ಯತೆ ಗುಣಾವಗುಣಗಳ ವಾಸ್ತವ ಚಿತ್ರಣಗಳು ಚಿತ್ರಿತಗೊಂಡಿವೆ. ಗೂರೂರು ರಾಮಸ್ವಾಮಿ ಅಯ್ಯಂಗಾರರ ಪ್ರಬಂಧಗಳು ಹಾಸ್ಯ ಪ್ರಧಾನವಾಗಿ ಹರಟೆಗಳತ್ತ ತಿರಗುತ್ತವೆ. ಕೆಲವೊಂದು ಪ್ರಬಂಧಗಳು ಹಾಸ್ಯಕಥೆಗಳಂತೆ ಭಾಷವಾಗುತ್ತವೆ. 'ನಮ್ಮೂರ ರಸಿಕರು', 'ಹಳ್ಳಿಯ ಚಿತ್ರಗಳು', 'ಹಳೆಯ ಪಳೆಯ ಮುಖಗಳು' ಪ್ರಬಂಧ ಸಂಕಲನಗಳಲ್ಲಿ ಹಳ್ಳಿ ಜೀವನದ ವರ್ಣನಾತ್ಮಕ ಕಲ್ಪನೆಯಲ್ಲಿ ಭಾವನಾಲಹರಿಯು ಎದ್ದು ಕಾಣುವುದು. ಹಳ್ಳಿಯ

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE
BAGALKOTE

ಜನಮಾನಸದ ಸಾಮಾನ್ಯ ಜನರ, ಶಾನುಭೋಗರ, ಕ್ಷೌರಿಕರ, ಆಳುಕಾಳುಗಳ, ಅಂಚೆ ಅಣ್ಣಂದಿರ ವ್ಯಕ್ತಿ ಚಿತ್ರಗಳ ಹಾಸ್ಯಲೇಪಿತ ಶೈಲಿಯಲ್ಲಿಯು ಭಾವನಾತ್ಮಕತೆ ಎದ್ದು ಕಾಣುವುದು. ವ್ಯಕ್ತಿಯ ನಡತೆ, ಮುಖಭಾವ, ಆಕಾರ ವಿಲಕ್ಷಣತೆ, ಸರಳ ನಿರಾಡಂಭರತೆಯ ಶೈಲಿಯ ಬಳಕೆಯಲ್ಲಿ ಸಾಮಾನ್ಯ ಜನರ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಯಲ್ಲಿ ಕಾಣುವುದು. ಕನ್ನಡ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ದರ್ಶನದ ಗುಣಗಳಿವೆ. 'ತಲೆಮಾರಿನ ಹಿಂದೆ', 'ದಿಟ್ಟಿಸಿ ನೋಡಿದರೆ', 'ಅಸ್ತವ್ಯಸ್ತ' ಹಾಗೂ ಸ್ವರ್ಗದೋಲೆಗಳು' ಮೂಲಕ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ನೆಲೆಗಟ್ಟನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಿದ್ದಾರೆ.

ಉತ್ತರ ಕರ್ನಾಟಕದ ಸಿಂಪಿ ಲಿಂಗಣ್ಣನವರು ಕನ್ನಡ ನಾಡಿನ ಸಾಹಿತ್ಯ, ಸಂಸ್ಕೃತಿ, ಭಾರತೀಯ ಇತಿಹಾಸ, ಜನಪದ ಸಾಹಿತ್ಯ, ಕಲೆ, ಆದ್ಯಾತ್ಮಿಕ ವಿಷಯ ವಸ್ತುವನ್ನು ಒಳಗೊಂಡ ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆ ಅಡಗಿದೆ. ಸಿಂಪಿ ಲಿಂಗಣ್ಣನವರ ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಮನಕ್ಕೆ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಯನ್ನೊಳಗೊಂಡ 'ನೂರು ಗಡಿಗೆ ಒಂದು ಬಡಿಗೆ' ಅನುಭವ ಚಿಂತನೆ ಹೆಣದಿದ್ದಾರೆ. ಕಲಿಕೆಯ ವಿಚಾರದಲ್ಲಿ ಹಿಗ್ಗಬಲ್ಲುದು. ತಮ್ಮ ಸುತ್ತಲಿನ ಪರಿಸರದ ಸಾಮಾನ್ಯ ಸಂಗತಿಯ ನಿದರ್ಶನ ಕೊಡುವ ಜಾನಪದೀಯ ಅಂಶಗಳು ಭಾವನೆಯ ಬಿಂಬವನ್ನು ಪ್ರದರ್ಶಿಸುವುದೆ ಆಗಿದೆ ಎಂಬಂಶ ಮುಖ್ಯವಾದದ್ದು.

ಕುವೆಂಪು ಅವರ 'ಮಲೆನಾಡಿನ ಚಿತ್ರಗಳು' ಪ್ರಬಂಧ ಸಂಕಲನವು ಇಡೀ ಮಲೆನಾಡಿನ ಕುಟುಂಬಗಳ, ಭಾವನಾ ಲಹರಿಯನ್ನು ಹಾಡುತ್ತಾ ಹೋಗುವುದು. ಮಲೆನಾಡಿನ ಕಲ್ಪನಾ ವಿಲಾಸ ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಸುರಳಿಯನ್ನು ಬಿಚ್ಚುತ್ತಾ ಹೋಗುವುದು. ಮಲೆನಾಡಿನ ವೈವಿಧ್ಯಮಯ ಜೀವನ ದರ್ಶನವನ್ನು ವರ್ಣಿಸುವುದು. ಮಲೆನಾಡಿನ ಪ್ರಕೃತಿ ಜೀವನ, ಪ್ರಾಣಿ ಜೀವನ, ಜನ ಜೀವನವನ್ನು ಮಲೆನಾಡಿನ ಚಿತ್ರಗಳಲ್ಲಿ ಭಾವನಾಪರ ಚಿಂತನೆಯು ವ್ಯಕ್ತವಾಗುತ್ತಲೆ ಹೋಗುವುದು. ಹಳ್ಳಿಯಲ್ಲಿರುವ ವ್ಯಕ್ತಿ ಚಿತ್ರಣ, ಬೇಟೆಯ ಸಂಸ್ಕೃತಿ, ಪ್ರಕೃತಿಯ ವರ್ಣನೆಯಲ್ಲವು ಜೀವಪರ, ಭಾವಪರವಾದ ಚಿಂತನೆಯನ್ನು ಒದಗಿಸುವುದು. ಹರಟೆಯು ಗುಣಲಕ್ಷಣವು ಇರುವುದು. ಹರಟೆಯಲ್ಲಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳು ರಸವತ್ತಾಗಿ ಮೂಡಿ ಬಂದಿರುವ ಸಾಕಷ್ಟು ನಿದರ್ಶನಗಳು ಎದ್ದು ಕಾಣುತ್ತವೆ.

ಪ್ರಬಂಧ ಸಾಹಿತ್ಯಕ್ಕೆ ಬಿಗುವಿನ ಭಾವ ಬಂಧ ದಯಪಾಲಿಸಿದ ಸಾಹಿತಿ ತಿ.ನಂ. ಶ್ರೀಯವರು. ಅವರ 'ನಂಟರು' ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಕೌಟುಂಬಿಕ ಜೀವನದ ಸಂಬಂಧಗಳ ಸಾಮರಸ್ಯತೆಯನ್ನು ಕಾಣುತ್ತೇವೆ. ಅವರ ಕಾದಂಬರಿಯಲ್ಲಿ ಅಚ್ಚುಕಟ್ಟುತನ, ನಯಗಾರಿಕೆ, ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತತೆ, ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಯನ್ನು ಬೆಳೆಸುವ ರೀತಿ, ಜನರ ನೋವು ನಲಿವು ಆತ್ಮೀಯ ಶೈಲಿಯು ಅವರ ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಸರ್ವೆ ಸಾಮಾನ್ಯ. ಎನ್. ಪ್ರಹ್ಲಾದರಾಯರ 'ಮಧುವತೆ', 'ಮುತ್ತಿನ ಹಾರ'ಗಳಲ್ಲಿ ಸುಸಂಸ್ಕೃತ ಮನಸ್ಸುಗಳ ನೇರವಾದ ಆಲೋಚನಾ ಲಹರಿಯಿದೆ. ಕೌಟುಂಬಿಕ ಜೀವನದ ಸ್ವಾರಸ್ಯವಿದೆ. 'ಹಕ್ಕಿಹಾರುವ ಚಿತ್ರಣ' ಕಾವ್ಯಮಯ ಭಾವಪ್ರಧಾನತೆಯು ಇಲ್ಲಿ

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

ವರ್ಣಿಸಲಸದಳವಾಗಿದೆ. ದ.ಬಾ. ಕುಲಕರ್ಣಿಯವರ ವಿ.ಕೃ. ಗೋಕಾಕರ, ರಂ.ಶ್ರೀ. ಮುಗಳಿಯವರ, ದ.ರಾ. ಬೇಂದ್ರೆಯವರ ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಸಂಕಥನ, ಲಾಲಿತ್ಯ, ಸೌಂದರ್ಯ ಮಿಮಾಂಸೆ, ಜೀವನ ಪಾಠ ವೃತ್ತಾಂಗಳು, ಆತ್ಮೀಯ ಸಲ್ಲಾಪ, ವಿಡಂಬನೆ, ವ್ಯಂಗ್ಯ, ಮೊನಚಾದ ಹಾಸ್ಯ ಪ್ರಸಂಗಗಳು ಭಾವನಾತ್ಮಕತೆಯ ಚಿಂತನಾ ಲಹರಿಯಲ್ಲಿ ತೇಲಿಸುತ್ತಾ ಹೋಗುವವು. ಭಾವನಾತ್ಮಕತೆಯು ಜೀವನದೊಂದಿಗೆ ಬಂಧ ಬೆಸೆಯುವುದು ಬರವಣಿಗೆಯ ನಂಟು. ನಾ. ಕಸ್ತೂರಿಯವರ 'ಉಪಾಯ ವೇದಾಂತ', 'ನನ್ನ ಬೆನ್ನು' ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿಯೂ ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಪ್ರಸಂಗಗಳು ಹಾಸು ಹೊಕ್ಕಾಗಿವೆ. ನಾಟಕಕಾರರಾದ ಶ್ರೀರಂಗರು, ಕಾದಂಬರಿಕಾರರಾದ ಕಾರಂತರು ಕೆಲವೊಂದು ಚಿಂತನಾತ್ಮಕವಾದ ವೈಚಾರಿಕ ಲೇಖನ ರಚಿಸಿದ್ದು ಭಾವಪರ ಚಿಂತನೆಯಲ್ಲಿವೆ. ಮೂರ್ತ ಭಂಜಕತನವು ಕಾಣುವುದು. ರೀತಿ ನೀತಿಗಳ ಕಟುಟೀಕೆ ಮುಖ್ಯವಾಗಿ ಚರ್ಚಿತ. ಬೀಚಿಯವರು ಸಾಹಿತ್ಯಿಕ ಪ್ರಬಂಧ ಹಾಸ್ಯದ ಮಗ್ಗಲು ಪರಿಚಯದೊಂದಿಗೆ ಜೀವನಾನುಭವವನ್ನು ಬಗೆದು ನೋಡಿದ ರೀತಿ ಅನನ್ಯವಾದದ್ದು. ಅವರ ಪ್ರಬಂಧಗಳಾದ 'ಮಾತ್ರೆಗಳು', 'ಹುಚ್ಚು ಮರಳು', 'ಗಾಳಿ ಮಾತು', ಮುಂತಾದ ಸಂಕಲನಗಳಲ್ಲಿ ಹರಟೆಯ ಮುಖಾಂತರ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳು ನುಸುಳಿದ್ದು ಕಾಣುವುದು.

ಎರಡನೇ ಘಟ್ಟ

ಎರಡನೆಯ ಕಾಲಘಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಹಲವಾರು ಪ್ರಬಂಧಕಾರರು ಆಗಿ ಹೋಗಿದ್ದಾರೆ. ರಾ.ಕು. ಅವರ 'ಗಾಳಿಪಟ', ದೇವಕನ್ಯೆ' ಪ್ರಬಂಧಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸಲಾಗಿ 'ಗಾಳಿಪಟ' ಅತ್ಯಂತ ಮಹತ್ವದ್ದು. ಪ್ರಬಂಧದ ಎಲ್ಲಾ ಸಾಧ್ಯತೆಗಳನ್ನು ಸೂರೆಗೊಂಡವರು. ವ್ಯಂಗ್ಯ, ತರ್ಕ, ಜಿಜ್ಞಾಸೆ ಹಳಗನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದ ಸಾಲುಗಳ ಉಪಮೆಯು, ಸೂಕ್ತಿಯು, ವಿಚಾರವು ಸಮ್ಮೋಹಕ ವಿಚಾರ ಸರಣಿಯು ಅಲ್ಲಿದೆ. ವಕ್ರೋಕ್ತಿಯ ವಿಲಾಸಗಳಿಗೆ ಕೊಂಕು ಕಟಕಿಗಳಿಗೆ, ಚಮತ್ಕಾರ ಕಲ್ಪನಾ ಲೋಕಗಳಾದರೂ ಅವರ 'ಗಾಳಿಪಟ' ಓದಲೇಬೇಕು. ಮನುಷ್ಯನ ಭಾವನಾ ಪ್ರಪಂಚವನ್ನು ಓದಿ ಆಸ್ವಾದಿಸಲೇಬೇಕು. ಅವರು ಆ ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಹರಿಬಿಟ್ಟ ಸಂದೇಹಗಳಿಗೆ ಅವರೆ ಕೊಟ್ಟ ಉತ್ತರಗಳು ಮನನೀಯವಾಗಿವೆ. ಇವರ ತರುವಾಯದ ನಂತರ ಬರುವ ರಾ.ಯ.ಧಾರವಾಡಕರ ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ವಿನೋದದೃಷ್ಟಿ, ಚಿಂತನಪರತೆ, ಪಾಂಡಿತ್ಯ ಓತ ಪ್ರೋಕವಾದ ಧಾರವಾಡದ ದೇಶಿಯ ಚಿಂತನೆಶೀಲ ಭಾಷೆ ಬಳಕೆಯಾಗಿದೆ. 'ತೊರಿದ ಚಿಂತನಗಳು' 'ನವಿಲುಗರಿ', 'ಸೂರ್ಯಪಾನ' ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಸರಸ, ವಿಡಂಬನ ಶೈಲಿ, ಭಾಷಾ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯ ಬಳಕೆ, ರಮ್ಯತೆ, ಸುಸಂಸ್ಕೃತಿ ಚಿಂತನಾಲಹರಿ, ಭಾವಪರವಶತೆಯು ಎದ್ದು ಕಾಣುವುದು. ಅನಂತರ ಕಾಲದ ಪ್ರಮುಖ ಲೇಖಕರಾದ ಎಚ್.ಎಸ್. ಕೃಷ್ಣಸ್ವಾಮಿ ಅಯ್ಯಂಗಾರ 'ಸುರಹೊನ್ನೆ', 'ಕಳ್ಳ ಹೊಕ್ಕ ಮನೆ', 'ಜೇಡರ ಬಲೆ', 'ಚಂದ್ರಕಾಂತೆ', 'ಮೇಘಲಹರಿ', 'ಹವಳದ ಸರ' ಪ್ರಬಂಧ ಸಂಕಲನಗಳಲ್ಲಿ ಅದರಲೂ 'ನಗು' ಪ್ರಬಂಧವು

ತೃಪ್ತಭಾವನೆಯ ನಗುವಿದೆ. ನಗು ಆನಂದ ಕುರುಹು, ಒಳಮುಗುಳು, ಚುಚ್ಚುನಗು, ಮೆಚ್ಚುನಗು ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಯ ಚಹರೆಗಳೆ ಆಗಿವೆ.

ಈ ಕಾಲಘಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಎನ್.ಕೆ. ಕುಲಕರ್ಣಿಯವರ ಹಲವಾರು ಪ್ರಬಂಧ ಸಂಕಲನಗಳು ಬಂದಿವೆ. 'ಮೋಡಕಾ ಬಜಾರ್', 'ಮುಂಗಾಲ ಮುಟಿಗೆ', 'ಎನ್ಕೆ ಪ್ರಬಂಧಗಳು' ಪ್ರಮುಖವಾದವು. ಅವರ ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ರಸಿಕತೆಯಿದೆ. ಲೋಕಜ್ಞಾನವಿದೆ. ಜೀವನಾನುಭವವಿದೆ. ವಿಚಿತ್ರ ಸ್ವಭಾವಗಳ ವಿನೋದಪೂರ್ಣ ವಿವರಣೆಯಿದೆ. ನಿವೃತ್ತಿ ಜೀವನದ ಭಾವಬಿಂಬಗಳಿವೆ. ಕಸದಲ್ಲಿ ರಸ ತೆಗೆಯುವ ರೀತಿ ಇಲ್ಲಿದೆ. ಆತ್ಮೀಯವಾದ ಮಾತಿನ ದಾಟಿಯಿದೆ. ಕಟಕಿ, ವ್ಯಂಗ್ಯ, ವಿಡಂಬನಗಳಿಂದ ಅವರ ಬರಹ ತುಂಬಿವೆ. ಹಾಸ್ಯದಲ್ಲಿ ನೋವಿನ ಛಾಯೆಯಿದೆ. ಇದೇ ಕಾಲದ ಅ.ರಾ. ಮಿತ್ರಾವರು ಪ್ರಮುಖ ಪ್ರಬಂಧಕಾರರು. 'ಬಾಲ್ಕನಿಯ ಬಂಧುಗಳು', 'ಯಾರೋ ಬಂದಿದ್ದರು', 'ಸಂಕಲ್ಪಗಳು', 'ಮಿತ್ರ ಪ್ರಬಂಧ' ಪ್ರಮುಖ ಪ್ರಬಂಧಗಳಾಗಿವೆ. ಮಾನವ ಸ್ವಭಾವದ ಓರೆ ಕೋರೆಗಳನ್ನು ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸುವ ರೀತಿ ಅನನ್ಯವಾಗಿದೆ. ಭಾಷೆ ಹಾಗೂ ಭಾವನಾ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯವು ಇಲ್ಲಿದೆ. ಅವರ ಪ್ರಬಂಧಗಳು ಭಾವಗೀತೆಯ ಗುಣಗಳನ್ನು ಒಳಗೊಂಡಿವೆ. ನೂತನ ಪ್ರಯೋಗ ಮತ್ತು ಸರಸ ಶೈಲಿಯ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಬರಹಗಳೇ ಅ.ರಾ. ಮಿತ್ರಾ ಅವರ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯವಾಗಿದೆ. ಇದೇ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಬಿ.ಆರ್. ವಾಡಪ್ಪಿಯವರು 'ಗುಬ್ಬಿ ಗೂಡು' ವಿಶಿಷ್ಟ ಲಲಿತ ಪ್ರಬಂಧ ಸಂಕಲನವಾಗಿದೆ. ಸುಸಂಸ್ಕೃತ ಮನಸ್ಸುಗಳ ಅಲೆದಾಟ ಕಂಡುಬರುವುದು. ಸುಸಂಸ್ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಭಾವನಾಲಹರಿ, ಭಾವನಾತ್ಮಕತೆಯು ಸ್ಪಷ್ಟವಾಗಿ ಗೋಚರಿಸುವುದು. ಅದೇ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಗದಗಕರ ಎನ್.ಎಸ್‌ರವರು ಬರುವದನ್ನು ಗಮನಿಸಬಹುದಾಗಿದೆ. ಲಾಂಗೂಲಾಚಾರ್ಯರ ಚುರುಕುಮತಿಯ ಹರಟೆಗಳಿಗೆ ಪ್ರಸಿದ್ಧಿ ಪಡೆದರು. ಹರಟೆಯ ಮುಖಾಂತರ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸೃಜಿಸಿದರು. ಲಾಂಗೂಲಾಚಾರ್ಯರ ಪ್ರಬಂಧಗಳು ರಾಜಕೀಯದಿಂದ ರಾಮಾಯಣದವರೆಗೂ ಗೌಳಿಗಳಿಂದ ಗಣೇಶನವರೆಗೂ ವ್ಯಂಗ್ಯವನ್ನು ಹರಿತಾಗಿ ಬಳಸುವದರ ಮೂಲಕ ವ್ಯಂಗ್ಯ ಪ್ರಬಂಧಗಳ ಚಕ್ರವರ್ತಿಯಾಗಿ ಹೆಸರು ಪಡೆದವರು. ಸರಳತೆಯೂ ಇದೆ. ಖಚಿತತೆಯು ಇದೆ. ಹೇಳಬೇಕಾದದ್ದು ಅಚ್ಚುಕಟ್ಟಾಗಿ ಹೇಳುವ ರೀತಿ ಅನನ್ಯವಾದದ್ದು. ಇದೇ ದಾರಿಯಲ್ಲಿ ಹಿರಿಯ ಸಾಹಿತಿ ದೇ. ಜವರೇಗೌಡ ಹಾಗೂ ಡಿ.ಎಲ್. ನರಸಿಂಹಾಚಾರ್ಯ ಪ್ರಬಂಧಗಳು ಸೇರುತ್ತವೆ. ಗಟ್ಟಿಯಾದ ಗದ್ಯಶೈಲಿ ಇಲ್ಲಿ ಎದ್ದು ಕಾಣುವುದು.

'ನಮ್ಮ ಮನೆಯ ದೀಪ' ಪ್ರಬಂಧದ ಮೂಲಕ ಮನೆ ಮನೆ ಮನೆ ತಲುಪಿದ ಹಾ.ಮಾ. ನಾಯಕರು ಮಹಿಳಾಪರ ಚಿಂತನೆಯು ಚರ್ಚೆಗೆ ಬರುವುದು. ಈ ಪ್ರಬಂಧವು ಕೌಟುಂಬಿಕ ಬಂಧ ಕಟ್ಟಿಕೊಡುವುದು. ಅವರ ಹದಿನೈದು ಅಂಕಣ ಬರಹದ ಸಂಕಲನಗಳಲ್ಲಿ ಸುಸಂಸ್ಕೃತ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವದ ಅನಾವರಣ ಕಾಣುವುದು. ಓದುಗರ ಮನ ಮುಟ್ಟುವಂತೆ ಅವರು ಬರೆದರು. ಬರದದ್ದೆಲ್ಲ ಭಾವ ತುಂಬಿದ ಬಂಡಿಯಂತೆ ಕಾಣುತ್ತವೆ. ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಚಿಂತನೆ ಅವರ ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಕಾಣುವುದು.

BASAVESHWAR COMMERCE BAGALKOTE

ಇದೇ ಸಾಲಿಗೆ ಎಸ್.ಎಸ್. ಒಡೆಯರವರು ಸೇರುವರು ಬಾಳ ಬದುಕಿನ ಚಿಂತನೆಗಳನ್ನು ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಚಿಂತಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಡಾ. ಸಿ.ಪಿ.ಕೆಯವರು 'ಚಿಂತನ ಬಿಂದು' ಪ್ರಬಂಧ ಸಂಕಲನದಲ್ಲಿ ಭಾವನಾನುಭವ, ಜೀವನಾನುಭವವು ಅಡಕವಾಗಿದೆ. ಅಧ್ಯಯನ ಅನುಭವಗಳ ಫಲವಾದ ನೇರವಾದ ಆಲೋಚನೆಗಳು ಅಲ್ಲಿವೆ. ಪ್ರಭುಶಂಕರವರ 'ಜನಮನ' ಅಪರೂಪದ ಪ್ರಬಂಧ ಸಂಕಲ. ವ್ಯಕ್ತಿ ಚಿತ್ರಗಳ ಅಪರೂಪದ ಸಂಕಲನಕ್ಕೆ ಮತ್ತೊಂದು ಉತ್ತಮ ಉದಾಹರಣೆ 'ಬೆರಗು' ಶರಣರ ತತ್ವ ಆದರ್ಶಗಳನ್ನು ಇಣಿಕಿ ನೋಡುವ ಪ್ರಯತ್ನವಾಗಿದೆ. 'ಶ್ರೀದಾಸರು', 'ಎತ್ತಿಗೆ ಜ್ವರ ಎಮ್ಮೆಗೆ ಬರೆ' ಸಾಮಾಜಿಕ ಚಿಂತನೆಯೊಂದಿಗೆ, ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳು ಅದರಲ್ಲಿ ಅಡಕಗೊಂಡಿವೆ. ಈ ಸಾಲಿನಲ್ಲಿ ಮತ್ತೊಂದು ಹೆಸರು ಸಿಂತ್ರಿ ಸರೋಜನಿಯವರದು. ಸ್ವಾನುಭವದ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ವಿಚಾರಗಳು ಅಲ್ಲಿ ಅಡಕವಾಗಿದೆ. ಇಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲದೆ ಕೊಡಗಿನ ಗೌರಮ್ಮನವರು ಉತ್ತಮ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಯ ಪ್ರಬಂಧಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ.

ಈ ರೀತಿಯ ಪ್ರಬಂಧಕಾರರಲ್ಲಿ ಇನ್ನು ಅನೇಕರು ಎರಡನೆ ಹಂತದಲ್ಲಿ ಕೆಲವು ಪ್ರಬಂಧಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಯನ್ನು ಸವಿಸ್ತಾರವಾಗಿ ಹರವಿದ್ದಾರೆ. ವಿನಾಯಕರ 'ದೆವ್ವ', 'ಭರತಖಂಡದ ಜೀವ ಜ್ಯೋತಿಷಿಗಳು', 'ಕನ್ನಡದ ಕಿಡಿಗಳು', ಮಹಿಳಾ ಪ್ರಬಂಧಕಾರರಲ್ಲಿ ಟಿ. ಸುನಂದಮ್ಮನವರು ತಮ್ಮ ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಮಹಿಳಾ ಬದುಕಿನ ಪದರುಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಶ್ರೀಮತಿ ಸುನಂದಾ ಬೆಳಗಾಂವರ. 'ಮೊಸರು ಅವಲಕ್ಕಿ', ಎಂ.ಎಸ್. ಸುಂಕಾಪೂರರ 'ಮಾವ ಕೊಡಿಸಿದ ಕೋಟು' ಪ್ರಬಂಧಗಳು ಭಾವನಾತ್ಮ ಚಿಂತನೆಯ ಫಲಗಳಾಗಿವೆ. 'ಮೊಸರು ಅವಲಕ್ಕಿ' ಮನೆಗೆ ಬರುವ ಅತಿಥಿಯ ಆತ್ಮಾನುಸಂಧಾನದ ನೆಲೆಗಳನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಿದರೆ, 'ಮಾವ ಕೊಡಿಸಿದ ಕೋಟು' ಕುಟುಂಬ ಸಂಬಂಧಗಳು ಅನಾವರಣವಾಗಿದೆ. ಮಾವನು ಮದುವೆಯಲ್ಲಿ ಕೊಡಿಸಿದ ಒಂದು ಕೋಟು ಜೀವನಪರ್ಯಂತ ಭಾವನಾಲಹರಿಯನ್ನು ನೇಯುತ್ತಾ ಹೋಗುವುದು. ಅದೇ ದಾಟಿಯಲ್ಲಿರುವ 'ಕುಡುಕ ಕರಿಯಪ್ಪ' ಪ್ರಬಂಧವು ಕುಡುಕ ಮನಸ್ಸಿನ ಸ್ವಚ್ಛಂದಲಹರಿಯ ಭಾವನಾತ್ಮಕಾವಾಗಿ ವಿವರಿಸುತ್ತಾ ಹೋಗುವುದು. ಅದೇ ರೀತಿಯಾಗಿ ಪಾಟೀಲ ಪುಟ್ಟಪ್ಪನವರ 'ಸ್ವದೇಶಿ ವಿದೇಶಿ' ಹಾಗೂ 'ಆದರ್ಶವಿಲ್ಲದಿದ್ದರೆ ಜೀವನವಿಲ್ಲ'. ಈ ಎರಡು ಪ್ರಬಂಧಗಳು ಭಾವನೆಗಳನ್ನು ಹೆಕ್ಕಿ ತೆಗೆದ ಪ್ರಬಂಧಗಳಾಗಿವೆ. ಈ ಸಾಲಿನಲ್ಲಿರುವ ಮತ್ತೊಬ್ಬರು ಪ್ರಬಂಧಕಾರರೆಂದರೆ, ವೀರೇಂದ್ರ ಸಿಂಪಿಯವರು ಹಾಗೂ ಮಲ್ಲಿಕಾರ್ಜುನ ಹುಲಗಬಾಳರು ಪ್ರಮುಖರು. ವೀರೇಂದ್ರ ಸಿಂಪಿಯವರ 'ಸ್ವಚ್ಛಂದ ಮನದ ಸುಳಿದಾಟ', 'ಕಾಗದದ ಚೂರು', 'ಭಾವ ಮೈದುನ' ಪ್ರಬಂಧ ಸಂಕಲನಗಳು ಭಾವನೆಯೊಂದಿಗೆ ಬೆಸೆದ ಬಂಧಗಳಾಗಿವೆ. ಅದರಲ್ಲೂ ಈ ಮೂರು ಪ್ರಬಂಧಗಳು ಭಾವ ಮನುಷ್ಯ ಸಂಬಂಧಗಳನ್ನು ಬೆಸೆದ ಬಂಧವಿದೆ. ಅದೇ ರೀತಿಯಾಗಿ ಪ್ರೊ. ಮಲ್ಲಿಕಾರ್ಜುನ ಹುಲಗಬಾಳರ 'ನಾಲಿಗೆಯ ಮೇಲೊಂದಿಷ್ಟು' 'ನಗೆ ಮುಗುಳು' ಪ್ರಬಂಧಗಳು

ಹೃದಯವನ್ನು ಸೆಳೆದಿವೆ. 'ನ್ಯಾಯ ನಿಷ್ಠುರತೆ', 'ನಿತ್ಯ ಜೀವನ ಸತ್ಯ', ಹೃದಯ ಭಾರವನ್ನು ಹಗುರವಾಗಿಸುವ ಬರಹಗಾರರೆಂದು ಶ್ರೀಯುತರು ಹೆಸರು ಪಡೆದವರು.

ಮೂರನೇ ಘಟ್ಟ

ಹೊಸ ತಲೆಮಾರಿನ ಪ್ರಬಂಧಕಾರರು ಈ ಘಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಗಮನಿಸಬಹುದು. ಈ ಕಾಲಘಟ್ಟದಲ್ಲಿ, ಸ್ವಚ್ಛಂದತೆ, ಸಂಕ್ಷಿಪ್ತತೆ, ವ್ಯಕ್ತಿ ನಿಷ್ಠತೆ, ಆತ್ಮೀಯತೆ, ಸರಸ ಸಾಹಿತ್ಯ, ತಿಳಿಹಾಸ್ಯ, ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳು, ವಾದ ವೈಖರಿಯ ಕಲ್ಪನಾ ವಿಲಾಸದ ಚರ್ಚೆ, ಜೀವನ ಪ್ರೀತಿ, ಜೀವನ ವಿಮರ್ಶೆ, ವಿಷಯ ವ್ಯಾಪ್ತಿ ಚಿಂತನೆ, ಲೇಖನ ಪ್ರಾರಂಭ ಮತ್ತು ಮುಕ್ತಾಯವನ್ನು ವ್ಯವಸ್ಥಿತವಾಗಿ ಬಳಸಿಕೊಂಡು ಹಲವಾರು ಪ್ರಬಂಧಕಾರರು ಪ್ರಬಂಧ ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಎಳೆಯನ್ನು ಇಟ್ಟುಕೊಂಡು ಕೃತಿ ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ.

ಈ ದಿಶೆಯಲ್ಲಿ ಸುನಂದಾ ಬೆಳಗಾವಕರ 'ಕಜ್ಜಾಯ' ಒಂದು ರಸವತ್ತಾದ ಚಿತ್ರಣ. ಜೀವನಾನುಭವ ಜೀವನದುದ್ದಕ್ಕೂ ನೆನಪಿನ ಬುತ್ತಿಯನ್ನು ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಬಿಚ್ಚುತ್ತಾ ಹೋಗುವರು. ರಸಾನುಭವದ ಚಿತ್ರಣವು ಇಲ್ಲಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿದೆ. ಮುಪ್ಪು, ವಯಸ್ಸು, ಬಾಲ್ಯವನ್ನು ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇದರ ದಿಶೆಯಲ್ಲಿ 'ಮೊಸರು ಅವಲಕ್ಕಿ' ಮರಳಿ ಹೇಳಬೇಕಿಲ್ಲ. ಈ ಕಾಲಘಟ್ಟದಲ್ಲಿ ಬರುವ ಪ್ರಬಂಧಕಾರರಲ್ಲಿ ಎಂ.ಎಸ್. ಕೃಷ್ಣಮೂರ್ತಿ, ಎ.ಎಸ್. ವೇಣುಗೋಪಾಲರಾವ ಅವರ 'ಹಾದಿಪುರಾಣ', 'ಆತ್ಮೀಯ', ಪ್ರಬಂಧ ಸಂಕಲನಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ವಚ್ಛಂಧ ಭಾವನಾ ಲಹರಿಯಿದೆ. ಜೀವನದ ಸ್ವಾರಸ್ಯಕರ ಅನುಭವಗಳು, ಗಾದೆಗಳು, ಹೇರಳವಾಗಿ ಬಳಕೆಯಾಗಿವೆ. ಶಂ.ಗು. ಬಿರಾದಾರ 'ಗಿಡ್ಡ ಹೆಂಡತಿ ಲೇಸು' ಪ್ರಬಂಧದಲ್ಲಿ ಸಾಮಾಜಿಕ, ರಾಜಕೀಯ ವಿಡಂಬನೆಗಳು ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಮೂಡಿಬಂದಿವೆ. ಅನಂತ ಕಲ್ಲೋಳಕರರ 'ವೈಬೋಗದ ವೈಖರಿಯಲ್ಲಿ' ಕೂತುಹಲಕಾರಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳು ಇವೆ. ಶಾಸ್ತ್ರ ಸಾಹಿತ್ಯರಾದ ಟಿ.ವ್ಹಿ. ವೆಂಕಟಾಚಲಶಾಸ್ತ್ರಿಯವರು 'ಸದ್ದೆಂತೆಂಬರ ಗಂಡ' ಸಾಮಾನ್ಯ ವಿಷಯವನ್ನು ಪಾಂಡಿತ್ಯ ಪೂರ್ಣ ಭಾಷೆಯಲ್ಲಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ವಿಶ್ಲೇಷಣೆಯನ್ನು ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ದೇ.ನಾ.ಶ್ರೀಯವರ 'ಗಿರಿಕಂದರ ಮೋಹಿತರಲ್ಲಿ' ಪ್ರವಾಸ ಅನುಭವವನ್ನು ಪ್ರಬಂಧಕ್ಕೆ ತಿರುಗಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಜಿ.ಡಿ. ನಾಡಕರ್ಣಿ ಅವರು ತಮ್ಮ 'ಹಾಸ್ಯದ ಲಾಸ್ಯ'ದಲ್ಲಿ ರಸಪೂರ್ಣ ಬಣ್ಣನೆಯನ್ನು ತಮ್ಮ ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ವಿಶ್ಲೇಷಣೆ ಮಾಡಿದ್ದಾರೆ. ಜಿ.ಶಂ. ಪರಮಶಿವಯ್ಯನವರು ಜಾನಪದ ಸನ್ನಿವೇಶಗಳನ್ನು ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಹೆಣದಿದ್ದಾರೆ. ಡಿ.ಕೆ. ರಾಜೇಂದ್ರರು ಹರಟೆಯ ಮಲ್ಲರು ಎಂಬುದರಲ್ಲಿ ಎರಡು ಮಾತಿಲ್ಲ. ತಮ್ಮ ಬಾಲ್ಯವನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸುವದರೊಂದಿಗೆ ಜನಪದ ಗೀತೆಗಳನ್ನು ಹದವರಿತು ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಜೋಡಿದ್ದಾರೆ. 'ಮುಗಿಲು ಹಳ್ಳಿಯ ಬಖೈರು ಹಾಗೂ ಇತರ

BASAVESHWAR CO BAGA

ಲೇಖನಗಳು', ಪ್ರಬಂಧದಲ್ಲಿ ಹಳಗನ್ನಡ ಹಾಗೂ ಉರ್ದು ಮಿಶ್ರಿತ ಕನ್ನಡ ಶೈಲಿಯಿಂದ ಹೊಸ ಪ್ರಪಂಚವೊಂದನ್ನು ಸೃಷ್ಟಿಸಿದ್ದಾರೆ.

ಈ ಕಾಲದ ಪ್ರಮುಖ ಲೇಖಕಿಯಾದ ಗುರುದೇವಿ ಹುಲೆಪ್ಪನವರು 'ನನ್ನಜ್ಜಿಗುಜ್ಜಿ', 'ಬಿಡುಗಡೆಯ ಸಡಗರ', 'ಮೂಗು ಮುರಿಯುವವರು', 'ನೀರು ಬಂತು ನೀರು', ಪ್ರಬಂಧಗಳು ಭಾವನಾ ಪ್ರಪಂಚವನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸುತ್ತಾ ಹೋಗುವವು. ತಮ್ಮದೆ ಪುಸ್ತಕ ಬಿಡುಗಡೆ ಸಮಾರಂಭ ಅನುಭವವನ್ನು ತುಂಬಾ ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ತುಂಬಾ ತೊಂದರೆ ತಾಪತ್ರಯ ತೆಗೆದುಕೊಂಡು ಬಿಡುಗಡೆ ಮಾಡಿದ ಪುಸ್ತಕ ಸಮಾರಂಭ ಮುಗಿಯುವದರೊಳಗೆ ಕಿರಾಣಿ ಅಂಗಡಿಯ ರದ್ದಿಯಾಗಿರುವ ಪ್ರಸಂಗವಂತು ತುಂಬಾನೆ ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಮೂಡಿಬಂದಿದೆ. ಅದೆ ಸಂದರ್ಭಗಳನ್ನು 'ನನ್ನಜ್ಜಿಗುಜ್ಜಿ' ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಮೂಡಿಬಂದಿವೆ. ಭಾವನೆಯ ಕಲ್ಪನಾಲಹರಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳು ಇವರ ಪ್ರಬಂಧದಲ್ಲಿ ಹಾಸುಹೊಕ್ಕಾಗಿವೆ. ಈ ದಿಶೆಯಲ್ಲಿ ಅನಸೂಯಾ ಸಿದ್ದರಾವರು, ಆರ್. ನಿರ್ಮಲಾ ಅವರ ಪ್ರಬಂಧದಲ್ಲಿ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳು ಚಿತ್ರಿತವಾಗಿವೆ. ಲಂಕೇಶರ ಟಿಕೆ ಟಿಪ್ಪಣಿ ಉತ್ತಮ ಪ್ರಬಂಧದ ದಾಟಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿವೆ. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ ಹಲವಾರು ಲಲಿತ ಪ್ರಬಂಧದ ಗುಣಗಳಿರುವುದು ಉಂಟು. ಅವರು ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳು ಇಲ್ಲಿ ಎದ್ದು ಕಾಣುವವು. ಗಾಢ ವೈಚಾರಿಕತೆಯನ್ನು ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇಂತಹ ಲಕ್ಷಣಗಳು ಕೆ.ಪಿ. ಪೂರ್ಣಚಂದ್ರ ತೇಜಸ್ವಿಯರು ಅವರ ಹಲವಾರು ಪ್ರವಾಸ ಕಥನ ಹಾಗೂ ಪರಿಸರ ಚಿಂತನೆಗಳಲ್ಲಿ ಹಲವಾರು ಅಂಶಗಳು ಬಂದರೂ ಕೂಡ ಪ್ರಬಂಧವೆಂದು ಪ್ರತ್ಯೇಕವಾಗಿ ರಚಿಸಿಲ್ಲ. ವೈಜ್ಞಾನಿಕ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತೆಗಳು ಇವೆ. ಈ ದಿಶೆಯಲ್ಲಿ ಕೀರ್ತಿನಾಥ ಕುರ್ತುಕೋಟಿಯವರ 'ಉರಿಯ ನಾಲಿಗೆ' ತುಂಬ ವೈಚಾರಿಕ ಹಾಗೂ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳಿಂದ ಕೂಡಿವೆ.

ಚಂದ್ರಶೇಖರ ಆಲೂರರ 'ಆ ಕ್ಷಣದ ಸತ್ಯ' ಪ್ರಬಂಧ ಸಂಕಲನ ತುಂಬಾ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯ ಪೂರ್ಣವಾದದ್ದು. ಆ ಪ್ರಬಂಧದಲ್ಲಿ ಬರುವ 'ಒಂದು ಗ್ರಿಟಿಂಗ್ ಕಾರ್ಡ್‌ಗಾಗಿ' ಪ್ರಬಂಧವು ಮನುಷ್ಯನ ಭಾವನೆಗಳು ಹೇಗೆಲ್ಲಾ ವರ್ತಿಸುತ್ತವೆ ಎಂಬ ಸಂಗತಿಯನ್ನು 'ಒಂದು ಗ್ರಿಟಿಂಗ್ ಕಾರ್ಡ' ಹಿನ್ನಲೆಯಲ್ಲಿ ತುಂಬಾ ಅರ್ಥವತ್ತಾಗಿ ಚಿತ್ರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಕೆ. ಸತ್ಯನಾರಾಯಣರ 'ನಮ್ಮ ಪ್ರೀತಿಯ ಕ್ರಿಕೆಟ್' 'ಶಾಲೆಯ ಗಂಟೆ' ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಮಕ್ಕಳ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳು ಒಡಮೂಡಿವೆ. ಭಾವ ಪ್ರಧಾನವಾದ ಚಿಂತನೆಗಳನ್ನು ಇಲ್ಲಿ ಮೆಲಕು ಹಾಕಲಾಗಿದೆ. ಈ ದಿಶೆಯಲ್ಲಿ ಸಿದ್ದರಾಮ ಹೊನಕಲ್ಲರ ಪ್ರಬಂಧಗಳು ಸಾಹಿತ್ಯಿಕ ಚಿಂತನೆಯೊಂದಿಗೆ ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಮೂಡಿ ಬಂದಿದ್ದು ಇದೆ.

ಈರಪ್ಪ ಕಂಬಳಿಯವರ 'ಹೀಗೊಂದು ಟಾಪ್ ಪ್ರಯಾಣ' ತುಂಬಾ ಮಹತ್ವ ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲೊಂದು. 'ಮಸಾಲೆಗೆ ಹೋದ ಮಾನ', 'ಕಿರುಕುಳ ರಜಾ', 'ಉಂಡಿ ಕದ್ದವರು', 'ನಾನು ಕವನ ಬರೆದೆ', 'ಗಣಿತ ಸಂಗೀತ', ಶುನಕೋ ಪಾಖ್ಯಾನ', 'ಆಯುಷ್ಕರ್ಮ ಶಾಲೆಯಲ್ಲಿ'

COMMERCE COLLEGE BAGALKOTE

ಮುಂತಾದ ಪ್ರಬಂಧಗಳಲ್ಲಿ ಜೀವನಾನುಬಂಧ, ರಸವತ್ತತೆ, ಭಾವನಾ ಲಹರಿಯು ಇಲ್ಲಿ ಚಿತ್ರಿತವಾಗಿದೆ. ಇಲ್ಲಿ ದಟ್ಟವಾದ ಭಾವನಾತ್ಮಕ ಚಿಂತನೆಗಳು ಮೂಡಿಬಂದಿವೆ. ಇದೇ ಸಾಲಿನಲ್ಲಿ ಜಯಶ್ರೀ ಹೆಗಡೆಯವರ 'ಇಣುಕಿದಲ್ಲಿ ಛಂದ', ಪ್ರಬಂಧವು ಕೂಡಾ ಮುಖ್ಯವಾದದ್ದು. 'ಚಂಡಾಳ ಚೌಕಳಿ', 'ಮನೆಯಿಂದ ಮನೆಗೆ', 'ಕಡಲಂಚಿನ ಕರಾವಳಿ', 'ಬಾರಲೆ ಹಕ್ಕಿ', 'ಗಾಳಿ ವರ್ತಮಾನ', ಪ್ರಬಂಧಗಳು ತುಂಬಾ ಭಾವನಾತ್ಮಕವಾಗಿ ಮೂಡಿಬಂದಿವೆ.

ನವ್ಯ ಸಾಹಿತ್ಯ ಕಾಲ ಹೊರತುಪಡಿಸಿ ಎಲ್ಲ ಕಾಲದಲ್ಲೂ ರಚನೆಗೊಂಡ ಪ್ರಬಂಧ ಸಾಹಿತ್ಯ ನಮ್ಮ ಹೊಸ ಲೇಖಕರು ಈ ಕಡೆ ದೃಷ್ಟಿ ಬೀರುತ್ತಿರುವುದು. ಅತ್ಯಂತ ಸಂತೋಷದಾಯಕವಾದ ಸಂಗತಿಯಾಗಿದೆ. ಲಲಿತ ಪ್ರಬಂಧ ಬರೆಯಲು ಲೇಖಕರು ಉತ್ಸಾಹ, ಅವುಗಳನ್ನು ಓದಬೇಕೆಂದು ಓದುಗರ ಲವಲವಿಕೆ ಇವೆರಡು ಸರಸವಾಗಿ ಸಮರಸವಾದರೆ ಸುರಸ ಲಲಿತಪ್ರಬಂಧಗಳ ಪುಸ್ತಕಗಳಿಗೆ ಯೋಗ್ಯ ಪ್ರೋತ್ಸಾಹನೆ ದೊರೆತಂತಾಗುತ್ತದೆ. ಪ್ರತಿದಿನವು ಈ ಬಾಳಿನಲ್ಲಿ ಉಂಡ ಸುಖದುಃಖದ ಅನುಭವಗಳನ್ನು ರಸಮಯವಾದ ಪ್ರಸಂಗಗಳನ್ನು ಚಿತ್ರಿಸುವ ಶಕ್ತಿ ಸಾಹಿತ್ಯದ ಒಂದು ರೂಪವೆ ಲಲಿತಪ್ರಬಂಧ ಪ್ರಕಾರವಾಗಿದೆ. ಕನ್ನಡದಲ್ಲಿ ಲಲಿತಪ್ರಬಂಧ ಪ್ರಭಾವ ಬಿರುವ ಶಕ್ತಿಯುಳ್ಳವುಗಳಾಗಿವೆ.

ಉಪಸಂಹಾರ

ಒಟ್ಟಾರೆ ಹೇಳುವುದಾದರೆ, ಈ ಸಾಹಿತ್ಯ ಪ್ರಕಾರ ಕೊರವಂಜಿ, ವಿನೋಧಿನಿ, ಕಂಠೀರವ, ಪ್ರಬುದ್ಧ ಕರ್ನಾಟಕ, ಶುಭೋದಯ, ಸಚಿತ್ರ ಭಾರತ, ವಿಶ್ವಕರ್ನಾಟಕ, ಮುಂತಾದ ಹಾಗೂ ಇಂದಿನ ಸುಧಾ, ತರಂಗ, ಮಯೂರ, ಕರ್ಮವೀರ, ತುಷಾರ, ಸಂಕ್ರಮಣ, ಕಸ್ತೂರಿ ಪತ್ರಿಕೆಗಳ ಸಹಕಾರದೊಂದಿಗೆ ದಿನಪತ್ರಿಕೆಗಳಾದ ಸಂಯುಕ್ತ ಕರ್ನಾಟಕ, ಪ್ರಜಾವಾಣಿ, ಕನ್ನಡಪ್ರಭ, ಉದಯವಾಣಿ, ವಿಜಯ ಕರ್ನಾಟಕ, ವಿಜಯವಾಣಿ, ಹೊಸ ದಿಗಂತ, ವಿಶ್ವವಾಣಿ, ಮುಂತಾದ ಪತ್ರಿಕೆಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ರಚಾರ ಪಡೆಯುತ್ತಿರುವುದು ಸಾಹಿತ್ಯ ಬೆಳವಣಿಗೆಗೆ ಪೂರಕ ವಾತಾವರಣ ಮೂಡುತ್ತಿರುವುದು ಅತ್ಯಂತ ಆಶಾದಾಯಕ ಸಂಗತಿಯಾಗಿದೆ.

ಪರಾಮರ್ಶನ ಗ್ರಂಥಗಳು

- ಸಿದ್ದಲಿಂಗಯ್ಯ ಜಿ.ಎಸ್. ಮತ್ತು ಎಮ್.ಎಚ್.ಕೃಷ್ಣಯ್ಯ. (1990). ಸಾಲು ದೀಪಗಳು. ಕರ್ನಾಟಕ ಸಾಹಿತ್ಯ ಅಕಾಡಮಿ, ಬೆಂಗಳೂರು.
- ಧಾರವಾಡಕರ ರಾ.ಯ. (1990). ಪ್ರಬಂಧ ಪ್ರಪಂಚ. (ಅಭಿನಂದನ ಗ್ರಂಥ). ಧಾರವಾಡ.
- ಮೂರ್ತಿ ರಾವ್ ಎ.ಎನ್. (1989). ಸಮಗ್ರ ಲಲಿತ ಪ್ರಬಂಧಗಳು. ಕನ್ನಡ ಸಂಘ, ಕ್ರೈಸ್ಟ ಕಾಲೇಜು, ಬೆಂಗಳೂರು.

- ಮಳಗಿ ಜಿ.ವ್ಹಿ. ಮತ್ತು ಆರ್.ಬಿ. ಚಲಮಿ (2005). ಪ್ರಬಂಧ ಸಂಪದ. ಪ್ರಸಾರಾಂಗ, ಕರ್ನಾಟಕ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯ, ಧಾರವಾಡ.
- ವೀರಣ್ಣ ರಾಜೂರು. ಮತ್ತು ಬಿ.ವ್ಹಿ. ಗುಂಜಟ್ಟಿ. (2003). ಪ್ರಬಂಧ ಸಂಚಯ. ಪ್ರಸಾರಾಂಗ, ಕರ್ನಾಟಕ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯ, ಧಾರವಾಡ.
- ವಸಂತಕುಮಾರ ಮಳಲಿ. (1978). ಪ್ರಬಂಧ ಸಾಹಿತ್ಯ. ಪ್ರಸಾರಾಂಗ, ಮೈಸೂರು ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾಲಯ, ಮೈಸೂರು.
- ವರದರಾಜ ಹುಯಿಲಗೋಳ. (1961). ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯದಲ್ಲಿ ಲಲಿತ ಪ್ರಬಂಧಗಳು. ಸಮಾಜ ಪುಸ್ತಕಾಲಯ, ಧಾರವಾಡ.

IIMRD
JOURNALS

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE
BAGALKOTE.

CS Scanned with CamScanner

Name of the Teacher: Dr. Basavaraj Kumbar

Cover Page

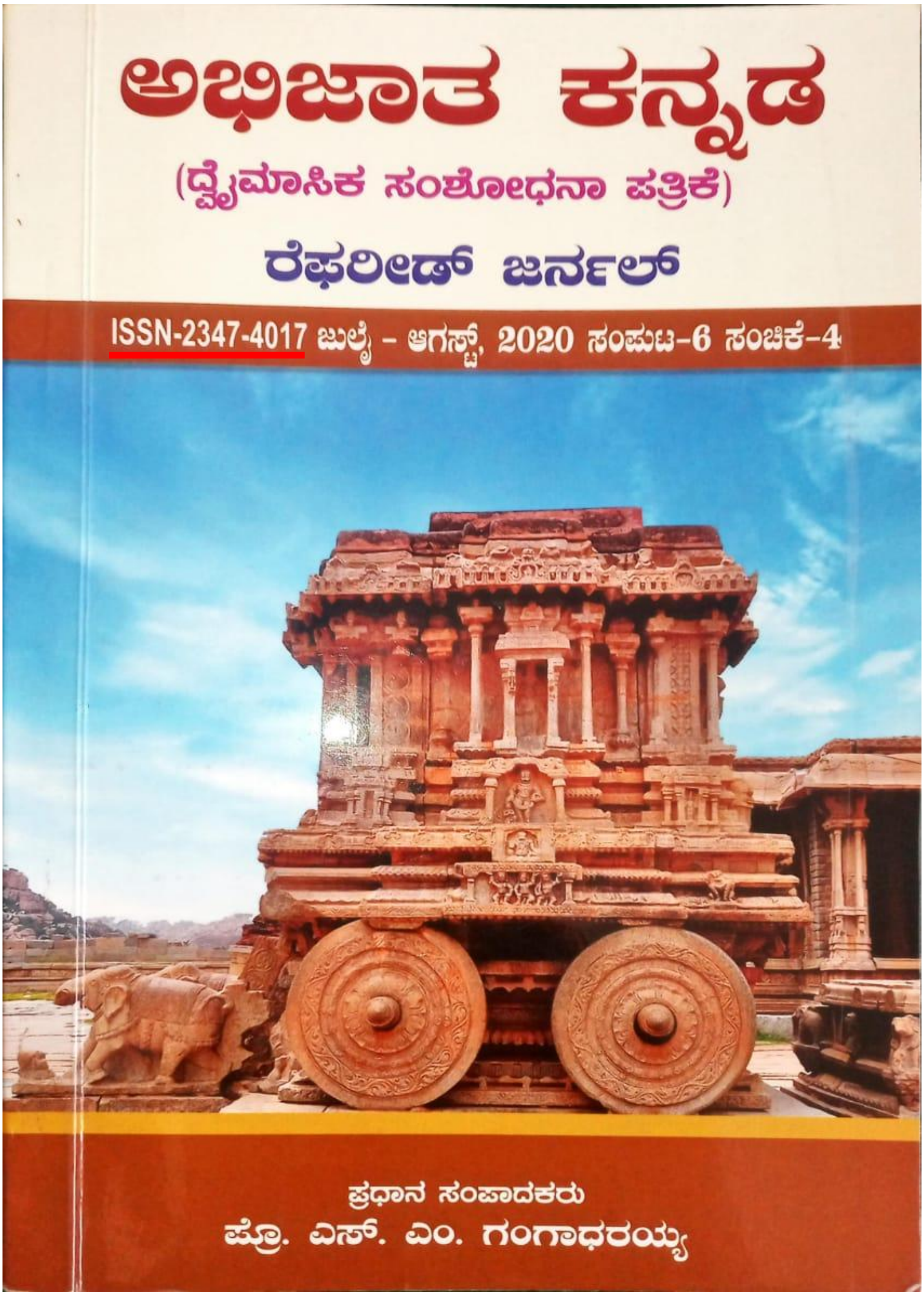

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE
BAGALKOTE

ಹೊರನಾಡ ಅನೇಕ ಕನ್ನಡ ವಿದ್ವಾಂಸರು ಕನ್ನಡದ ನುಡಿತೋರಣವನ್ನು ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿ ಕಟ್ಟಿದ್ದಾರೆ, ಸಾಹಿತ್ಯವನ್ನು ಶ್ರೀಮಂತಗೊಳಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಕನ್ನಡದ ಬಗೆಗೆ ನಿಜಕಾಳಜಿಯನ್ನು ಹೊಂದಿ ಜೀವನದುದ್ದಕ್ಕೂ ಕನ್ನಡ ನುಡಿಯ ಸೇವೆಯನ್ನು ಕಂಕಣಬದ್ಧರಾಗಿ ಗೈದಿದ್ದಾರೆ. ಅವರ ಜೀವನಾದರ್ಶಗಳು ಕನ್ನಡಿಗರಿಗೆ ವಾಸ್ತವವಾಗಿ ಆರಾಧ್ಯ ಸ್ವರೂಪದ ಆದರ್ಶಗಳಾಗಿ ಹೊರಹೊಮ್ಮಿವೆ. ಅಂತಹ ಮಹತ್ವದ ಲೇಖಕರಲ್ಲಿ ಜಯದೇವಿತಾಯಿ ಲಿಗಾಡೆಯವರು ಪ್ರಮುಖರಾಗಿ ಗುರುತಿಸಿಕೊಳ್ಳುತ್ತಾರೆ. ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆ ಮತ್ತು ಸಾಹಿತ್ಯವನ್ನೇ ತನ್ನ ಆರಾಧ್ಯ ದೈವವೆಂದು ಭಾವಿಸಿದ ಇವರು ಕನ್ನಡ ನುಡಿಕ್ರಿಯಾಶೀಲರು. ಅವರ ಬದುಕೇ ಒಂದು ಮಹಾಕಾವ್ಯ. ಅವರ ತಾತನವರಾದ ವಾರದ ಮಲ್ಲಪ್ಪನವರ ಶೈಕ್ಷಣಿಕ ಕಾಳಜಿಗಳು ಲಿಗಾಡೆ ಅವರನ್ನು ಕನ್ನಡ ನುಡಿಕೈಂಕರ್ಯಕ್ಕೆ ನೂಕಿದವು. ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕವಾದ, ಶೈಕ್ಷಣಿಕವಾದ, ಜೀವದಯಾಪರವಾದ ಕ್ರಿಯಾಶೀಲ ಚಟುವಟಿಕೆಗಳು ಅವರಲ್ಲಿ ಪ್ರಬಲವಾಗಿ ಬೇರೂರಲು ವಾರದ ಮಲ್ಲಪ್ಪನವರ ಸಾಮಾಜಿಕ ಚಳುವಳಿಯು ಕಾರಣವಾಗಿದ್ದಿತು. ತಾಳ್ಮೆ, ಜಾಣ್ಮೆ, ಬದುಕಿನ ಸೂಕ್ಷ್ಮತೆಗಳು, ನೊಂದವರಿಗೆ ಸ್ಪಂದಿಸುವ ಗುಣ ಇತ್ಯಾದಿಗಳು ಅವರ ಸ್ವಭಾವದ ವೈಶಿಷ್ಟ್ಯಗಳಾಗಿದ್ದವು. ಶರಣರ ಹಿತನುಡಿಗಳು, ವಚನಸಂಗೀತ, ವಚನ ವೈಚಾರಿಕತೆಗಳು ಅವರ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವದಲ್ಲಿ ಮೇಳೈದಿದ್ದವು. ಹೆಣ್ಣುಮಕ್ಕಳಿಗಾಗಿಯೇ ವಾರದ ಮಲ್ಲಪ್ಪನವರು ಸ್ಥಾಪಿಸಿದ 'ವೀರಶೈವ ಮಹಿಳಾಜ್ಞಾನಮಂದಿರ'ವು ಅವರ ಕ್ರಿಯಾಸಿದ್ಧಿಯ ಕರ್ಮಭೂಮಿಯಾಯಿತು. ಜಯದೇವಿ ತಾಯಿಯು ಕನ್ನಡ ತಾಯಿಗೆ ಉಡಿಯನ್ನು ತುಂಬಿ, ಕನ್ನಡ ಪದಗಳ ಆಭರಣವನ್ನು ತೊಡಿಸಿ ಮಹಾರಾಷ್ಟ್ರದ ಗಡಿಪ್ರದೇಶದಲ್ಲಿ ಕನ್ನಡತನವನ್ನು ಮೆರೆದವರು. ಇವರ ಸೇವೆಯನ್ನು ಗುರುತಿಸಿ 1974 ಮಂಡ್ಯ ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸಮ್ಮೇಳದ ಅಧ್ಯಕ್ಷತೆಯು ಸಿಕ್ಕಾಗ ಇಡೀ ಸ್ತ್ರೀಸಂಕುಲ ಹರ್ಷಪಟ್ಟಿತು. ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸಮ್ಮೇಳನದ ಮೊದಲ ಮಹಿಳಾ ಅಧ್ಯಕ್ಷತೆಯ ಪಟ್ಟವು ದೊರೆತದ್ದು ನಾಡಿಗೆ ಹರ್ಷವನ್ನುಂಟುಮಾಡಿತು.

ಪ್ರಕಾಶನ
ಪ್ರತಿಭಾನ
(ಒಂದು ಬೌದ್ಧಿಕ ಹಾಗೂ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಸಂಸ್ಥೆ)
ನಂ.133, ಶಿವಾದ್ವೈತ, ಸೆಕ್ಟರ 2, ಶಿವಬಸವನಗರ, ಬೆಳಗಾವಿ-590010

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE

ಅಭಿಜಾತ ಕನ್ನಡ

(ದ್ವೈಮಾಸಿಕ ಸಂಶೋಧನಾ ಪತ್ರಿಕೆ)

ISSN - 2347 -4017

ಜುಲೈ – ಆಗಸ್ಟ್ ೨೦೨೦

ಸಂಪುಟ ೬, ಸಂಚಿಕೆ – ೪

ಪ್ರಧಾನ ಸಂಪಾದಕರು

ಪ್ರೊ. ಎಸ್.ಎಂ. ಗಂಗಾಧರಯ್ಯ

ಸಂಪಾದಕರು

ಡಾ. ಕೆ.ಎಂ. ರೋಹಿಣಿ

ಡಾ. ಕೊಟ್ರಸ್ವಾಮಿ. ಎ.ಎಂ.ಎಂ.

ಡಾ. ಶೋಭಾ ನಾಯಕ

ಡಾ. ಸಾವುಕಾರ ಎಸ್. ಕಾಂಬಳೆ

ಡಾ. ನಾರಾಯಣ ಎಂ. ನಾಯ್ಕ

ಪ್ರಕಾಶನ

ಪ್ರತಿಭಾನ

(ಒಂದು ಬೌದ್ಧಿಕ ಹಾಗೂ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಸಂಸ್ಥೆ)

ನಂ. ೧೩೩, ಶಿವಾದ್ವೈತ, ಸೆಕ್ಟರ್ ೨

ಶಿವಬಸವನಗರ, ಬೆಳಗಾವಿ – ೫೯೦೦೧೦

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE.

Contents Page

೧೧. ಕನಕದಾಸರ ಸಾಹಿತ್ಯ : ಆಹಾರ ಸಂಘರ್ಷದ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ನೆಲೆಗಳು / 98
■ ಡಾ. ಬಸವರಾಜ ಕುಂಬಾರ

೧೨. ಕನ್ನಡ ಕಥನ ಸಾಹಿತ್ಯ : ಮಹಿಳೆಯರ ಪ್ರತಿರೋಧ ನೆಲೆಗಳು / 107
■ ಸವಿತಾ ಎಂ. ಬಿಜಕಲ್ಲ

೧೩. ದಾಸ ಸಾಹಿತ್ಯ ಹಾಗೂ ಭಕ್ತಿ ಪರಂಪರೆ / 116
■ ಡಾ. ಗುಡ್ಡಪ್ಪ ಜಿ.

೧೪. ರತ್ನಾಕರವರ್ಣಿಯ ಕಾಲದ ನಾಟಕಶಾಲೆ : ಒಂದು ವಿಶ್ಲೇಷಣೆ / 122
■ ಡಾ. ಮಲ್ಲಯ್ಯ ಸಂಡೂರು

❖❖

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE

First Page of Publication

೧೧. ಕನಕದಾಸರ ಸಾಹಿತ್ಯ: ಆಹಾರ ಸಂಘರ್ಷದ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ನೆಲೆಗಳು

■

ಡಾ. ಬಸವರಾಜ ಕುಂಬಾರ

ಕರ್ನಾಟಕದ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಸಾಹಿತ್ಯಿಕ ಇತಿಹಾಸದಲ್ಲಿ ಕನಕದಾಸರಿಗೆ ವಿಶಿಷ್ಟವಾದ ಸ್ಥಾನವಿದೆ. ಕವಿಯಾಗಿ, ಕಲಿಯಾಗಿ, ಹರಿದಾಸರಾಗಿ, ಸಂತರಾಗಿ ಬಾಳಿದ ಅನುಪಮ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವ ಕನಕದಾಸರದ್ದು. ಸಮಾಜದ ಕೆಳ ವರ್ಗದಿಂದ ಬಂದ ಕನಕದಾಸರು ಪ್ರತಿಭೆ ಪಾಂಡಿತ್ಯದಿಂದ ಸ್ವಪ್ರಯತ್ನ ಸಾಧನೆಯಿಂದ ಬೆಳೆದರು. ಅಪರೋಕ್ಷ ಜ್ಞಾನಿಗಳೆಂದು ಖ್ಯಾತರಾದ, ಕನಕದಾಸರು ದಾಸ ಸಾಹಿತ್ಯಕ್ಕೂ, ಕನ್ನಡ ಕಾವ್ಯ ಪ್ರಪಂಚಕ್ಕೂ ಮಹತ್ವವಾದ ಕೊಡುಗೆ ನೀಡಿದ್ದಾರೆ. ಕನಕದಾಸರು ಇಂದು ಪುನರ್ ಚಿಂತನೆಗೆ ಅವರು ಬಹಳ ಮಟ್ಟಿಗೆ ವಸ್ತುವಾಗಿದ್ದಾರೆ. ಭಾರತೀಯ ಸಾಮಾಜಿಕ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಕನಕದಾಸರು ಪುನರ್ ಚಿಂತನೆಗೆ ಕಾರಣರಾಗುತ್ತಾರೆ ಎಂದರೆ ಅವರಲ್ಲಿ ಬೆಳೆಯುತ್ತಿರುವ ಸಂಘರ್ಷಗಳಿವೆ ಎಂದು ಅರ್ಥ. ಕನಕದಾಸರು ಚಾರಿತ್ರಿಕ, ಸಾಮಾಜಿಕ ಜೀವನ ಮತ್ತು ಕಾವ್ಯಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ ಮಿಥ್ಯಕ್ಕೆ ಸೇರಿದ್ದವರು. ಕನಕದಾಸರು ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಧಾರ್ಮಿಕ ಅವಸ್ಥಾಂತರದ ಮೂಲಕ ಸಂಸ್ಕೃತೀಕರಣಕ್ಕೆ ಕಾರಣರಾಗಿದ್ದಾರೆ.

ಕನಕದಾಸರು ಕ್ರಿ.ಶ. ೧೫೦೮–೧೬೦೬ ರ ಸುಮಾರಿನಲ್ಲಿ ಬಾಳಿಬದುಕಿದವರು. ವಿಜಯನಗರ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯದ ಏಳುಬೀಳುಗಳನ್ನು ಕಣ್ಣಾರೆ ಕಂಡಿದ್ದವರು. ಕನಕದಾಸರ

ಡಾ. ಬಸವರಾಜ ಕುಂಬಾರ : ಕನ್ನಡ ಉಪನ್ಯಾಸಕರು, ಬಸವೇಶ್ವರ ವಾಣಿಜ್ಯ ಮಹಾವಿದ್ಯಾಲಯ, ಬಾಗಲಕೋಟ

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE

ಜೀವನವೇ ಒಂದು ಅಮರಕಥೆಯಾಗಿದೆ. ಅವರ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಜರುಗುವ ಎಲ್ಲಾ ಘಟನೆಗಳನ್ನು ಮೀರಿ ರಾಮಾಯಣ, ಮಹಾಭಾರತ, ಭಾಗವತ, ಕಾವ್ಯಶಾಸ್ತ್ರ, ವ್ಯಾಕರಣ ಗ್ರಂಥಗಳನ್ನು ಅಧ್ಯಯನ ಮಾಡಿದರಲ್ಲದೆ ಯುದ್ಧ ವಿದ್ಯೆಗಳನ್ನು ಕಲಿತವರು. ಶ್ರೀ ಹರಿಯ ವರದಂತೆ ಕನಕನಾಯಕ ವಿಜಯನಗರಕ್ಕೆ ಬಂದು ವ್ಯಾಸರಾಯರಿಂದ ದಾಸದೀಕ್ಷೆ ಪಡೆದು ತಿಮ್ಮಪ್ಪನಿಂದ ಕನಕದಾಸನಾಗಿ ಹರಿಭಕ್ತಿಯ ಬೆಳಕನ್ನು ಕೀರ್ತನೆಗಳ ಮೂಲಕ ಹರಡಿದರು. ಕುರುಬ ಜನಾಂಗದಿಂದ ಬಂದ ಕನಕದಾಸರಲ್ಲಿ ಅಪಾರವಾದ ಅನನ್ಯವಾದ ದೈವಶ್ರದ್ಧೆ, ವಿಫುಲವಾದ ಸಂಕಲ್ಪಶಕ್ತಿ ಇರುವುದನ್ನು ಗುರುಗಳಾದ ವ್ಯಾಸರಾಯರು ಗುರುತಿಸಿದರು. ಅವರ ಪ್ರತಿಭೆಗೆ ಚಾಲನೆ ಕೊಡಲು ವ್ಯಾಸರಾಯರು ನಿರ್ಧರಿಸಿದರು. ಕನಕದಾಸರು ಹರಿದಾಸರಾಗಿ ಹರಿಭಕ್ತಿ ಕೇಂದ್ರಗಳಾದ ಪುಣ್ಯಸ್ಥಳಗಳನ್ನು ಸಂದರ್ಶಿದರು. ಕನಕದಾಸರು ಕವಿಯಾಗಿ ವೈವಿಧ್ಯಮಯ ಕಾವ್ಯಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದಂತೆ ಅಸಂಖ್ಯಾತ ಕೀರ್ತನೆಗಳನ್ನು ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಕನಕದಾಸರ ಕೀರ್ತನೆಗಳು ಅವರ ವ್ಯಕ್ತಿತ್ವದ ವಿವಿಧ ಮುಖಗಳನ್ನು ಪ್ರತಿಬಿಂಬಿಸುತ್ತವೆ. ಭಕ್ತಿ. ಜ್ಞಾನ, ವೈರಾಗ್ಯ, ಜಾತಿಪ್ರಶ್ನೆ, ವೈದಿಕ ಪರಂಪರೆಯೊಂದಿಗೆ ಸಂಘರ್ಷ, ಪ್ರತಿರೋಧದ ನೆಲೆಗಳು, ಸೌಂದರ್ಯಪ್ರಜ್ಞೆಯ ಜೊತೆಗೆ ಸಾಹಿತ್ಯ, ಆಹಾರ, ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಸಂಘರ್ಷದ ನೆಲೆಗಳ ಹಿನ್ನಲೆಯಲ್ಲಿ ಹಲವಾರು ಆಯಾಮದ ಚರ್ಚೆ ಚಾಚಿಕೊಂಡಿದೆ.

ಕನಕದಾಸರ ಕೀರ್ತನೆಗಳಲ್ಲಿ ಸಾಹಿತ್ಯಕ ಆಹಾರ ಸಾಮಾಜಿಕ ಮೌಲ್ಯಗಳಿವೆ. ಸಮಾನತೆಯ ಆದರ್ಶವಿದೆ. ಕನಕದಾಸರು ಮತಧರ್ಮಗಳಿಗಿಂತಲೂ ಹೆಚ್ಚಿಗೆ ಮನುಷ್ಯನ ಅಂತಸ್ಸತ್ವವನ್ನು ಜಾಗೃತಗೊಳಿಸಿವುದು ಮುಖ್ಯವಾದಂತೆ ತೋರುವುದು. ದೇಹ ನಶ್ವರವೆಂದು ಅವರು ಭಾವಿಸಿದ್ದಲ್ಲದೆ ವಿಷಯಾಸಕ್ತಿ ಮಾನವನ ಬಾಳಿಗೆ ಹಾನಿಕಾರಕವೆಂದು ಪ್ರಕಟಿಸಿದರು. ಮಾನವ ಜೀವನದ ರಾಗಭಾವಗಳಿವೆ. ವಿವಿದ ಅವಸ್ಥೆಗಳ ಬಗೆಗೆ ಕನಕದಾಸರು ತಮ್ಮ ಮುಕ್ತ ಮನಸ್ಸಿನ ಚಿಂತನೆಗಳನ್ನು ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸಿದರು. ಕನಕದಾಸರ ಸಾಹಿತ್ಯ ಹಾಗೂ ಕೀರ್ತನೆಯಲ್ಲಿ ಲೋಕಜೀವನದ ಆದರ್ಶ ಮೌಲ್ಯ ಚರ್ಚಿತವಾಗಿದೆ. ಕನಕದಾಸರು ಸರಳ ಸುಂದರವಾದ ಉಪಮೆ, ರೂಪಕ, ಶ್ಲೇಷ ಮೊದಲಾದ ಅಲಂಕಾರ ಸೌಂದರ್ಯವನ್ನು ಪಡೆದುಕೊಂಡಿವೆ. ಕೃತಿ, ಕೀರ್ತನೆಗಳಲ್ಲಿ ಕೊಡುವ ದೃಷ್ಟಾಂತಗಳು ಮನಮುಟ್ಟುವಂತಿವೆ. ಕವಿಯಾಗಿ ವೈವಿಧ್ಯಮಯ ಕೀರ್ತನೆ, ಮುಂಡಿಗೆ. ಸುಳಾದಿಗಳನ್ನು, ವಿವಿಧ ಷಟ್ಪದಿಯಲ್ಲಿ ಕೃತಿ ರಚಿಸಿದ್ದಾರೆ. ವಸ್ತು ವೈವಿದ್ಯವಿದೆ ಸಮಾಜದ ಡಂಬಾಚಾರವನ್ನು ಕರ್ಮಠತನವನ್ನು ಅವರು ವಿರೋಧಿಸಿದರು. ಆ ವಿರೋಧ ಸಾಹಿತ್ಯ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಮುಖಾಂತರ ಆಹಾರ ವಿಷಯದಲ್ಲೂ ಸಂಘರ್ಷ ಮೂಡಿಬಂದಿದೆ. ಕನಕದಾಸರ ಬಂಡಾಯ ಧೋರಣೆಯನ್ನು ಹೊರಗಿನ, ಒಂಟಿಯಾದ, ಭಾರತೀಯ ಪರಂಪರೆಗೆ

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE
BAGALKOTE

ಜೋಡಿಸಿಕೊಳ್ಳದ ಒಂದು ಧ್ವನಿ ಎಂತಲೋ, ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಎಂತಲೋ ಪರಿಭಾವಿಸುತ್ತವೆ. ಇದಕ್ಕೆ ಕಾರಣ ನಮ್ಮ ಬಂಡಾಯ ಪರಿಕಲ್ಪನೆಯ ವರ್ಗ ಹೋರಾಟದ ಜೊತೆಗೆ ಸೀಮಿತಗೊಂಡಿರುವುದು.

ಕನಕದಾಸರು ಬಂಡಾಯವನ್ನು ಒಂದು ಪದ್ಧತಿಯು ಅಲ್ಲ, ಮೌಲ್ಯವೂ ಅಲ್ಲ, ಅದೊಂದು ಪ್ರವೃತ್ತಿಯಂದುಕೊಂಡವರು. ಗತಿಶೀಲತೆಯನ್ನು ಕಳೆದುಕೊಂಡು ಮತ್ತು ಚಲನಶೀಲ ಸಮಾಜವೊಂದರ ನಿರೀಕ್ಷಣೆಯ ಮಧ್ಯೆ ತಾತ್ಕಾಲಿಕವಾಗೋ ಬಹುಕಾಲದವರೆಗೂ ಹುಟ್ಟಿದ ಒಂದು ನಡತೆ. ವಿಶಿಷ್ಟಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ವಚನ ಚಳುವಳಿ, ಸರಳಾರ್ಥದಲ್ಲಿ ದಾಸಪಂತ, ಬಂಡಾಯ ಪ್ರವೃತ್ತಿಯು ವಚನ ಚಳುವಳಿಯ ದೈವತ್ವದ ಪ್ರಾಧಿಮೆ ಮತ್ತು ಸಮಗ್ರೀಕರಣ ಮತ್ತು ಪಂತ ಸ್ವಭಾವಕ್ಕೆ ಸೀಮಿತವಾಗಿದೆ. ಎರಡೂ ನಿರೀಸ್ವರವಾದಕ್ಕೆ ಪ್ರತಿಭಟನೆಗಳಾದರೂ ವಚನ ಚಳುವಳಿಯ ಸಾಮಾಜಿಕ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಸಮಾನತೆಯ ಆಧಾರದ ಮೇಲೆ ಹುಟ್ಟಿಕೊಂಡಿವೆ. ದಾಸಪಂಥ ಸರಳ ಸಂಸ್ಕೃತೀಕರಣ ಪ್ರಕ್ರಿಯೆಗಳಲ್ಲಿ ಕನಕದಾಸರ ಆಹಾರ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಸಂಘರ್ಷದ ನೆಲೆಗಳ ಪ್ರತಿಭಟನೆ ಬಂಡಾಯವನ್ನು ಈ ಪರಿವೇಶದ ಒಳಗೆ ನೋಡಬೇಕಾಗುತ್ತದೆ. ತನ್ನೊಳಗೆ ಮತ್ತು ಇತರರ ಮೇಲುಜಾತಿಯ ಶಿಷ್ಯರೊಳಗೆ ಕನಕದಾಸರು ಹೇಗೆ ಉನ್ನತವಾದರು ಎಂಬುದು ಆಹಾರ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯ ಸಂಘರ್ಷದಲ್ಲೂ ಕಾಣುವುದು. ಕನಕದಾಸರ ಬಂಡಾಯ ಪ್ರವೃತ್ತಿಗೆ ಮಾದರಿಯಾಗಿ 'ರಾಮಧಾನ್ಯ ಚರಿತೆ'ಯನ್ನು ಹಲವು ವಿದ್ವಾಂಸರು ಉಲ್ಲೇಖಿಸಿದರು. ಕೀರ್ತನೆಗಳಲ್ಲಿ ಕೂಡ ಕೆಲವರು ಅವರನ್ನು ಬಂಡಾಯಗಾರರನ್ನಾಗಿ ಪ್ರತಿನಿಧಿಸಿವೆ.

ರಾಮಧಾನ್ಯ ಚರಿತೆಯ ಕುರಿತು ದೇಜಗೌ, ಚಿದಾನಂದ ಮೂರ್ತಿ, ಡಾ. ಎಚ್.ಜೆ.ಲಕ್ಕಪ್ಪಗೌಡರ, ಡಾ. ಹಾ.ಮಾ. ನಾಯಕರವರು ರಾಮಧಾನ್ಯದ ಧ್ವನಿ ಗುರುತಿಸುವಾಗ ಹಲವಾರು ಆಯಾಮದ ಚರ್ಚೆಗಳು ಕಾಣುವವು. ಪ್ರಾರಂಭದಲ್ಲಿ ರಾಮನನ್ನು ಸ್ತುತಿಸುತ್ತಾ 'ಭೂಮಿಗಚ್ಚರಿಯಾಗಿ ಪೇಳುವೆನೀ ಮಹಾಕತೆಯ' ಎಂದು ಕತೆಯನ್ನು ವಿಸ್ತರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಶ್ರೀ ರಾಮಚಂದ್ರನ ಚರಿತ್ರೆಯಲ್ಲಿಯೇ ನರದೆಗಲ ಮತ್ತು ವ್ರಿಹಿಯರ ಕಥೆಯನ್ನು ಹೇಳುತ್ತಾರೆ. ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರನು ತಂದೆಯ ಮಾತಿನಂತೆ ಸೀತಾ ಲಕ್ಷ್ಮಣರ ಸವೇತ ಅರಣ್ಯಕ್ಕೆ ಹೋದಾಗ ರಾವನು ಸುಗ್ರೀವಾಂಜನೇಯರೊಡನೆ ಹೋಗಿ ವಾಲಿಯನ್ನು ಕೊಂದು ಲಂಕೆಗೆ ಮುತ್ತಿಗೆ ಹಾಕಿ ರಾವಣ, ಕುಂಭಕರ್ಣಾದಿಗಳನ್ನು ಕೊಂದು ವಿಭೀಷಣನಿಗೆ ಪಟ್ಟಕಟ್ಟಿ ತನ್ನ ಬಳಗದವರೊಂದಿಗೆ ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮಹರ್ಷಿಗಳ ಆಶ್ರಮಕ್ಕೆ ಬರುವನು. ಅಲ್ಲಿ ನೆರದ ಮಹಾಮುನಿಗಳೆಲ್ಲರೂ ಶ್ರೀರಾಮನನ್ನು ಹರಸಿ ರಾವಣನನ್ನು ಸಂಹರಿಸಿ ಮುನಿಗಳನ್ನು ಪಾಲಿಸಿದೆ ಎಂದು ಹೊಗಳಿದರು. ಇದಕ್ಕೆ ಶ್ರೀರಾಮನು ನಮಗೆ ನಿಮ್ಮಡಿಯ ಕರುಣಾರಸವೇ ಸಲಹುವುದು ಎಂದು ಹೇಳಿ ಮುನಿಗಳನ್ನು ಉಪಚರಿಸಿ

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE
BAGALKOTE

ಕುಳ್ಳಿರಿಸಿದನು. ಎಲ್ಲರೂ ಸಂತೋಷದಿಂದ ಇರುತಿರಲು ಮುನಿಗಳು ಸುಭಕ್ಷ್ಯಗಳನ್ನೆಲ್ಲವನ್ನುತಂದು ಇರಿಸಿದರು. ರಾಮನು ನಸುನಗುತ್ತಾ ತನ್ನ ನಿಜಬಲಕರನ್ನು ಕರೆಸಿ ರುಚಿ ನೋಡೆಂದ. ರುಚಿ ನೋಡಿದ ವಾನರರು ಬಹಳ ಚನ್ನಾಗಿದೆ ಎಂದು ಮುನಿವರರನ್ನು ಕೊಂಡಾಡಿದರು. ಆಂಜನೇಯನು ಧಾನ್ಯದ ತನುವ ಈ ಕ್ಷಣವ ತರಿಸಿ ಎಂದು ಶ್ರೀರಾಮನಲ್ಲಿ ಭಿನ್ನವಿಸಿಕೊಂಡನು. ಶ್ರೀರಾಮನು ಗೌತಮ ಮುನಿಗಳಿಗೆ ಹೇಳಿ ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು ತರಿಸಿದನು. ನರೆದೆಲೆಗ, ನೆಲ್ಲು, ಹಾರಕ, ಬರಗು, ಜೋಳ, ಕಂಬು, ಸಾಮೆ, ಗೋಧಿ, ನವಣೆ ಎಂಬ ನವಧಾನ್ಯಗಳ ರಾಶಿ ಬಿತ್ತು. ಇದರಲ್ಲಿ ಯಾವುದು ಶ್ರೇಷ್ಠ ಎಂದು ಅರಸನು ಕೇಳಿದನು. ಅಲ್ಲಿದ್ದ ಮುನೀಶ್ವರರು ಒಂದೊಂದನ್ನು ಹೇಳಿದರು. ಶ್ರೀರಾಮನು 'ಹಲವುಗಳೇಕೆ ಒಂದನ್ನೆ ಹೇಳಿ' ಎಂದು ಗೌತಮ ಮುನಿಗಳನ್ನು ಕೇಳಿದಾಗ ಇವರು 'ದೇಶಕತಿಶಯ ನರೆದಲೆಗನೆ ವಾಸಿ' ಎಂದು ಹೇಳಿದರು. ಗೌತಮರ ಈ ಮಾತು ಕೇಳಿ ವ್ರಿಹಿ(ನೆಲ್ಲು) ಸಿಟ್ಟಾಗಿ ಮುನಿಗಳೆ ನೀವು ಪಕ್ಷಪಾತ ಮಾಡಬಾರದಾಗಿತ್ತು. ಗೋಧಿ, ನಾನು ಮೊದಲಾದ ಧಾನ್ಯಗಳಿರಲು ನರದೆಲಗನೆ ಶ್ರೇಷ್ಠ ಎಂಬುದು ಮತವಲ್ಲ ಎಂದು ಹೇಳಿ ಅದಕ್ಕೆ ಅವರು ಏನು ಹೇಳುವರೆಂಬುದನ್ನು ಕೇಳದೆ ನರದೆಲಗನ ಮೇಲೆರೇಗುತ್ತದೆ. ಏನೆಲವೋ ನರದೆಲಗ ನೀನು ಸಮಾನನೆಯನಗಿಲ್ಲಿ? ಮತಿಹೀನ ನೀನು? ಕುಲಹೀನ ನೀನು? ನೀನು ಪ್ರತಿಷ್ಠನೆ? ನಿನ್ನನ್ನು ಸುಡಬೇಕು! ಲೋಕದಲಿ ಅಧಿಕ ಜ್ಞಾನಿಗಳು ಜರೆದು ನಿರಾಕರಿಸಿ ಬಿಡಲೆಂದು ನೀ ಶೂದ್ರಾಣ್ಣವಾದೆಯಲ್ಲ. ಸಾಕು ಬಿಡು ನೀನಾವ ಮಾನ್ಯನು ಕಡೆಗೆ ತೊಲಗೆಂದ ತನ್ನ ಮಹಿಮೆಯನ್ನು ಹೇಳಿಕೊಳ್ಳಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿತು. ನಾನು ಒಳ್ಳೆಯ ವ್ರತಗಳಲ್ಲಿ, ಪರಮ ಮಂತ್ರಾಕ್ಷತೆಗಳಲ್ಲಿ, ಶುಭಶೋಭನದ ಆರತಿಗಳಲ್ಲಿ, ದೇವರ ನೈವೇದ್ಯದಲ್ಲಿ, ಭೂಸುರರ ಮನೆಯಲ್ಲಿ ನಾನು ಯೋಗ್ಯನು. ನಿನ್ನಾವ ಯೋಗ್ಯನೋ ಭ್ರಷ್ಠ ತೊಲಗೆಂದ. ಆ ಸಂದರ್ಭದ ವರ್ಣನೆ ಹೀಗಿದೆ.

"ಪರಿಮಳದ ಚಂದನದ ತರುವಿಗೆ
ಸರಿಯೆ ವೊಣಗಿದ ಕಾಷ್ಠ ಗೋವಧ
ಕರೆದ ಹಾಲಿಗೆ ಕುರಿಯ ಹಾಲಂತರವೆ ಭಾವಿಸಲು।
ಪರಮ ಸಾಹಸಿ ವೀರಹನುಮಗೆ
ಮರದ ಮೇಲಣ ಕಪಿಯು ತಾನಂ
ತರವೆ ಫಡ ನೀನೇನಗೆ ಸರಿಯೇ ಬ್ರಷ್ಟ ತೊಲಗೆಂದ" ॥೪೨॥

ಅಲ್ಲದೆ ತಾನು ಸುರನದಿ, ಗರುಡ, ಹಂಸ, ಕೋಗಿಲೆ ಎಂದು ಹೊಗಳಿಕೊಂಡು ನೆರದಲೆಗನಿಗೆ ಹಳ್ಳ, ಹದ್ದು, ಬಕ, ವಾಯಸ ಎಂದು ಹೀಯಾಳಿಸಿ ನುಡಿಯುವನು. ಇದನ್ನೆಲ್ಲ ಕೇಳಿದ ನೆದಲೆಗ ಕಂಗಟ್ಟು ಸೀಡಿಲ ಘರ್ಜನೆಯಂತೆ

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE.

ವ್ರಿಹಿಯನ್ನು ಜರೆಯುತ್ತಾನೆ. ನುಡಿಗೆ ಹೇಸದ ಬಂಡೆ ನಿನ್ನೊಡನೆ ಮಾತೇಕೆ, ಸತ್ವಹೀನನು ನೀನು ಬಡವರನ್ನು ಕಣ್ಣೆತ್ತಿ ನೋಡದವ. ಶ್ರೀಮಂತರನ್ನು ಬೆನ್ನತ್ತಿ ಹೋಗುವವ, ಬಾನಂತಿಗಳಿಗೆ, ರೋಗಿಗಳಿಗೆ ಪತ್ಯ ನೀನು. ಸತ್ತ ಹೆಣದ ಬಾಯಿಗೆ ತುತ್ತು ನೀನು, ನಿನ್ನ ಜನ್ಮ ನಿರರ್ಥಕ ಎಂದು ಹೇಳಿ ತನ್ನ ಜನ್ಮ ಎಷ್ಟು ಸಾರ್ಥಕವೆಂಬುದನ್ನು ನರದೆಲಗವು ಹೀಗೆ ಹೇಳುವುದು.

"ಮಳೆದಗದು ಬೆಳೆಯಡಗಿ ಕ್ಷಾಮದ
ವಿಲಿಯ ಕಾಲದೊಳನ್ನವಿಲ್ಲದೆ
ಅಳಿವ ಪ್ರಾಣಿಗಳಾದರಿಸಿ ಸಲಹುವೆನು ಜಗವರಿಯೆ।
ಎಲ್ಲವೊ ನೀನೆಲ್ಲಿಹೆಯೋ ನಿನ್ನಯ
ಬಳಗವದು ತಾನೆಲ್ಲಿಹುದು ಯಾ
ಹಲವು ಹುಲುಧಾನ್ಯಗಳೆನಗೆ ಸರಿದೊರೆಯೆ ಕೇಳೆಂದ ॥೪೭॥

ಆಗ ವ್ರಿಹಿ ನಾನು ಕಳೆತಾಗ ಮಧುಪಾನವಾಗುತ್ತೇನೆ. ನೀನು ಕಳೆತಾಗ ತಿಂದರೆ ಹುಚ್ಚು ಹಿಡಿದು ಬುದ್ಧಿಹೀನರಾಗುತ್ತಾರೆ. ಆಗ ನರದೆಲಗ ಸಾಕು ಮಾಡು ನಿನ್ನ ಅತಿಶಯದ ಮಾತುಗಳನ್ನು ನಿನ್ನೊಂದಿಗೆ ಮಾತನಾಡುವುದು ಹುರುಳಿಲ್ಲವೆಂದು ಸಭೆಯನ್ನುದ್ದೇಶಿಸಿ ನೀವೇ ತಿರ್ಮಾನಿಸಿ ಹೇಳಲು ಕೇಳಿಕೊಂಡಿತು. ಆಗ ಶ್ರೀರಾಮನು ಇವರ ನ್ಯಾಯ ಬಗೆಹರಿಸುವದು ಹೇಗೆ ಎಂದು ಯೋಚಿಸುತ್ತಾ, ಈ ನ್ಯಾಯವನ್ನು ಬಗೆಹರಿಸಲು ಹರಿಹರ ವಿರಂಚಾದ್ಯರನ್ನ ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಕರೆಯಿಸಲು ಶ್ರೀರಾಮನು ಆಶ್ವಾಸನೆಯನ್ನು ನೀಡಿದನು. ಅವರು ಗುಣಾವಗುಣಗಳನ್ನು ನೋಡಿ ಅಳೆಯುತ್ತಾರೆ. ಅಲ್ಲಿಯವರೆ ಆರು ತಿಂಗಳು ಸೆರೆವಾಸದಲ್ಲಿರಬೇಕೆಂದು ರಾಜಾಜ್ಞೆ ಮಾಡಿ ಗೌತಮರಿಗೆ ಒಪ್ಪಿಸಿ ಅಯೋದ್ಯೆಗೆ ಹೊರಟುಹೋದನು. ಆಗ ನರದೆಲಗ ನಮ್ಮನ್ನು ಸೆರೆಮನೆಗೆ ನೂಕಿ ಸಂಪತ್ತಿನ ಸುಖದಲ್ಲಿ ಮರೆಯದಿರಿಯಂದು ಕೈ ಮುಗಿದು ಕೇಳಿಕೊಂಡಿತು. ಈ ಮಾತಿಗೆ ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ ಭರವಸೆಯ ಮಾತನು ಆಡಿದನು. ಆರು ತಿಂಗಳ ತರುವಾಯ ಪಟ್ಟಾಧಿಕಾರದ ಏರ್ಪಾಡು ನಡೆಯಿತು. ಈ ಕಾರ್ಯಕ್ರಮಕ್ಕೆ ಸಕಲ ರಾಜರಾಧಿರಾಜರಾದಿಯಾಗಿ, ಅತ್ರಿ, ಭಾರದ್ವಾಜ, ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರ, ವಾಮದೇವ, ಅಗಸ್ತ್ಯ, ಕಣ್ವ, ಅಂಗೀರಸ, ಮಾರ್ಕಂಡೆಯ, ವಾಲ್ಮೀಕಿ ಮುಂತಾದ ಮುನಿ ಉತ್ತಮರು, ವಿದ್ವಾಂಸರು, ಕವೀಶ್ವರರು, ನೆರೆದರು. ಶ್ರೀರಾಮನಿಗೆ ಪಟ್ಟಾಭೀಷೆಕವನ್ನು ಕಟ್ಟಿದರು. ವಿಜೃಂಭಣೆಯ ಆಡಂಬರ, ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಕಾರ್ಯಚಟುವಟಿಕೆಯ ಸಂತೋಷದಲ್ಲಿ ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರ ರಾಗಿಗೆ ನೀಡಿದ ವಚನ ಮರೆಯಲಿಲ್ಲ. ಮರುದಿನವೆ ಓಲಗದಲ್ಲಿ ಕುಳಿತು ನಸುನಗುತ್ತಾ ನೆರೆದಲೆಗ ಮತ್ತು ವ್ರಿಹಿ ಸೆರೆಯೊಳಗಿದ್ದು ಏಳು ತಿಂಗಳುಗಳೆ ಕಳೆದಿವೆ. ಅವರನ್ನು ಕರೆಯಲು ಆಂಜನೇಯನಿಗೆ ಆಜ್ಞೆ ಮಾಡಿದನು. ಆಜ್ಞೆಯಂತೆ

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE

ಪಂಚನದಿಂತು ಬಳಿ ಬಂದು ಗೌತಮರಿಗೆ ವಂದಿಸಿ ಸೆರಮನೆಯೊಳಗಿದ್ದವರನ್ನು ಕರೆದುಕೊಂಡು ಅಯೋಧ್ಯೆಗೆ ಬಂದನು. ಗೌತಮ ಮುನಿಗಳನ್ನು ಸತ್ಕರಿಸಿ ರಾಜಮಂದಿರದಲ್ಲಿ ಕುಳಿರಿಸಿದನು. ಇವರ ನ್ಯಾಯ ಬಗೆಹರಿಸಬೇಕೆಂದು ಶ್ರೀರಾಮನು ಹೃದಯ ಶುದ್ಧಿಯಲ್ಲಿ ತ್ರೈಭುವನಕರ್ತರು, ಇಂದ್ರ ಮೊದಲಾದ ಮಹನಿಯರನ್ನು ನೆನೆದನು. ತಕ್ಷಣಕ್ಕೆ ಅವರೆಲ್ಲ ಓಲಗಕ್ಕೆ ಬಂದರು. ಅಲ್ಲಿ ಭೋಜಾಂಗಮರಸರು, ಕಿನ್ನರಿ, ಯಕ್ಷರಾಕ್ಷಸರು, ಸೂರ್ಯ, ಚಂದ್ರ ಮುಂತಾದ ಮಹಾಮಹಿಮರು, ಕ್ಷತ್ರಿಯರು, ವರ್ತಕರು, ಕುಶಲ ಬುದ್ಧಿವಂತರು ನೆರೆದಿದ್ದರು. ಇಂತಹ ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಬುದ್ಧಿವಂತನಾದ ನರದೆಲಗ ಕೈ ಮುಗಿದು "ಧರಣಿಕಾಂತ ರಘುವರನೆ ಸುಬುದ್ಧಿಯನೆಂತು ನಮಗರುಹುವಿರದ ಪೇಳೆಂದ". ಆಗ ರಾಮನೃಪಾಲ ಘನ ತಪೋಮಹಿರಿಗೆ "ಮನವ ವಂಚಿಸಲಾಗದೀ ಧರ್ಮವನು ನೆರೆ ತಿಳಿದು ಅನುನಯದಿ ಪೇಳಿ ಇದರಲ್ಲಿ ಯಾರು ಗುಣಸಾರವನು" ಎಂದಾಗ ದೇವೇಂದ್ರನು ನಸುನಗುತ "ಸಾರ ಹೃದಯವನು ನೆರೆದಲೆಗ ನಿಸ್ಸಾರನೀ ವ್ರಿಹಿ" ಎಂದು ತನ್ನ ಅಭಿಮತವನ್ನು ಹೇಳಿದ. ನಾರದನು ಇದನ್ನೇ ಸಮ್ಮತಿಸಿ 'ನರೆದಲೆಗನೆ ಬಲಯುತ ಇವನು ಕಳೆಗುಂದಿಲ್ಲಾ ವ್ರಿಹಿ ಕಳೆಗುಂದಿದ್ದಾನೆ' ಎಂದನು. ಕಪಿಲ ಮುನಿಗಳು ಸಹ ನರದಲೆಗನೆ ಮೆಚ್ಚಿ 'ಬಡವ ಬಲ್ಲಿದನೆನ್ನದೆ ಎಲ್ಲರನು ಸಲಹುನೆಂದು' ಹೋಗಳಿದನು. ನೆರದ ಸಭೆಯೇ ನರದೆಲಗ ಶ್ರೇಷ್ಠವೆಂದು ಸಾರಿತು. ರಾಮನೃಪಾಲ ನರೆದಲೆಗ ಮೆಚ್ಚಿ ತನ್ನ ಹೆಸರನ್ನು ಅದಕ್ಕಿಟ್ಟನು. ಅಲ್ಲಿಂದಲೇ ನರೆದೆಲೆಗ "ರಾಘವ"ನೆಂದು ಹೆಸರಾಯಿತು. ಅನೇಕ ಮಹಾಮಹಿಮರು ಉಡುಗೊರೆ ನೀಡಿ ಸನ್ಮಾನಿಸಿದರು. ಬ್ರಹ್ಮನು ಕರಕಮಂಡಲ ಪಾತ್ರೆಯನ್ನು, ಶಂಕರನು ತ್ರಿಶೂಲವನ್ನು, ನಾರದ ಚಕ್ರವನ್ನು, ಇಂದ್ರ ಉರುತರದ ಕೂರಿಗೆಯನ್ನು ಕಾಣಿಕೆಗಳನ್ನು ಕೊಡುತ್ತಿರಲು ಪಾರ್ವತಿಯು ಸುಮ್ಮನಿರದೆ ತನ್ನ ಮಹಿಳಾ ಬಳಗವನ್ನು ಕರೆದು ಭೂಲೋಕದಲ್ಲಿ ರಾಗಿಯನ್ನು ಬೆಳೆಯುವವರ, ತಿಂಬುವವರ ಸೇವೆಗೆ ಕಳುಹಿಸಿದಳು. ಆಗ ಹನುಮಂತನು 'ಇನಕುಲೇಂದ್ರನ' ಪಾದಕ್ಕೆ ವಂದಿಸಿ 'ನೀವು ನಾಮಾಂಕಿತವನ್ನು ಇಟ್ಟಿರಿ ನಾನು ನಿಮ್ಮನ್ನು ಅಗಲದೆ ಇರುವೆನು ನನಗೇನು ಗತಿ' –ಎಂದು ಕೇಳಿದಾಗ ರಾಮನು ನಸನಗುತ ರಾಮನಿದ್ದಡೆ ನಿನಗೆ ನಿನ್ನಭಿಧಾನವಾಗಲಿ ಎಂದಾಗ ಹನುಮ ಈ ರೀತಿ ಉಚ್ಚರಿಸಿದ.

"ಸೇವಕನ ಓಂದುಳಿದು ದೇವರು
ನೀವು ಮುಂದಡಿಯಿಡಲು ನಿಮ್ಮದ
ದಾವ ಗುಣಗನೆ ಹನುಮನಾಡಿದ ನುಡಿಗೆ ನಸುನಗುತ
ನಾವು ಜನನದಿ ಮುಂದು ಕಲಹದ

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE.

ಠಾವಿನಲಿ ನಾ ಮುಂದೆ ನಡೆಯಂ
ದೀ ವಿಚಾರವ ತಿಳುಹಿದನು ನರನಾಥನ ನೀಲಜಗೆ" ॥೧೪೩॥

ನಂತರ ಅದೇ ಸಭೆಯಲ್ಲಿ ಮಾನಭಂಗ ಹೊಂದಿ ಅತಿಚಿಂತೆಯಲಿ ಕಡನೊಂದ ವ್ರಿಹಿಯನ್ನು ಶ್ರೀರಾಮನು "ಏಕಪ್ಪ ವ್ಯೆಸನ ನಿನಗೆ ಈ ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಕ್ಷಾಮ ಬಂದಾಗ ನರದೆಲಗ ಕರುಣೆಯಿಂದ ಲೋಕವನು ಕಾಪಾಡುವನೆಂಬ ಕಾರಣದಿಂದ ಹೇಳಿದವಲ್ಲದೆ ನಿನ್ನನ್ನು ಯಾವುದಕ್ಕೂ ಉಪಯೋಗವಿಲ್ಲವೆಂದು ಅಲ್ಲಗಳೆದಿಲ್ಲ. "ನೀನು ಸುರದೇನುವಿಗೆ ಸಮ" ಚಿಂತೆಯನು ಬಿಡು ನೀವಿಬ್ಬರು ಭೂಮಿಯ ಮೇಲೆ ಹಿತದಿಂದಯಿರಬೇಕು. ಆಗ ರಾಗಿಯು ಆತನ ಕಣ್ಣಿರನ್ನು ಒರೆಸುವುದು. ನಿನ್ನ ಇಂದ್ರನ ಬಳಿಗೆ ಕಳಹುದೆ ಸಂಶಯವೇಕೆ ಮನಸಲಿ ಶೌರ್ಯವನು ಕೈಕೊಂಡು ಸತ್ಯದ ದಾರಿ ತಪ್ಪುವುದೇ. ಚೋಳ ದೇಶವನು ನೀ ಸಲುಹು ಎಂದು ನೇಮವನಿಟ್ಟು ಕಳುಹಿಸುದು' -ಎಂದಿರುವಲ್ಲಿ ಮೇಲುವರ್ಗ ಕೆಳವರ್ಗ ಸಂಘರ್ಷವಿದೆ.

ಕನಕದಾಸ ರಾಮಧಾನ್ಯ ಚರಿತೆಯಲ್ಲಿ ಆಹಾರಕ್ಕಾಗಿ ಇರುವಂತ ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು ಹೆಸರಿಸಿದ್ದಾರೆ. ರಾಗಿ, ಭತ್ತ, ನೆಲ್ಲು, ಗೋಧಿ ಹೀಗೆ ಧಾನ್ಯಗಳನ್ನು ವಿವರಿಸುತ್ತಾ ರಾಗಿ ಭತ್ತದ ವಾಗ್ವಾದ ತಿರುಳೆ ಮುಖ್ಯವಾದದ್ದಾಗಿ ಕಂಡುಬರುತ್ತದೆ. ರಾಗಿ ಬಡವರ ಊಟ, ಬಡವರ ಪರವಾಗಿ ಪಾತ್ರವಹಿಸಿವುದು. ಭತ್ತ ಶ್ರೀಮಂತರ ಊಟವಾಗಿ ಶ್ರೀಮಂತರ ಪರವಾಗಿ ಪಾತ್ರ ವಹಿಸುತ್ತದೆ. ಎರಡು ದಾನ್ಯಗಳ ಮಾನ್ಯತೆ ಕಾಣುವುದು.

"ಲೋಕದಲಧಿಕ ಭೋಜನವಿದೆಂ
ದಾಕೆವಾಳರು ಭುದರು ಜರೆದು ನಿ
ರಾಕರಿಸಿ ಬಿಡಲಂತು ನೀ ಶೂದ್ರಾನ್ನವಾದೆಯಲ"

ಎಂದು ರಾಗಿಯ ಸ್ಥಾನಮಾನ ಅಂತಸ್ತುಗಳ ಅಂತರದ ಚರ್ಚೆಯಿದೆ. ಭತ್ತ ರಾಗಿಯನ್ನು ನಿಂದಿಸುವುದು ಇಲ್ಲಿ ಕಾಣುವುದು.

"ಜನಪರಿಗೆ ಶಿಶುಗಳಿಗೆ ಬಾಂಧವ
ಜನರೆಡೆಗೆ ಬ್ರಹ್ಮರ ಸಮಾರಾ
ಧನೆಗೆ ವಿದ್ಯಾರಂಭ ಕಾಲಕೆ ಸಕಲ ಭೂಸುರರ" ॥೩೯॥

ಹೀಗೆ ಭತ್ತದ ವೈಶಿಷ್ಟತೆಯನ್ನು ಹೊಗಳಿದ ಕವಿ ಅಂದಿನ ಸಮಾಜದಲ್ಲಿ ಬಡವರ ಶ್ರೀಮಂತರ ಆಹಾರದ ಪದ್ಧತಿ ತಿಳಿಸಿದ್ದಾರೆ.

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE, BAGALKOTE.

ಗಾದೆ ಮಾತು 'ಹುಟ್ಟಿಸಿದ ದೇವರು ಹುಲ್ಲು ಮೇಯಿಸಲಾರ' ಎಂಬ ವಾಡಿಕೆಯ ಜನಪದರರದಲ್ಲಿದೆ. ಈ ಆಶೆಯ ಕನಕದಾಸರು ತಮ್ಮ ಕೀರ್ತನೆಯಲ್ಲಿ ಹೀಗೆ ಹೇಳುವುರು. "ಅಷ್ಟು ಪ್ರಾಣಿಗಳಿಗೆ ಇಷ್ಟು ಅಂಬಲಿ ಮಾಡಿ ಹೊಟ್ಟೆ ತುಂಬಿದ ಹಾಗೆ ಎರೆವ ನಮ್ಮಜ್ಜ" ಎಂಬ ಮಾತಿನಲ್ಲಿ ಸರ್ವಜನಾಂಗದ ಆಹಾರವಾಗಿ ಸಲುಹುತ್ತಿರುವುದು ಇಲ್ಲಿ ಕಾಣುವುದು, ಅಂಬಲಿ ಸರ್ವೇ ಸಾಮಾನ್ಯ ಆಹಾರವಾಗಿ ಪರಿಗಣಿಸಿ ವಿಶ್ಲೇಷಣೆ ಮಾಡಿದ್ದು.

"ದುರ್ಜನರ ಮನೆಯ ಪಾಯಸಾನ್ನಕ್ಕಿಂತ ಸಜ್ಜನರ ಮನೆಯ ರಬ್ಬಲಿಗೆ ಲೇಸು" -ಮನದ ಕಲ್ಮಶನ ಶ್ರೀಮಂತಿಯೆ ಸೊಕ್ಕಿನ ಅನ್ನದ ಬದಲಾಗಿ ರಾಗಿ ಅಂಬಲಿಯೇ ದುಡಿತದ ಮಹತ್ವವನ್ನು ಸಾರಿ ಹೇಳುವುದು. ಮಾನವನಿಗೆ ಚಿತ್ತ ಚಾಂಚಲ್ಯವಿರಬಾರದು ಎಂಬ ಸಂದೇಶವಿದೆ. "ಅನ್ನ ತುಪ್ಪವಿರಲಿಕ್ಕೆ ಮದ್ಯಪಾನಗಳೇಕೆ ಚನ್ನಾಧಿಕೇಶವನಿರೆ ಬಿನುಗು ದೈವಗಳೇಕೆ" ಜೀವನಕ್ಕೆ ಬೇಕಾದ ಅವಶ್ಯಕ ಆಹಾರವಿರಬೇಕು. ನಾನಾ ಅಹಿತಕರ ಚಟಗಳು ಏಕೆ ಎಂದು ಮದ್ಯಪಾನದ ಹೊಟ್ಟೆ ತುಂಬದಿರುವ ಅದರ ನಾನಾ ಮುಖವನ್ನು ಪರಿಚಯಿಸಿದ್ದಾರೆ. ಇದೇ ರೀತಿಯಾಗಿ 'ಮೋಹನ ತರಂಗಿಣಿಯಲ್ಲಿ, ಸೌರಾಷ್ಟ್ರದ ವರ್ಣನೆಯಲ್ಲಿ ಬೇಟೆಯಾಡಿದ ನಂತರ ಹಣ್ಣು ಹಂಪಲ ಹುಡುಕಿ ತಿನ್ನುವ ಸ್ಥಿತಿಯನ್ನು ಕನಕದಾಸರು ಮನೋಜ್ಞವಾಗಿ ಚಿತ್ತಿಸಿದ್ದಾರೆ.

ಈ ಮೇಲಿನ ಎಲ್ಲಾ ಅಂಶಗಳನ್ನು ಗಮನಿಸಲಾಗಿ ಆಹಾರ ಸಂಘರ್ಷವು ಇಲ್ಲಿ ಪ್ರಮುಖವಾದದ್ದೆಂದು ಕಂಡುಬರುತ್ತದೆ. ಅಲ್ಲದೆ ಇದೊಂದು ರೂಪಕದಂತೆ ಕಾಣುವುದು. ಆದಿ ಕಾಲದಿಂದಲೂ ಕಾಲಕಸವಾಗಿ ಬಾಳಿ ಬದುಕಿನ ದಲಿತ ಜನರ ಎಲ್ಲಾ ಕಾಲ, ದೇಶಗಳ ನತದೃಷ್ಟ ನಿಮ್ಮ ಜನಾಂಗಗಳ ಅಂತರಾಳದ ಪ್ರತಿನಿಧಿಯಂತೆ 'ನರೆದಲೆಗ' ಧಾನ್ಯವನ್ನು ಕನಕದಾಸರು ಬಿಂಬಿಸಿದ್ದು ಸ್ಮರಣೀಯವಾದದ್ದು. ರಾಗಿಯ ಹೆಸರನ್ನು ಭಾಷಿಕವಾಗಿ ವಿವರಿಸುವಾಗ, 'ಬಡ ಜನರ ಆಧಾರ'ವೆಂಬ ಸಂಗತಿಯ ಪ್ರತಿಬಿಂಬಗಳು ಇಲ್ಲಿ ಗೋಚರಿಸುತ್ತವೆ ಅಲ್ಲದೆ ಅವು ರಾಗಿಯು ಕನಕದಾಸರ ಜೀವನದ ಬಗೆಯನ್ನು ವಿಶ್ಲೇಷಿಸುವಂತಿವೆ. ಎಲ್ಲಾ ದಾನ್ಯಗಳಿಗಿಂತ ರಾಗಿಯೇ ಶ್ರೇಷ್ಠವೆಂಬ ರಾಮನ ತಿರ್ಮಾನವು, ವ್ಯಾಸರಾಯರು ತಮ್ಮ ಶಿಷ್ಯರಲ್ಲೆಲ್ಲ ಕೆಳ ಜಾತಿಯ ಕನಕದಾಸನೇ ಶ್ರೇಷ್ಠ ಎಂಬ ಅಭಿಪ್ರಾಯವನ್ನು ವ್ಯಕ್ತಪಡಿಸುತ್ತದೆ. ಶೂದ್ರ, ಹೀನವಾದ ರಾಗಿಯೊಡನೆ ಕನಕದಾಸರು ತನ್ನಂತಹ ಕುಲಹೀನರನ್ನು ಸಮೀಕರಿಸುವಂತಿದೆ. ಭತ್ತ ರಾಗಿಯನ್ನು ಕುಲಹೀನ, ಶೂದ್ರಣ್ಣ ಎಂದು ಕುಚೋದ್ಯ ಮಾಡುವದರಲ್ಲಿ ಕನಕದಾಸರು ಮೇಲು ವರ್ಗದವರಿಂದ ಪಡೆದ ಅನುಭವವು

BASAVESHWAR COMMERCE COLLEGE
BAGALKOTE

ಒಂದು. ರಾಗಿಯ ಮೂಲಕ ಮಾತ್ರವಲ್ಲದೆ, ರಾಮನ ಬಾಯಲ್ಲೂ ಭತ್ತವನ್ನು ಅಲ್ಲಗಳೆಯುವದರ ಮೂಲಕ ತನಗೆ ಗೊತ್ತಿಲ್ಲದೆ ಒಂದು ಬಗೆಯ ಮಾನಸಿಕ ಸಮಾಧಾನವನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿರಬಹುದು. ಮಾನವೀಯತೆಯ ಪ್ರತಿಪಾದನೆಯು ಈ ಕಥೆಯ ಉದ್ದೇಶವು ಒಂದೇ ಆಗಿದೆ. ಇಲ್ಲಿನ ಕೆಳಜಾತಿಯ ಸಮಸ್ಯೆ ಮೇಲು ಜಾತಿ, ಶೂದ್ರ ಶೂದ್ರೇತರ ಜಾತಿಗಳ ಕಲಹಕ್ಕೆ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ್ದು. ಜೊತೆ ಜೊತೆಗೆ ಬಡವ ಶ್ರೀಮಂತ ಹೋರಾಟಕ್ಕೂ ಕೆಳವರ್ಗದವರ ಎಚ್ಚರ ಹಾಗೂ ಪ್ರತಿಭಟನೆಗೂ ಸಂಬಂಧಿಸಿದ್ದು. ಆ ದೃಷ್ಟಿಯಿಂದ ರಾಮಧಾನ್ಯ ಚರಿತದ ಕಥೆ ಸೂಕ್ಷ್ಮ ವಿಶ್ಲೇಷಣೆಗೆ ಅತ್ಯಂತ ಅರ್ಹವಾದದ್ದು. ರಾಗಿಯ ಸಿಡಿಲ ಗರ್ಜನೆ ಕೆಳಜನರ ಉತ್ಸಾಹ ಕೇಕೆಗೆ, ಹೊಸದಾಗಿ ದೊರೆತ ಸ್ಥಾನಮಾನಗಳ ವಿಜಯ ಘೋಷವೂ ಆಗಿದೆ. ಭತ್ತ ರಾಗಿಯ ಜಗಳ ಕತೆಯಲ್ಲಿ ಆಧುನಿಕ ಕಾಲದ ಸಂಗತಿಗಳನ್ನು ಆರೋಪಿಸಿ, ವಾಸ್ತವವಾಗಿ ಇಲ್ಲದ್ದನ್ನು ಹುಡುಕುವ ಪ್ರಯತ್ನವನ್ನು ನಾನು ಇಲ್ಲಿ ಮಾಡಿಲ್ಲ. ಈ ಕೃತಿಯಲ್ಲಿ ಇದಕ್ಕೆ ಸ್ಪಷ್ಟ ವಾಖ್ಯಾನ ಸೂಚನೆಗಳಿವೆ. ರಾಗಿಯ ವಿಜಯ, ಜನ ಸಾಮಾನ್ಯರ ವಿಜಯವು ಹೌದು. ರಾಮಧಾನ್ಯ ಚರಿತೆ ಕನಕದಾಸರ ಪೂರ್ಣಾಭಿವ್ಯಕ್ತಿಯ ಕೃತಿಯಾಗಿದೆ. 'ರಾಮಧಾನ್ಯ ಚರಿತೆ'ಯ ಮೂಲಕ ವರ್ಗಸಂಘರ್ಷದ ಸ್ವರೂಪ ಮತ್ತು ಪರಿಣಾಮಗಳನ್ನು ಕನಕದಾಸರು ಸೂಕ್ಷ್ಮವಾಗಿ ಪ್ರತಿಪಾದಿಸಿರುವುದು ಗಮನಾರ್ಹ ಸಂಗತಿಯಾಗಿದೆ.

ಪರಾಮರ್ಶನ ಗ್ರಂಥಗಳು

೧. ಕನಕದಾಸರ ಕೀರ್ತನೆಗಳು – ಸಂ. ಪಂಡಿತರತ್ನ ವಿದ್ಯಾವಾರಿಧಿ, ಶ್ರೀ ಶಿವಮೂರ್ತಿಶಾಸ್ತ್ರಿ, ಡಾ.ಕೆ.ಎಂ. ಕೃಷ್ಣರಾವ
೨. ರಾಮಧಾನ್ಯ ಚರಿತೆ – ಕನಕದಾಸರು
೩. ಶ್ರೀ ಕನಕದಾಸರ ಹಾಡುಗಳು – ಬೆಟಗೇರಿ ಕೃಷ್ಣಮೂರ್ತಿ
೪. ಮೋಹನ ತರಂಗಿಣಿ – ಕನಕದಾಸರು
೫. ಕನ್ನಡ ಸಾಹಿತ್ಯ ಚರಿತ್ರೆ – ರಂ. ಶ್ರೀ ಮುಗಳಿ.

❖❖